BHAGWAN DHANWANTRI DAY

CELEBRATION

8TH, NOVEMBER, 1996

SOUVENIR

VENUE :
LITTLE THEATRE GROUP (LTG) AUDITORIUM
Copernicus Marg,
Near Mandi House,
New Delhi-110 001

Organised By

ALL INDIA INDIAN MEDICINE GRADUATES ASSOCIATION

(AIIMGA)

32, GANESH NAGAR, VISTAR -II, SHAKARPUR, DELHI-110092

Scanned by CamScanner

जीवक प्लस

(स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य के लिए एक अनुभूत टॉनिक)

विशेष छूट
इस कूपन को विक्रेता के पास देकर मुलतानी के उत्पादों पर एक रुपये की छूट प्राप्त करें

सभी स्त्री रोगों में उपयोगी जैसे :-

- मासिक धर्म का अनियमित होना।
- खून की कमी व रक्त अशुद्धि ।
- कमर, पीठ, पेडू, पेट, नलों व सिर दर्द का होना।
- निद्रानाश, आलस्य, भूख न लगना।
- हथेली तथा तलुओं की जलन, वमन, जी घबराना।
- जीवक प्लस का नियमित सेवन स्त्रियों में न उमंग, चुस्ती व ताजगी भर जाती है तथ रंग, रूप निखरता है।

कूका

(गुणकारी जड़ी-बूटियों से तैयार एक असरदार कफ सिरप एवं विश्वसनीय औषधि)
मुलतानी कूका कफ़ सिरप (तुलसी युक्त)

- हर प्रकार की खांसी, नज़ला, जुकाम सभी में जल्दी असर दिखाता है।
- यह छाती में जमे बलगम को बाहर निकाल कर नए बलगम को बनने से रोकता है।
- कूका कफ़ सिरप एक हानि रहित, स्वादिष्ट आयुर्वेदिक कफ़ सिरप है।

शक्तिटोन फोर्ट

(पूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक टॉनिक)

- दिल व दिमाग को ताकत दे।
- रक्त की कमी थकावट व कमजोरी दूर करे।
- जिगर को सुरक्षित रखे।
- भूख लगाए पाचन शक्ति बढ़ाये।
- मानसिक तनाव दूर करे।
- स्वास्थ्यवर्धक जड़ी बूटियों से निर्मित पूरे परिवार के लिए एक आदर्श टॉनिक।

इच्छुक सेल्स प्रतिनिधि एवं स्टॉकिस्ट कृप्या लिखें

Multani मुलतानी

मुलतानी फार्मास्युटिकल्स लि.

36-एच, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001
☎ 3350062, 3350063 फैक्स : 6814611

Scanned by CamScanner

दीपावली की शुभकामनाएँ

नव वर्ष १९९७

मंगलमय हो

Happy Deepawali

&

Happy New Year 1997

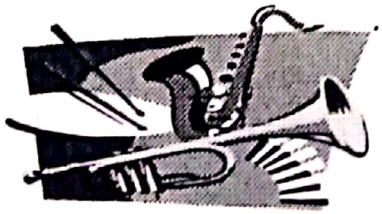

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

भगवान धन्वन्तरी जयन्ति की पावन संध्या पर एमगा स्मारिका का नवीन अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मझे हार्दिक हर्ष हो रहा है ।

आज के इस आधुनिक मशीनी युग में भगवान धन्वन्तरी के उपदेशो की अवहेलना कर हमने अपने आप को कठिन परिस्थितियों में डाल दिया है आज का मानव न चैन से खा सकता है न सो सकता है न चल सकता है न आराम से शरीर छोड सकता है । चिन्ताओ में और अधिक घिरता जाता है ऐसे समय मे हमे आयुर्वेद के सहारे को ग्रहण करते हुए रसायनिक जीवन को त्यागना चाहिये ।

आज के युग में आवश्यकता है आयुर्वेद में आधुनिक अनुसंधान की, जब तक अनुसंधान के खुले रास्ते नही होगें तब तक पैथियो का आपस में संघर्ष चलता रहेगा । जिस प्रकार अन्य पैथियो में एक अनुसंधान होने पर समस्त चिकित्सा जगत को उसकी जानकारी मिलती है हमारी आयुर्वेद में भी इसी प्रकार की जानकारियां प्रसारित होनी चाहिये । ऐसा लगता है कि इस समाज में जैसा कि आदि काल से सास बहू का विवाद बडा प्रचलित रहा है उसी प्रकार हमारा पैथियों का विवाद भी लगातार चलता रहता है जिस प्रकार सास बहू के बिना घर परिवार नही कहलाता उसी प्रकार सभी पैथियों के आपस में समन्वय के बिना चिकित्सा कर्म पूर्ण जगत नही कहलाता । लगता है कुछ चिकित्सक अपना स्वार्थ सिद्ध करने में विवाद उत्पन्न करते रहते है हमारा मानना है कि सम्मान सदैव देते हुए सीमीत सम्बन्ध रखना ही सदैव हितकर है

अत: सभी चिकित्सक बन्धुओ को जनहित में ऐसी आचार संहिता बनानी चाहिये की विवाद न हो तथा समाज का कल्याण हो वह तभी संभव होगा जब हम एक दूसरे का सहारा लेगे और सम्मान करेंगे ।

बहुत अल्प समय मे यह प्रकाशन आपके सम्मुख पहुंचा रहा हूँ जिसमे त्रुटियां सम्भव है जिसके लिये आपसे क्षमा प्रार्थी हूँ अपने सहयोगी सम्पादक मडंल का धन्यवाद करता हूँ।

गीता ग्राफिक्स का हार्दिक आभारी हूँ जिन्होने अल्प समय में इस प्रकाशन को आप तक पहुँचाया है । विद्वानो से आग्रह है कि आगे का मार्ग दर्शन करने की कृपा करें अंत में आप सभी को दीपावली व नव वर्ष की हार्दिक शुभ कामनाएँ ।

जय आयुर्वेद ।।

डा० संजीव भार्गव
मुख्य सम्पादक
एमगा

Scanned by CamScanner

Dr Yellapragada SubbaRow Centenary Celebrations

July 10-13, 1996,
Hyderabad, India

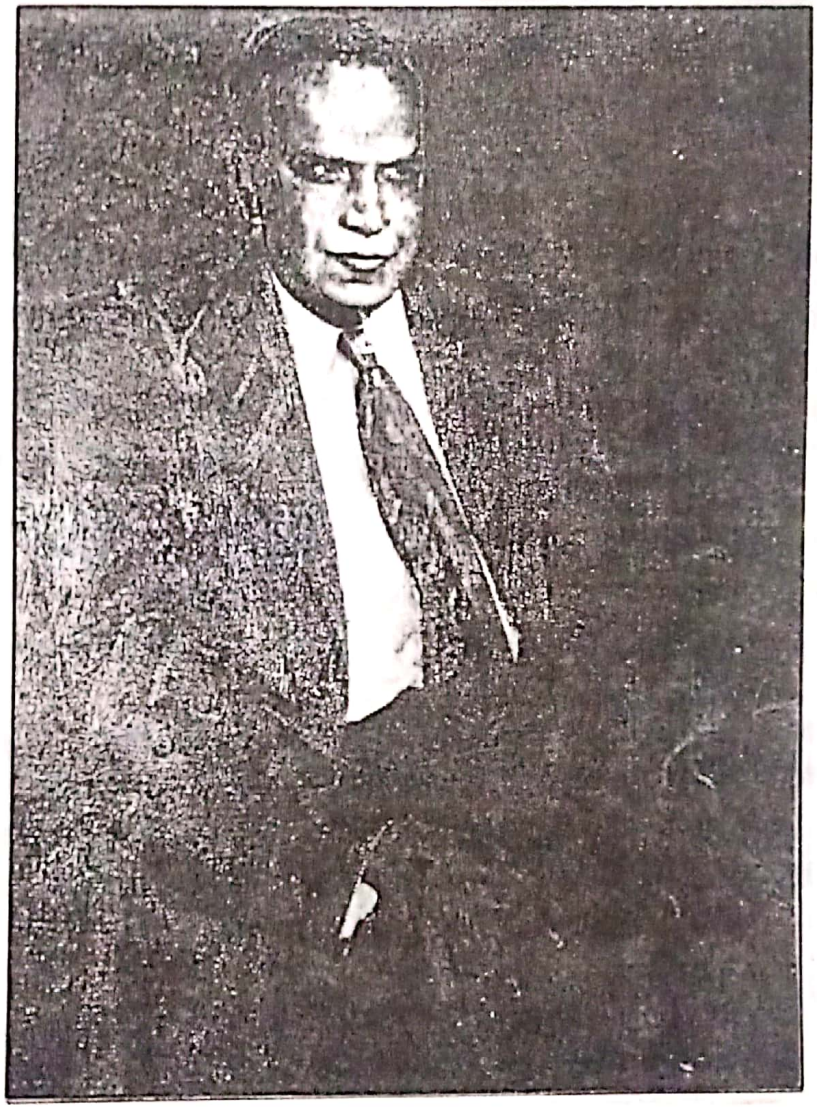

Dr Yellapragada Subbarow
(1895-1948)

American Studies Research Centre
Hyderabad-500 007.

Scanned by CamScanner

Election Commisioner
GOVT. OF INDIA
Nirvachan Sadan
Ashoka Raod, New Delhi-110001
Tel. : Off. : 3720012, Fax : 3739933
Res. : 3383023 Fax : 3389954

MESSAGE

I am happy that All India Indian - Medicine Graduates Association is Celebrating "Bhagwan Dhanwantri Day" on 8th November, 1996 in New Delhi.

Ayurveda is the science of healthy-life and longevity and the most ancient, know to man in recorded history. The practitioners of Ayurveda throughout the country have done yoeman service to the people of this land in the past many centuries.

I wish the celebrations all success.

Sd/-

(G. V. G. KRISHNAMURTY)

Dr. Vijay Jindal,
Member of Apex Committee,
A. I. I. M. G. A.
New Delhi.

Scanned by CamScanner

भारत सरकार
Government of India
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
Ministry Of Health & Family Welfare
भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग
Department Of Indian System Of Medicine & Homoeopathy

S.K. Sharma
Adviser (Ayurveda & Siddha) I/c
Ph. : 3017669

नई दिल्ली / **New Delhi-110011**

शुभकामना सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आल इन्डिया इन्डियन मेडिसन ग्रेजुएटस एसोशिएसन धन्वन्तरि जयन्ती समारोह का आयोजन बड़े उत्साह के साथ कर रही है। धन्वन्तरि जयन्ती स्वास्थ्य-विज्ञान के आदि प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि के प्रकट होने के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। अत: पुरातन काल से ही यह समारोह अपने देश में प्रचलित है। समय और काल की आवश्यकता के अनुसार समाज को आयुर्वेद किस प्रकार का मार्ग-दर्शन दे इसकी चर्चा हम धन्वन्तरि जयन्ती पर करते हैं। इसके साथ ही आयुर्वेद के विकास के लिए समाज तथा सरकार की क्या नीतियां हों, इस पर भी चर्चा करते हैं। अत: धन्वन्तरि - जयन्ती का दिवस स्वस्थसमाज की रचना के लिए बहुत महत्व का है।

गत वर्षो से प्लेग, मलेरिया, कामला, डेंगू जैसेरोग महामारी के रूप में अपने देशमें व्याप्त हो रहे हैं। इनका निराकरण आयुर्वेद के स्वस्थवृत्त में प्रतिपादित-जल, वायु, वातावरण तथा सम्यक् आहार-विहार से सम्भव है। अत: ऋतु काल के अनुसार होने वाली इन बीमारियों की रोगथाम हेतु वैद्यों तथा आयुर्वेद प्रशासन को समय रहते आगे आना चाहिए ताकि रोग की रोकथाम तथा चिकित्सा में सक्रिय भागीदारी हो सके। हमारे अनुसंधान तथा चिकित्सा हेतु सतत् प्रयास होने चाहिए।

धन्वन्तरि दिवस समारोह की सफलता हेतु मैं अपनी शुभकामनाएं देता हूँ तथा आयुर्वेद समाज को समय-समय पर होने वाले विभिन्न रोगों की रोकथाम तथा चिकित्सा हेतु सक्रिय भागीदारी के लिए आवाहन करता हूँ।

ह०
सुरेन्द्र कुमार शर्मा

Scanned by CamScanner

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद्

(भारत सरकार स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)

जवाहर लाल नेहरु भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन

प्लाट नं० ६१.६५, इन्स्टिट्यूशन एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली ११००५८

CENTRAL COUNCIL FOR RESERCH IN AYURVEDA AND SIDDHA

(An autonomous organisation under Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India)

Jawahar Lal Nehru Bhartiya Chikitsa Avum Homoeopathy Anusandhan Bhawan

No. 61-65, Institutional Area, opp. 'D' Block, Janak Puri, New Delhi-110058

Phones. : 5528748, 5614970, 5614971, 5614972

MESSAGE

I am happy to know that All Indian Medicine Graduate Association (AIIMGA) of Doctors of Indian system of Medicine and Homoeopathy is celebrating Lord Dhanwantri Day (The Founder of Ayurveda) on 8.11.96.

I am glad that on this occasion a colourful souvenir is being released. I hope it will be useful for the practitiners of Ayurveda in particular and public in general.

Sd/-
(H.R. Goyal)
Director
C.C.R.A.S

Scanned by CamScanner

तार : हिन्दमेड
Grams : **HINDMED**

दूरभाष (Phone)
सचिव Secretary : 5610978
कार्यालय Office : 5610978
: 5619283

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

CENTRAL COUNCIL OF INDIAN MEDICINE

(Constituted under the IMCC Act, 1970)
Institutional Area, Janakpuri
New Delhi - 110 058

क्रमांक
Ref. No.

दिनांक / Dated: 27.09.96

MESSAGE

It is giving me a great pleasure to know that All India Indian Medicine Graduates Association (AIIMGA) is celebrating ' Lord Dhanwantri Day' (Who was founder of Ayurved) on 8.11.96 and going to publish colour ful souvenir. I hope that Association will progress day by day and shall contributes to Indian systems of Medicine for betterment and development.

Sd/-
(Hakim) G. S. Reena)
Secretary

Scanned by CamScanner

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
61-65 Institutional Area, D-Block, Janakpuri,New Delhi-110058
Tel. : 5592651, 5614970-71-72

Dr. V.P. Singh
Assistant Director

November 1, 1996

Dear Dr. Vashisth,

Thank you very much for your invitation to the 'Lord Dhanvantri Day' Cel ebration on 8th November, 1996. Lord Dhanvantri occupies a unique place in the history of medicine in India. I am happy to learn that your Association pays its obessance to the Lord of medicine on a day dedicated to HIS memory. I shall partake in the celebrations and join you on this august day.

I wish you all success.

Yours sincerely

Sd/-
(V. P. Singh)

Dr. O.P. Vashisth
Conveunor,
ALL INDIA INDIAN MEDICINE GRADUATES ASSOCIATION (REGD.)
32, Ganesh Nagar Vistar-II, Shakarpur, Delhi-110 092

Scanned by CamScanner

DHANWANTRI AWARD

For 1996

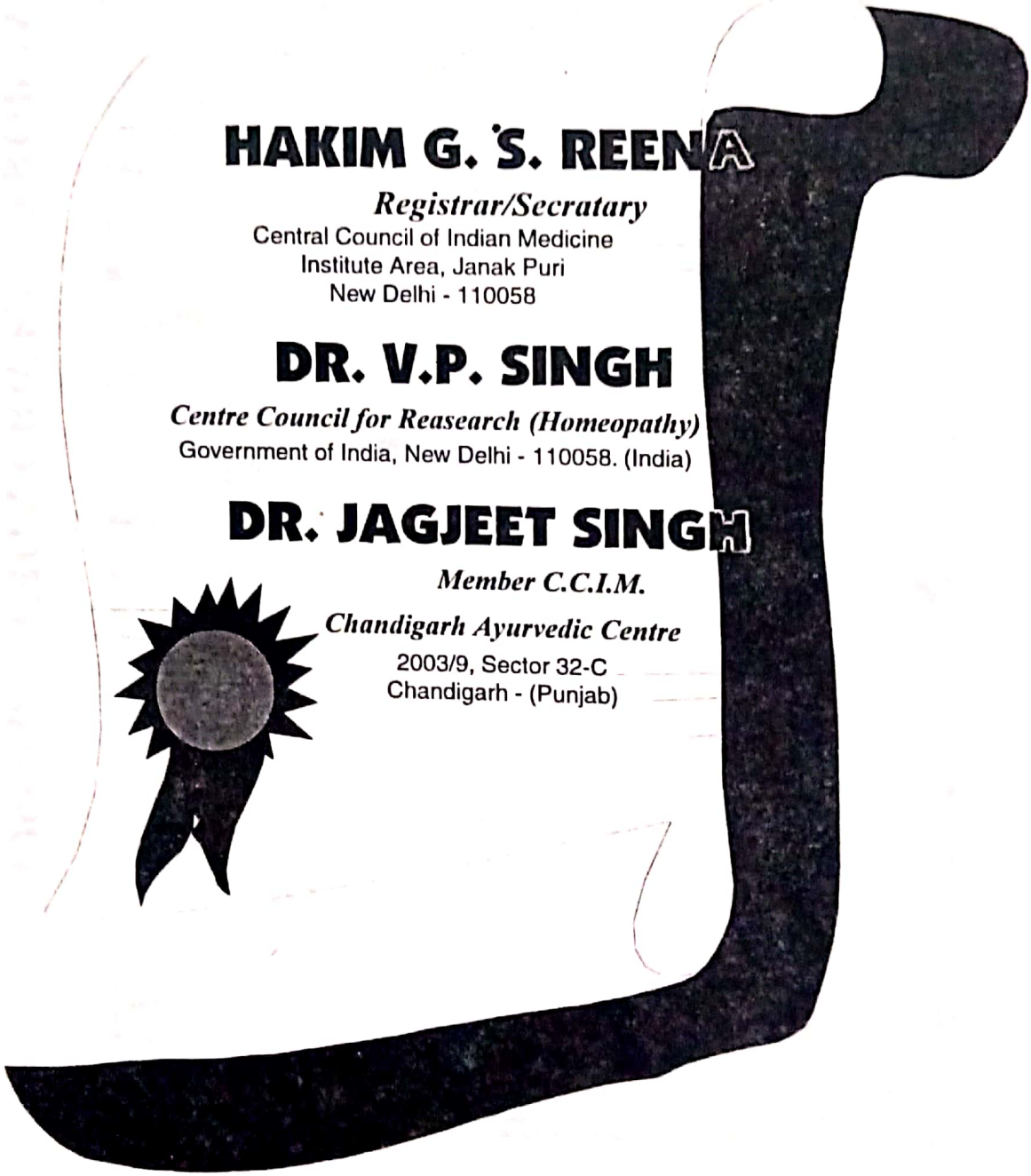

HAKIM G. S. REENA

Registrar/Secratary
Central Council of Indian Medicine
Institute Area, Janak Puri
New Delhi - 110058

DR. V.P. SINGH

Centre Council for Reasearch (Homeopathy)
Government of India, New Delhi - 110058. (India)

DR. JAGJEET SINGH

Member C.C.I.M.

Chandigarh Ayurvedic Centre
2003/9, Sector 32-C
Chandigarh - (Punjab)

Scanned by CamScanner

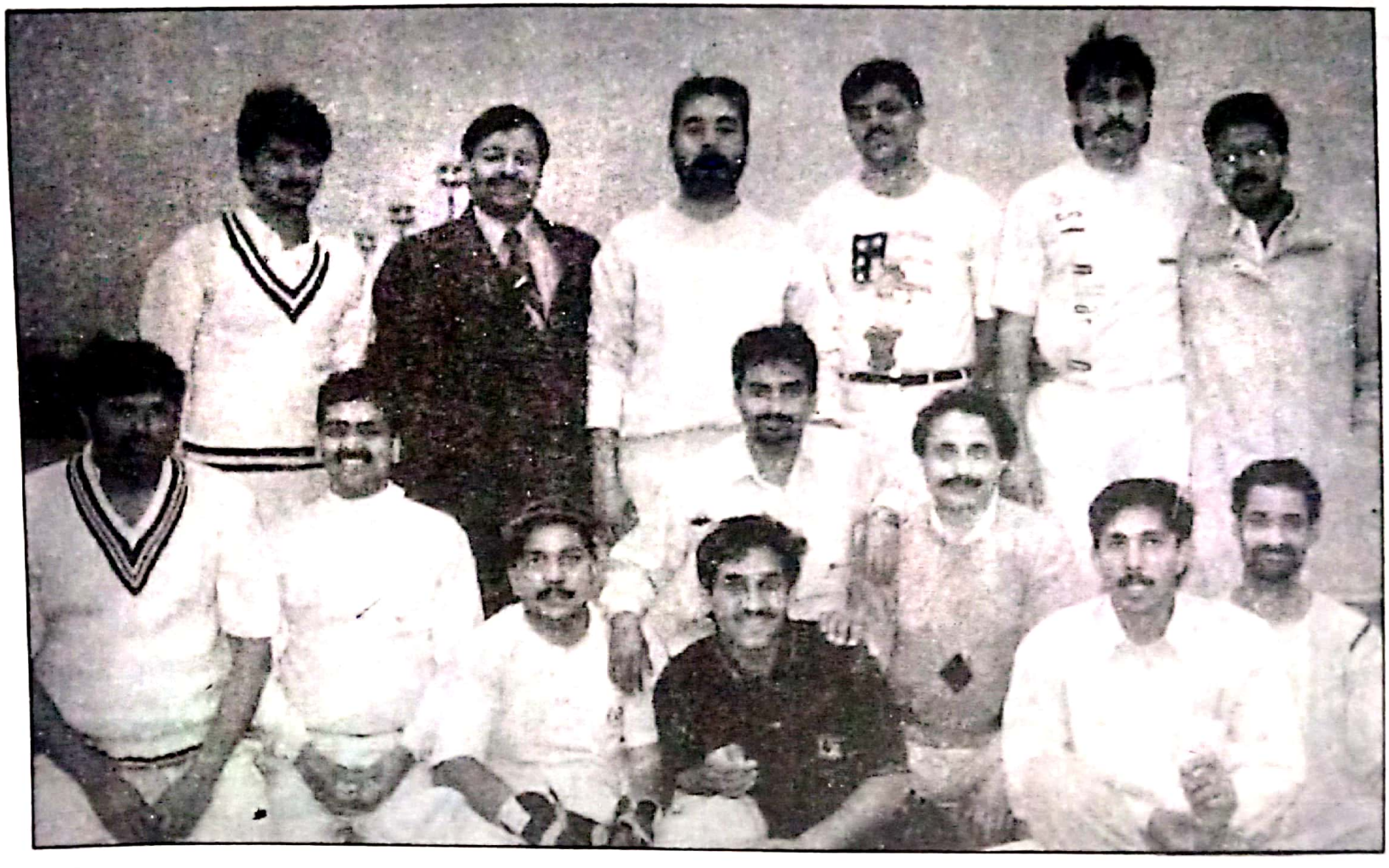

1995-96 AIIMGA CRICKET TROPHY

WINNER WEST ZONE TEAM

Scanned by CamScanner

MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

MANTHAN RESEARCH LABARATORY

H.O. C-1/66, Partap Garden,
New Delhi - 110059 (India)
Ph. : 5522190

MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN MANTHAN

Scanned by CamScanner

तार हिन्दमेड
Grams : HINDMED

सचिव (Secretary) 5610978
दूरभाष (Phone) : कार्यालय (Office) 5531519
निवास (Resi.) 7611712

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

CENTRAL COUNCIL OF INDIAN MEDICINE

(A STATUTORY BODY UNDER THE MINISTRY OF HEALTHY & F.W., GOVT. OF INDIA)
(Constituted Under the IMCC Act, 1970)
61-65, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi - 110 058

The Chief Reporter/Editor
United News of India
Rafi Marg
New Delhi- 110001

Subject: Entitlement of practitoners of Indian Systems of medicine to practice modern Medicine - regarding.

Sir,

The definition of term of Indian Medicine means the system of Indian Medicine commonly known as Ashtang Ayurved, Siddha of Unani Tibb whether supplemented or not by such modern advances as the Central Council may declare by notificatrion from time to time.

The Central Council at its meeting held in 1987 has defined the term modern advances as below:-

"This meeting of the Central Council hereby unanimously resolved that in clause (e) of Sub-section 2 (1).of the IMCC Act 1970. the word ' Modern in Advances' be read as advances made in the various branches of Modern Scientific Medicine, Clinical, Non-clinical, Bio-sciences, Also technological innovation made from time to time and declare that the courses and curricuim conducted by the CCIM are supplemented with such modern Advances".

Recently, there had been various representations from the Associations of ISM practitionners in respect of rights of practice of modern medicine by the graduates of Indian Systems of Medicine.

The Executive Committee of Central Council of Indian Medicine Discussed this issue at great leangth in its meeting held on 30.6.96 at Bombay and resolved as under:-

"Institutionally qualified pracrtioners of Indian Systems of Medicine Ayurved, Unani & Siddha) and those covered under Indian Medicine Central Council Act.1970 are eligible to practice Indian Systemes of Medicine and Modern Medicine , Which is commonly known as Allopathic Medicine including Surgery, Gynaecology and Obstetrics, Based on their training and teaching. This trainting and teaching is included in the syllabus of CCIM.

The meaning of word Modern Medicine (advances) means advances made in various branches of modern scientific medicine, clinical, non-clinical, bio-sciences."

It is requested that this may be published in your esteemed newspaper for information of all concern.

Yours faithfully

(G.S. REENA)
Registrar Secretary

Scanned by CamScanner

तार : हिन्दमेड
Grams : HINDMED

सचिव (Secretary) 5610978
दूरभाष (Phone) कार्यालय (Office) 5531519
निवास (Resi.) 7611712

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

CENTRAL COUNCIL OF INDIAN MEDICINE

(A STATUTORY BODY UNDER THE MINISTRY OF HEALTH & F.W., GOVT. OF INDIA)
(Constituted Under the IMCC Act, 1970)
61-65, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi - 110 058

RESOLUTION

At the meeting of the Executive Committee of the Central Council of Indian Medicine, Chaired by Vaidya Shriram Sharma held on 30.8.96 at Mumbai. It is unanimously resolved that.....

"Institutionally qualified practitioners of Indian System of Medicine (Ayurvedic, Unani & siddha) and those convered under Indian Medicine Central Council Act. 1970, are aligible to practice Indian System of Medicne and Modern Medicines, which is commonly known as allopathic Medicines including Surgery, Gynacology and Obstetrics, training and teaching is included in the syllabus of C.C.I.M.

The meaning of word Modern Medicines means advances made in various branches of modern scientific medicine, clinical, non-clinical, bio-Sciences."

It is further reasolved that the above Resolution be intimated to all States of India for implementation and be notified publically.

Dr. O.P. Vashisth
Member
Central council of Indian Medicine
Ministry of Health And Family Welfare
Government of India

Scanned by CamScanner

समन्वित चिकित्सा पद्धति ही एकमात्र समाधान

- भारत भूषण -

आधुनिक चिकित्सा का विकास यदि भारत में होता तो आयुर्वेद ही उसका आधार होता - ये शब्द थे दिल्ली की प्रथम एवं केन्द्रीय सरकार की तीसरी स्वास्थ्य मंत्री डा. सुशीला नैयर के जो उन्होने लोकसभा में, १९७० में केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद विधेयक पर बहस के दौरान कहे थे।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति का विकास भारत में नहीं हुआ था। वह भारत में औपनिवेशक शासकों के हथियार के रूप में आई। इस कारण उसे प्रसार-प्रचार हेतु राज्याश्रय जरूरी हो गया। साथ ही यह भी जरूरी हो गया कि देशज/भारतीय चिकित्सा पद्धति को हाशिये पर लाया जाए।

विचित्र तथ्य यह है कि भारत में आधुनिक ऐलोपैथिक पद्धति की शिक्षा कलकत्ता के आयुर्वेद कालेज में शुरू हुई। मैकाले की शिक्षा-व्यवस्था में (राजा राममोहन राय की योजना के विपरीत) भारतीयों को आधुनिक विज्ञान की शिक्षा देने की वरीयता नहीं थी और भारतीयों में दैत्य भाव पैदा करने के लिए 'जरूरी' था कि भारतीय भाषाओं के साथ-साथ भारतीय कला-कौशल एवं विज्ञानों के प्रति अनभिज्ञता-उदासीनता-उपेक्षा पैदा की जाए। इसलिए उस कालेज को बंद कर दिया गया और इस प्रकार 'समन्वित चिकित्सा पद्धति' की दिशा में किए गए निजी प्रयासो, का गला घोंट दिया गया। धीरे-धीरे भारतीय सोच, मौसम, माहौल एवं जमीन से भिन्न पद्धति (ऐलोपैथी) विकसित होती गई लेकिन भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी को जितना नुकसान अंग्रेजो ने पहुंचाया, उससे कहीं अधिक नुकसान स्वतंत्र भारत की पानी सरकार ने किया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (१९५१-५६) से लेकर आठवीं योजना (१९९२-९७) तक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के कुल सार्वजनिक परिव्यय का ९७ प्र.श. केवल ऐलोपैथी पर होता रहा है। बाकी को 'ऊट के मुंह में जीरा' की नीति से निपटाया जाता रहा है।

देश की आजादी के समय १९४६ में गठित भेर समिति (हैल्थ एंड डेवलपमेंट सर्वे कमेटी) की यह सिफारिश मान ली गई थी कि स्वास्थ्य व्यवस्था ऐलोपैथी पर आधारित होगी। दुष्परिणाम सामने है। ऐलोपैथी के जरिए देश की बहुसंख्यक जनता की स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं हो पा रही है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष मोहन धारिया ने हाल ही में इस तथ्य को बेहद तल्खी से रेखांकित किया है और 'समावित पद्धति' के विकास की जरूरत पर बल दिया है। परन्तु १९८३ की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में तद्विषयक संकल्प के बावजूद सरकारी तौर पर अभी तक इस दिशा में कुछ नहीं किया गया है। यही नहीं, राष्ट्रीय नीति का घोर उल्लंघन करते हुए केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव ने दिस. १९९४ में लोकसभा सचिवालय को सूचित किया कि 'समावित चिकित्सा पद्धति' का विकसित करने का प्रश्न ही नही उठता।

राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने पिछले दिनों नई दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ अपोलो चिकित्सालय का उद्घाटन करते हुए 'समन्वय' की जरूरत पर बल दिया। डा. शर्मा इससे पूर्व भी ऐसा कह चुके हैं। उपराष्ट्रपति भी 'समन्वय' के पक्ष में एकाधिक बार अपना मत व्यक्त कर चुके हैं परन्तु नौकरशाह इन सबको नजरअंदाज करने का अधिकार रखता है। यह हमारे लोकतंत्र की त्रासदी है।

मात्र ऐलोपैथी पर निर्भरता, भारतीय एवं होम्योपैथी की अनदखी और सार्थक समन्वय से परहेज के चलते जहां पुराने रोग विद्यमान ही नहीं हैं, वरन जब-तब महामारी का रूप लेते रहते हैं, वहीं नए रोगों (यथा हृदयरोग, मानसिक तनाव, उच्च रक्त चाप, कैंसर, यौन-मनोगत रोग) के साथ अब लाइलाज 'एड्स' का भी प्रकोप बढ़ रहा है। इस सबके बीच में लगभग एक लाख औरतें जच्चगी में मर जाती हैं, लगभग इतने ही रेबीज से मर जाते हैं, अधिकतर बच्चे कुपोषण के शिकार हैं, अधिकतर औरतों को रक्ताल्पता है, आदि-आदि।

ऐलोपैथी अपनी व्यवस्था-व्यवहार में अधिकाधिक शहरी, मशीनीकृत एवं महंगी होती गई है। परिणामस्वरूप ग्रामीण, गरीब एवं अनपढ़ उसके लाभों से वंचित रहते हैं। हां, उन्हे इसके दुष्परिणामों को अवश्य झेलना पड़ता है। यदि हमने जन-स्वास्थ्य की दूसरी एवं तीसरी पंक्तियां विकसित की होतीं तो प्लेग से हमारी जगहंसाई नहीं होती। घातक किस्म का मलेरिया हमला नहीं कर पाता और डेंगू, कालाजार परेशान नहीं करते। परन्तु स्वास्थ्य की हमारी आयोजना में वरीयता नहीं है और वर्तमान ढांचे में आयुर्वेदादि, खासकर समावित चिकित्सा की पेठ नही है।

Scanned by CamScanner

इस संदर्भ में हम चीन से सबक सीख सकते हैं। दरअसल चीन एक ऐसा देश है जिससे सामाजिक, औद्योगिक एवं कृषि विकास के क्षेत्रों में भारत के साथ तुलना की जा सकती है। कोरिया, सिंगापुर, ब्राजील, मैक्सिको, अर्जेंटीना आदि से तुलना करना ठीक नहीं होगा। भारत एवं चीन दोनों ही एशियाई देश हैं, बड़े हैं, बड़ी आबादी वाले हैं, पुरानी सभ्यता के धनी हैं। एक ही साथ नियोजित विकास के रास्ते पर चले हैं। परंतु साक्षरता-शिक्षा एवं जन-स्वास्थ्य रक्षा के मोर्चों पर चीन भारत से कहीं आगे हैं। निश्चय ही कलहपरस्त एवं संकट पोषक बहुदलीय व्यवस्था के न होने का चीन को लाभ हुआ है और आज भी (आर्थिक सुधारों की दृष्टि से) हो रहा है परन्तु चीन की सफलता के मूल में चीनी भाषा की एक छत्र अनिवार्यता एवं चीनी (चिकित्सा) पद्धति को गौरवशाली स्थान देने की नीति रही है। यही कारण है कि अटलांटा में चीन अपनी हैसियत प्रदर्शित करता है और भारत मात्र एक लिएंडर पेस ही पैदा कर पाता है।

ऐसा नहीं है कि चीन में आधुनिक पद्धति को नकारा गया है। वह भी वहां उतनी विकसित है जितनी भारत में। परन्तु चीन में औपनिवेशिक सोच की अनुपस्थिति ने चीनी चिकित्सा-विज्ञानियों, शिक्षकों-विद्यार्थियों एवं चिकित्सकों में अपनी पद्धति के प्रति सम्मान, निष्ठा दी हे। यह भारत में नहीं है। भारतीय वैज्ञानिकों में अपनी विरासत के प्रति सम्मान नहीं है, ऐसा प्रोफेसर जे. बी. एस. हल्डेन अक्सर कहते थे। वैसे इधर इतना बदलाव तो आया है कि आर्यभट्ट पुनर्स्थापित हुए हैं और अग्नि, पृथ्वी, आकाश, पिनाक जैसे नाम प्रक्षेपास्त्रों को दिए गए है। बतौर फैशन ही सही, भारतीय वास्तुशास्त्र का प्रयोग बढ़ा है। परन्तु चिकित्सा के क्षेत्र में ऐलोपैथी के लिए चरक, सुश्रुत एवं वागभट्ट को अपनाना अभी भी मुश्किल है। वर्ष १९२९ में अखिल भारतीय मेडिकल कांफ्रेंस में बोलते हुए डा. विधानचन्द्र राय ने सभी पद्धतियों के चिकित्सकों के मेलजोल एवं सहयोग पर बल दिया था। साथ ही यह भी मुद्दा उठाया था कि भारतीय वैज्ञानिकों के मुकाबले चिकित्सा विज्ञानियों का योगदान अत्यल्प क्यों है? स्थिति आज भी बेहतर नहीं है। भारतीय ऐलोपैथी का वैश्विक योगदान निम्नतम है और दूसरी पद्धतियों के प्रति रुख निकृष्टतम है।

इसे यूं समझा जा सकता है कि जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज में 'आयुर्वेद का इतिहास' पढ़ाने की शुरुआत की गई तो भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद देश में चिकित्सा-शिक्षा के ऊंचे स्तर को बनाए रखने में असफल रही और एलोपैथिक डाक्टरों के चिकित्साभ्यास में गड़बड़ी-अनैतिकता को रोकने में भी असफल रही हे। सरकारी संस्था होते हुए भी ऐलोपैथिक डाक्टरों की एसोसिएशन 'इंडियन मेडिकल एसोसिएशन' के विस्तार-पटल के रूप में ही कार्य करती है। यह एसोसिएशन दूसरी पद्धतियों को अवैज्ञानिक तथा आम चिकित्सकों, खासकर समन्वित चिकित्सकों को 'नीम-हकीम' कहती रहती है।

हमारे विशाल जनसंख्या वाले देश में जहां अधिसंख्य आबादी अनपढ़ है, गरीब है, दूरदराज के गांवो में रहती है, उसको बुनियादी स्वास्थ्य जरूरतों की पूर्ति मात्र एक ही पद्धति, खासकर ऐलोपैथी से तो हो ही नहीं सकती और चूंकि कोई भी पद्धति सम्पूर्ण नहीं है इसलिए जरूरी है भारतीय एवं विदेशी पद्धतियों के बीच सार्थक समन्वय हो।

समन्वय के सूत्र

लेनदेन की जरूरत को समझते ही मेलजोल की जरूरत होती है। सभी पद्धतियों के शुद्धतावादी चिकित्सक चोरी-छिपे दूसरी पद्धति की दवाइयों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु समन्वय से नाक-भौं सिकोड़ते हैं। इस पाखंड को छोड़ना पहली एवं बुनियादी जरूरत है। इसके बाद सार्थक समनवय के आयामों पर बहस-विमर्श किया जा सकता है।

समन्वय का पहला क्षेत्र निश्चय ही अनुसंधान का है। यदि हमने आयुर्वेदादि का विकास किया होता तो आज नीम, हल्दी, तुलसी का पेटेंट अमरीका में नहीं होता। यह ठीक है कि कुछ सरकारी संस्थान कार्यरत हैं जैसे वैज्ञानिकों एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के तहत लखनऊ स्थित सी. डी. आर. आई. एवं सिमैप। कुछ विश्वविद्यालयों में भी ऐसा हो रहा हे। इधर रक्षा अनुसंधान विकास संगठन भी इस दिशा में सक्रिय हुआ है। दिल्ली स्थित शरीर क्रिया विज्ञान के रक्षा संगठन में घृतकुमारी (ग्वार पाठ) को मदार दुग्ध से संस्कारित कर उसका होम्योपैथिक विधि से 'मदर टिंचर'तैयार किया गया। सियाचीन में तैनात भारतीय फौजिया को होने वाले गेंगरीन एवं फ्रास्टबाईट में इसका सफलता से प्रयोग किया गया। परन्तु कुल मिला कर ऐसे प्रयास एवं तद्जनित सफलता (पेटेंटो के रूप में) अत्यल्प है।

भारत अपने पेटेंट कानूनों में बदलाव लाए, यह पश्चिमी देशों का इसरार रहा है। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के साथ ही यह दबाव बढ़ गया है। भारतीय संसद के समक्ष पेटेंट अधिनियम में संशोधन का विधेयक भी है जिस पर अभी तक आम राय नहीं बनी है परन्तु यह निश्चित है कि पश्चिमी देशों द्वारा चाहे गए पेटेंट संशोधनों के बाद अधिकतर अंग्रेजी दवाइयां आम आदमी तो क्या, मध्य वर्ग की पहुंच

Scanned by CamScanner

से बाहर हो जाएगी। अतः भारतीय वैज्ञानिक विरासत की रक्षा एवं भविष्य की जरूरतों की पूर्ति हेतु संभावित दृष्टि से अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में व्याप्त अराजकता समाप्त की जाए।

अनुसंधान का एक सर्वथा अनछुआ क्षेत्र रहा है अंग्रेजी दवाइयों का देसी दृष्टिकोण (रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव) से अध्ययन। चूंकि ऐलोपैथी यूरोप अर्थात् ठंडे मौसम की उपज है, वह ऋणात्मक तर्कणा (डिडक्टिव लॉजिक) पर आधारित आधुनिक विज्ञानों पर निर्भर है। इसलिए उसमें लघु-गुरु या उष्ण-शीत जैसे विचार नहीं हैं। भारतीय ऐलोपैथों को यह समझाया जाना जरूरी है कि भारतीय माहौल--मौसम यूरोप-अमरीका से भिन्न है। अब जब वहां चिकित्साभ्यास (चिकित्सकों के तौर-तरीकों पर) सांस्कृतिक प्रभावों के संबंध में लिखा जा रहा हो तो भारतीय ऐलोपैथ जरूरत से अधिक अंतरराष्ट्रीयतावादी आखिर हो रहे है। वैसे भी अन्तरराष्ट्रीयता का अर्थ अपने राष्ट्र को नकारना-उपेक्षित करना तो नहीं होता है। इंडियन मैडिकल एसोसिएशन प्रतिवर्ष डा. विधानचन्द्र राय का जन्मदिन (१ जुलाई) 'चिकित्सक दिवस' के रूप में मनाती है। उसे उन्हीं के १९२९ के आह्वान पर पहल करनी चाहिए।

अनुसंधान के बाद दूसरा क्षेत्र शिक्षा का है। इस शताब्दी के लगभग शुरू से ही देश के आयुर्वेद/युनानी कालेजों में आधुनिक विषयों की भी शिक्षा दी जाती रही है और अब तो होम्योपैथी कालेजों में भी (औषध शास्त्र को छोड़कर) आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती है। परन्तु मेडिकल कालेजों में एकांगी (ऐलोपैथी) शिक्षा ही दी जाती है। १९४९ में कर्नल चोपड़ा समिति ने सिफारिश की थी कि मेडिकल कालेजों में भी आयुर्वेदादि की शिक्षा दी जाए या फिर स्नातक स्तर पर देश में एक ही शिक्षा पद्धति हो और स्नातकोत्तर स्तर पर आयुर्वेदादि का अध्ययन-अध्यापन हो। गुणवत्ता की दृष्टि से आयुर्वेद/युनानी/होम्यो कॉलेजों में ऐलोपैथी से समन्वय के प्रयास संसाधनों की कमी के कारण अधिक सफल नहीं कहे जा सकते, परन्तु जब देश के अधिकांश मेडिकल कालेज खासकर निजी कालेज निम्नस्तरीय हो तो देसी/होम्यो कालेजों से निकले समन्वित चिकित्सकों की गुणवत्ता पर बहस करना बेमानी है और अंग्रेजी दवाइयों के प्रयोग के उनके अधिकार पर बखेड़ा करना जन-स्वास्थ्य की दृष्टि से आपराधिक षड्यंत्र मात्र ही है परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक प्रयास हेतु जरूरी है कि एक राष्ट्रीय चिकित्सा शिक्षा नीति तैयार की जाए। ऐसा करने का वादा १९८३ की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में किया गया था, परन्तु प्रयास रत्ती भर भी नहीं किया गया। कारण, शुद्धतावादियों का दबाव।

समन्वय की जरूरत का एक स्पष्ट क्षेत्र है नैदानिक जांचों का क्षेत्र। मात्र नाड़ी के आधार पर रोग का ज्ञान करने की कला विलुप्त होती जा रही है। वैसे भी यह पूर्णतः शास्त्र सम्मत नहीं है। रोग निदान की देसी तकनीक को मात्र नब्बजी में ही तब्दील कर दिया। फिर आज नई एवं बेहतर रोग निदान तकनीकें उपलब्ध है। इसलिए इनकी शिक्षा-दीक्षा, शोध-विकास को जरूरत स्वयं सिद्ध है। साथ ही जरूरी है कि मात्र नैदानिक परीक्षणों पर निर्भरता समाप्त की जाए। गैर-जरूरी परीक्षणों पर भी रोक जरूरी है और इसके लिए चिकित्सकों को आयुर्वेदादि का अध्ययन करना होगा।

जहां तक चिकित्साभ्यास का प्रश्न है, अंग्रेजी दवाइयों की आशुकारिता संदेह से परे है परन्तु उसमें हानिकारिता का कारक भी विद्यमान है। इसलिए दूसरी पद्धति का ज्ञान होने पर ऐलोपैथ अपनी दवाइयों से होने वाले नुकसान को कम कर सकते है। जैसे कैंसर में कीमोथैरापी के विषाक्त प्रभाव को अश्वगंधा-सत्व के प्रयोग से कम किया जा सकता है।

इसीप्रकार मुख में जीभ के नीचे होने वाली वृद्धि (रेनुला) में होम्यो दवाइयों (यथा घूजा) की लाभप्रदता असंदिग्ध है जबकि ऐलोपैथी में मात्र शल्यकर्म ही इसकी चिकित्सा है। एक अन्य उदाहरण लें। बैलेडोना का प्रयोग अंग्रेजी, देसी एवं होम्यों - तीनों पद्धतियों में होता है परन्तु जहां होम्यो पैथी में इसका प्रयोग हार्निया में किया जाता है वहीं यह ज्ञान दूसरी पद्धतियों के चिकित्सा ग्रंथो में वर्णित नहीं है। आशुमारी एवं बदनाहर होने के साथ-साथ सस्ती भी। ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। जैसे दो भाषाओं का जानकार स्वयं अपनी मातृभाषा की खूबसूरती को दूसरी भाषा की जानकारी के आधार पर बेहतर समझ सकता है ठीक उसी प्रकार उभय (चिकित्सा) पद्धति का चिकित्सक अधिक सफल हो सकता है।

समावित चिकित्सा परम्परागत देसी/होम्यो या ऐलोपैथी से स्वतंत्र एवं भिन्न है। यह दोनों पद्धतियों की कमियोंसे बचती है और दोनो के श्रेष्ठतम को ग्रहण करती है। इस प्रकार बेहतर रोगी-चिकित्सक संबंधो की भी नियामक बनती है। सार्थक समन्वय हो, इसके लिए चिकित्सा क्षेत्र के कट्टरवादियों/शुद्धतावादियों पर अंकुश लगाया जाए। इसके लिए चिकित्सा शिक्षा शोध एवं अभ्यास की समावित राष्ट्रीय नीति बनानी पड़ेगी।

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

Ph. : 5448538
Fax : 011-5419995

NIJHAWAN - DIAGNOSTIC - CENTRE

H-12 Karam Pura, New Delhi - 110015

COMPUTERISED AND EQUIPPED WITH LATEST GADETS

FACILITIES :

- ❑ X-Ray
- ❑ Dental X-Ray
- ❑ Ultrasound
- ❑ E.C.G
- ❑ Clinical Laboratary

Note : Pulse Treatment Facilities also Available

Timings : 8.00 a.m. To 9.00 p.m.

Managing Director
Dr. Satinder Singh
B.A.M.S. (DELHI), M.D.C.A. Medicine
A.I.I.M.G.A. (Life Member)

Scanned by CamScanner

With

Best

Compliment

From :

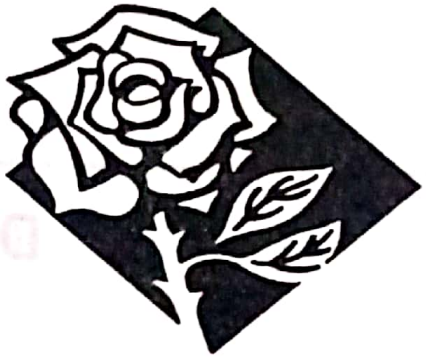

The Reliable Drugs Herbals

Service With Mission.....

"To Promote Ayurveda"

Works: Sehatpur, Faridabad, Haryana
H.O. 326, Sant Nagar, East Of Kailash New Delhi-110065

Tab Nirshul	-	**For Migraine**
Tab Tonsin	-	**For Recurrent U.R.T.IS.**
Syrup Hepato Plus	-	**Hepato Stimulant & Tonic For Non-Surgical Jaundice**
Syrup All One	-	**Cardamom Flavoured Multi Purpose Herbal Tonic**

● ● ● ● ● ● ●

Scanned by CamScanner

With Best Compliment From :

SANTULAN

The Specialised Centre for Management of
Psychiatric & Drug./Alcohol Problems

F-60, Bali Nagar, Near Raja Garden
Tel. : 545-5356,
545-7111

Now Offers the Following Services

-Intensive Care Unit for Violent/Suicidal Patients

-Ambulance Care Unit for Violent/Suicida Service for Psychiatric Patients

-Intelligence/Psychological Testing

-Group Therapy & Individual Counselling

Dr. Ashwani Kumar Gupta
MD (Psy.)
Consultant Psychiatrist

S.L. MANGA
Counsellor

Dr. AJIT SINGH
Clinical Psychologist

MASOOD
Counsellor

Scanned by CamScanner

मानसिक तनाव का आयुर्वेद उपचार

डॉ. ओ. पी. वशिष्ट
मेम्बर काउन्सिल ऑफ इन्डियन मेडिसिन
मिनीस्ट्री ऑफ हैल्थ एन्ड फैमिली वैलफेयर
गर्वमेन्ट ऑफ इन्डिया

सम: दोषा: समाग्निश्च समधातु मलक्रिय:।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मन: स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

सुश्रुत द्वारा प्रतिपादित इस परिभाषा के अनुसार जिस पुरूष के दोष धातु, मल एवं अग्नि विकार रहित या साम्यावस्था मे हो तथा जिसकी इन्द्रियाँ मन एवं आत्मा प्रसन्न हो वह स्वस्थ है।

आज संसार मे प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप से मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जीवन की व्यस्तता, स्वार्थ की अभिवृद्धि अशांत वातावरण जातिगत एवं धर्मगत विद्वेष, सामाजिक मूल्यों में गिरावट, अशिक्षा, बेकारी, निर्धनता, आदि ने सामान्य लोगों मे मानसिक तनाव बढाने में सहयोग दिया। मानसिक तनाव से शरीरस्थ त्रिविध दोषों की साम्यावस्था में विक्षोभ उत्पन्न होता है परिणामत: शारीरिक कार्य अत्यधिक हो जाते है। शिर शूल, प्रतिश्याय, कर्णनाद, शारीरिक पीड़ा बिना श्रम के थकान की अनुभूति आदि मानसिक तनाव के कारण पाये जाते है।

प्राकृतिक अधारणीय वेग जैसे मूत्र, पुरीष, वीर्य, अपानवायु, छर्दि (उल्टी) छींक, जृम्भा (जंभाई) भूख, प्यास, अश्रु, निद्रा, श्रम जन्य श्वास आदि के धारण करने से अनेक मानसिक एवं शारीकि विकृतियाँ उत्पन्न होती है। इसलिए इन अधारणीय वेगों को न धारण करने का परामर्श दिया गया है। किन्तु आज के जीविकात्मक कार्यो की व्यस्तता, आलस्य, निरन्तर यात्रा तथा व्यावसायिक उलझनो में अधारणीय वेग विधारण होता है जिससे आदि (मानसिक रोग) व्याधि (शारीरिक रोग) दोनों में वृद्धि होती है।

मानसिक तनाव के कारणों से सीमार्थ अधिक कामोपभोग, क्रोध, वियोग, ईर्ष्या, द्वेष, मोह के साथ-साथ मादक पदार्थों का सेवन, प्रतिक्रिया युक्त आधुनिक ओषधियो का प्रचुर मात्रा में उपयोग आदि भी महत्वपूर्ण है। परिणाम यह होता है कि अनिद्रा, आँखो में लाली, कब्जियत, उच्च रक्तचाप निम्न रक्तचाप हृदय की धड़कन, घबराहट आदि रोग उत्पन्न हो जाते है।

Scanned by CamScanner

पारिवारिक, राजनीतिक, प्रशासनिक तथा व्यापारिक परिस्थितियों की अनिर्वयताएँ भी मानसिक तनाव पैदाकर रही हैं जिनसे शारीरिक अवश्य विशेषकर हृदय, मस्तिष्क, आमाशय, यकृत मूत्रोत्सर्गतंत्र एवं प्रजन्नतंत्र तथा ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियाँ बाधित होती है। इनसे मुक्ति पाने के लिए हमे सहज सुलभ आयुर्वेद चिकित्सा की शरण में जाना होगा।

मानसिक तनाव से मुक्ति हेतु आयुर्वेद निम्न बातो के अनुपालन पर विशेष बल देता है।

१. व्यायाम- मानसिक तनाव मिटाने का सर्वोत्तम उपाय है। शारीरिक व्यायाम। यह दण्ड बैठक, कुश्ती, बागवानी, के रूप में पुरूषों द्वारा किया जावे अथवा घर की सफाई, कपडों की धुलाई, मसालों की पिसाई के रूप में स्त्रियों द्वारा किया जावे।

२. भ्रमण- प्रात: काल के भ्रमण से मन प्रसन्न रहता है। तथा शरीर में तेज ओज की वृद्धि होती है। जो लोग कसरत नहीं करते उन्हें भ्रमण से बहुत लाभ होते देखा गया है।

३. मन: प्रसाद- मन की प्रसन्नता में तनाव जन्य दुखों का निवारण हो जाता है। गीता में योगेश्वर भगवान कृष्ण ने कहा है 'प्रसादे सर्वदुखना हानिरस्योपजायते' मन की प्रसन्नता से सम्पूर्ण दु:खो का नाश होता है।

४. आसन- योग के विविध आसनों में पद्मासन एवं शवासन मानसिक तनाव दूर करने में अधिक उपयोगी सिद्ध हुये है।

५. अक्रोध- क्रोध को शान्ति से जीत कर मानसिक तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है। गौतम बुद्ध का वचन है - 'अक्रोधेन जयेत क्रोधम्'।

६. क्षमा- क्षमाशील व्यक्ति मानसिक तनाव से मुक्त रहता है।

७. सत्य भाषण- मानसिक तनाव की जड़ असत्य भाषण एवं असत्य आचरण है। एक झूठ को सच साबित करने के लिये अनेक झूठ बोलने पड़ते है तथा मन में तनाव बढ़ता जाता है जिसे सत्य बोलने एवं सदाचरण से ठीक किया जा सकता है।

८. मन्त्र जाप- प्राकृतिक चिकित्सा के परम अनुयायी महात्मा गांधी कहा करते थे कि मन की अशान्ति दूर करने का सर्वोत्तम उपाय राम नाम जाप है। ईश्वर के चिन्तन एवं उसके पावन नाम के जप से समस्त बाधाएँ दूर हो जाती है। फिर मानसिक तनाव कैसे रह सकता है?

९. प्राणायाम- प्राणायाम के सम्यक् पालन से दीर्घायु की प्राप्ति, फुपफुस विकारों से मुक्ति तथा मन की चन्चलता एवं उद्विग्नता शान्त होती है। स्थिर मन व्यक्ति का शरीर सुपुष्ट होते है।

१०. ध्यान- ध्यान से भी मानसिक रोगों से दूर रहा जा सकता है।

सम:

सुख दु:ख लाभ, हानि, जीवन-मृत्यु आदि अनुकूल प्रतिकूल स्थितियों में अपना सन्तुलन नहीं खोता वह मानसिक तनाव से कभी ग्रस्त नहीं होता है। अत: जैसी भी परिस्थिति और उस ईश्वर की इच्छा समझ कर सहर्ष स्वीकार करने से मानसिक तनाव से दूर रहा जा सकता है।

Scanned by CamScanner

Sivananda

RENOWED HIMALAYAN AYURVEDIC PRODUCTS

HEALTH AS NATURE INTENDED

Ayurveda, which has been practised in India for more than 5000 years has perfected health-bestowing tonics, which keep a perfect balance in the body, and well-being in man. His Holiness, Swami saw the need for the practice of Ayurveda and established Sivananda Ayurvedic Pharmaceutical Works in 1945. Today, his inspiration lives on, in a range of quality ayurvedic which bear out his enduring belief in good health, the way nature intended.

NAV AMRIT CHYAVANA PRABHA
Specially formulated for people over 40 years, contains rare herbal extracts known to relax muscles, boost sexual strength and accelerate cell regeneration.

NAV CHYAVANA PRABHA
A herbal tonic with restorative effects. Indicated in general weakness; tones up the liver and kidney, enhances stamina and maintains good health. Also useful in cough, cold, asthma and digestive troubles.

NAV BAL CHYAVANA PRABHA
A growth booster for children, enriched with Shankha Pushpi - a brain tonic and a rare memory enhancing herb called Brahmi.

SIVANANDA DANTA RAKSHAK
Good for strengthening the teeth and gums. Prevents infection of the teeth and keeps them intact

BRAHMI AMLA HERBAL OIL
An excellent Himalayan herbal medicated oil. Ensures healthy hair and prevents its fall. Cools the brain and eyes.

DIABOCID TABLETS
For non insulin dependent diabetes, adult stable diabetes and newly discovered diabetes.

SHILAJEET PLUS CAPSULES
For a wide range of common ailments including skin problems, respiratory disorders, piles, excess fat and digestive disorders like dyspepsia, constipation and worms.

HEAL-EX OINTMENT
For dry skin disorders such as cracked heals, chapped hands, chill blains, hyperkeratosis, boils, pimples, cuts and wounds.

ARTHRID OIL
For various kinds of rheumatic and joint pains, muscular aches, back aches inflammation of knee an elbows.

OTHER PRODUCTS :
Ksudha Vardhak - improves appetite, **Triphala Powder** - blood purifier, **Pure Shilajit**- for anaemia, **Chandra Prabha** - for piles, **Brihat Yograj Vatee**- for joint pains, **Arogyada**- for muscular pain, **Kutaj Yoga**- for diarrhoea, **Maha Eladi Vatee**- for cough, cold and sore - throat.

Head Office :
MAYAR TOWERS,
12, Yamuna Marg, Civil lines, Delhi-110054. Ph. : 29449991(18lines)

Works :
SHIVA NANDA PHARMACEUTICALS (PVT.) LTD.
B-30 Jhilmil Industrial Area, Shahdra, Delhi - 110095. Ph. : 2283037, 2283297

Scanned by CamScanner

With Best Compliment From :

❑ **CULIV** *Syp. & Capsules*

CURES LIVER DISORDERS

❑ **OCCICOF** *Syp.*

FOR EFFECTIVE COUGH RELIEF

❑ **NUTONE** *Syp.*

Improves Physical Health And Mental Alertness

AYUSEARCH DRUGS AND LABORATORIES

1905, Modern Industrial Estate, Bahadur Garh - 124507

With Best Compliment From :

RAMA MEDICOS

CHEMIST, DRUGGIST & COSMETIC

K-175 I, JAHANGIR PURI, DELHI-110033

Scanned by CamScanner

Ph. : Clinic : 6985818
Res. : 6414554
Pager No. : 9628009972

MADAAN DIAGNOSTIC CENTRE

RZ-289/17 Tuglakabad Extn. (Near Tara Apartment Chowk), New Delhi - 110019

- ❑ X-Ray
- ❑ E.C.G.
- ❑ Ultrasound
- ❑ Computerised Pathological Lab.

A Computerised Diagnostic Unit Providing Facility For All Routine And Special Investigations.

CONSULTANT PATHOLOGIST

- ❑ **Dr. Vidushi Madaan**
  MBBS, MD (PATH)
- ❑ **Dr. V. Prakash**
  MBBS, DNB, MD (PATH)

CONSULTANT RADIOLOGIST & ULTRASONOLOGIST

Dr. Om Prakash Bansal
MBBS, MD (RADIO-DIAGNOSIS)

Dr. Manoj K. Ahuja
MBBS, MD (RADIO-DIAGNOSIS)

CONSULTANT CARDIOLOGIST

Dr. P.K. Sharma
MBBS, MD (MEDICINE)

RELIABILITY IS OUR FIRST CONCERN

Scanned by CamScanner

स्वचलित नाड़ी तत्रं व चक्र

मानव शरीर के अस्तित्व में एक स्वचालित नाड़ी तंत्र आटोनोमस नर्वस सिसटम Autonomous Nervous sys कार्यरत है Auto अर्थात स्व:, तो स्वत: कौन है, कौन इस स्वचालित नाड़ी प्रणाली को चला रहा है? डाक्टर लोग इसे स्वप्रेरित तत्र (self propelled system) की संज्ञा देते है परन्तु यह स्व: है क्या?

महर्षि चरक ने कहा है कि भेषज, देश, काल, बल, शरीर, अहार, सात्मय, सत्व, प्रकति और वायु इन के भेद और प्रभेद इतने सूक्ष्म है कि इन को भली भांति समझे बिना ही बडे बडे बुद्धि का तो कहना ही क्या । फ्रिर भी जो संजो उसे आप के समक्ष रखा है। मैं अपने गुरूजनों, बुर्जगों, विद्वानो से आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास करता हूँ कि यदि मुझे से कोई त्रुटि रह गयी हो तो उस के लिए मुझे क्षमा एवं मार्ग दर्शन करेगे ।

शरीर "पचं भूतो" से उत्पन्न है और दोष भी पचंभूतो से ही उत्पन्न होते है इन पंच महाभूतो को तीन दोषो में जानना शरीर का ज्ञान है" वर्ना नाड़ी के रूक जाने पर कुछ भी ज्ञात नही होता । इसलिये सुश्रुत ने कहा है कि त्रिदोष अर्थात, बात, पित, कफ़ "विश्व रूप हैं और सर्वत्र विराजमान है "।

जैसा कि आज चर्चा का विषय है आयुवैद के मतानुसार "नाड़ी" परिक्षण से रोग निदान । आयुर्वेद ने मतानुसार नाड़ी विज्ञान से रोग निदान करना आयुर्वेद ने सिद्धान्त के अनुसार "त्रिदोष" है ।

यद्यपि आयुर्वेद सहिताओं में नाड़ी का विर्स्तत वर्णण प्राप्त नही होता फ्रिर भी अनेको ग्रन्थो में नाड़ी विज्ञान का उल्लेख मिलता है । आयुर्वेद में 10 नाड़िया बताई गई है उसमे ईडा, पिंगला, व सुषुमना तीन प्रमुख मानी जाती है ।

इडा: वामे स्थिता भागे पिंगला दक्षिणे स्थिता ।

सुषुमना मध्य देशे तु गान्धारी वाम चक्षुसि ।।

यह स्वात्मा क्या है, यह आत्मा हर मनुष्य के हृदय में निवास करती है तथा साक्षी अवस्था में है जो कि सर्वशक्तिमान परमात्मा का यह प्रतिबिम्ब है वास्तव में हमारे नाड़ी तंत्र में तीप मार्ग है मध्यमार्ग को हम सुषमना मार्ग कहते है जाक कि सहानुकम्पी नाड़ी तंत्र (Para sympathetic nervous system) या स्वचालित नाड़ी तंत्र (Autonomous) के लिये कार्य करता है बांया मार्ग ईडा बायें अनुकम्पी (Left Sympathetic/nervous) तथा दांया मार्ग पिगला दाये अनुकम्पी (Right sympathetic nervous) का देख भाल करता है अभी तक चिकित्सा विज्ञान (Modern Scientistic system of medicine) न तो इस तथ्य को स्वीकार कर पाया और न ही खोज सका है कि दायां और बायां अनुकम्पी नाड़ी यंत्र (Left or Right Symphathetic nervous) एक दूसरे के पहलु में स्थापित दो भिन्न नाड़ी तत्र है! इनके कार्य एक दूसरे के पूर्णतया विपरित है । वाई ओर का मार्ग इडा नाड़ी कहलाता है । यह दाये ओर तथा मस्तिष्क के पिछले हिस्से से जुडा हुआ है । वायां तथा दायां दोनो मार्ग, एक दूसरे को आज्ञा चक्र के स्थिर पार करते है । वायां मार्ग हमारे वायें अनुकम्पी नाड़ी तत्रं की देख भाल करता है और यह मार्ग हमारे भावनात्मक तथा व्यतीत जीवन की देख भाल को करता है ।

दायें मार्ग को पिगला नाड़ी कहते हैं यह इड़ा नाड़ी की आज्ञा चक्र माथे पर स्थिरता को पार करती है यह वायी और मस्तिष्क के आगे के हिस्से से जुडी है यह मार्ग दायी अनुकम्पी के लिये कार्य करता है यह दाये भाग में अचेतक मन में जो हमारे भविष्य की रचना करता है भविष्य के विषय में जो भी हम सोचते है वह दायी तरफ़ रिकार्ड हो जाता है । ऐसा आयुर्वेद का मानना है ।

वीच का पथ सुषमना कहलाता है इसी रास्ते में ब्रहमरध्र के द्वारा सूक्ष्म उर्जा लिये हुए कुण्डलिनी गुजरती है जो कि आत्मा का एकीकरण करने में सहयोग करती है इसका अनुभव सर्वप्रथम हाथो की हथेलियाँ व तालु भाग में शीतलता का स्थिर प्रदान करता है !

इसे आज के वैज्ञानिक अस्वीकार करना आसान है समझते है परन्तु यह वास्तविकता में सत्य है कि साधक अपनी नाड़ी यत्रं के द्धारा ही ब्रहमाँड को देख है ।

नाड़िया की कुल संख्या 72,000 से 3,500,000 साढे तीन लाख बताई है परन्तु 72,000 नाड़ियो में मुख्य 72 ही है इनमे भी प्राणवाहिनी दस नाड़ियो को प्रधान माना गया है ।

परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक त्रिदोष को पूर्णत: स्वीकार नही करते और इसे अप्रामणिक भी समझते है क्योकि त्रिदोष सिद्धान्त वेदमूलक है और आधार पर नाड़ी विज्ञान भी वैदिक परम्परा से सिद्ध है ।

Scanned by CamScanner

वराह उपनिषद में कहा है कि नाड़ियो का आश्रय "शरीर" है और नाड़िया प्राणो का आश्रय है तथा जीवीका का निवास प्राण के आश्रय है वह जीव हंस अहं स: सहारे हैं ।

उक्त विवेचन के अनुसार प्रशन यह उड़ता है कि "नाड़ी परीक्षा" आदि प्रयोगो में धमनी शब्द का प्रयोग न करके "नाड़ी" शब्द का प्रयोग क्यो कर प्रचलित हुआ ? वर्तमान समय में प्राप्त आयुर्वेद की सहिंताओ में स्त्रोत का पृथक पृथक प्रयोग किये जाने पर भी नाड़ी, धमनी सिरा आदि शब्द का प्रयोग मिश्रित रूप में किया जाता है इससे स्पस्ट हो जाता है कि स्पर्श के द्वारा ही नाड़ी गम दोषो का मलों का तथा साम, निराम आदि का ज्ञान विलो त्रैराशिक विधि सें जाना जा सकता है । "आचार्य सुश्रुम" ने इस की पुष्टी की है । इसी तरह "कणाद" ऋषि ने भी नाड़ी विज्ञान के 10 पर्याप माने है जैसै स्नायु, नाड़ी, वस्त्र, हिस्त्रा, धमनी, धरा, तन्तुकी, जीवितज्ञ, सिरा ।

आज आधुनिक युग के वैज्ञनिक मॉडर्न साइनेटिस्ट भी यह मानने लगे है कि नाड़ी के प्रावह के तीन मुख्य कारण है तो कल्पना कीजिये की हमारे ऋषियो ने हजारो वर्ष पूर्व ही इन्हे प्रामणिकता में लाया होगा जो कि आज के साइन्सटिसट भी यह मानने लगे है कि :

The Nerveos System of man. The three major components are the Brain, spinal cord, and nerves, which link these two structures to other part of the body.

Nerves linking the Brain with the body are called " Caranial nerves". Those linking the spinal cord with the body are called spinal nervers.

The Nervenous system in the another way information is transfered from one part of the body to another is through the action of nerves impulses. The large illustration shows three key part of the nerveous system. The Brain, spinal cord, and nerves link these strucutures to the rest of the body. The chain of Sympathetic ganglia are shown in solid 'red' and spinal nerves 'Gray'.

Brain, spinal Cord, symphathetic Ganglia, vagus nerves (para sympathetic), spinal nerves, nerves, vertebra, spinal cord., sonsory nerves (carry impulser to the C.N.S.) Motor nerves (carry inpulser from the C.N.S.) spinel nerves (mixed, sensoray and motor nerves).

AUTONOMOUS NERVOUS SYSTEM & CHAKRAS

There is an 'autonomous nervous system' working in our being 'Auto' means 'self', so who is this Auto who is running this autonomous nervous system ? Doctors have called it a self propelled system, but who is the self ?

The seven subtle energy centre and called Chakras which in the upward order are Mooladhara, Sweadisthan, Nabhi, Anahat, Vishuddhi & Sahasara Vishuddhi, Agya and Sahastrara.

There are actually three channels in the system. The one in the centre is called sushumna, which caters to the parasympathetic nervous system, or the autonomous system. The one on the left looks after the left sympathetic nervous system and on the right it looks after the right sympathetic nervous system. Now, it is not accepted yet, or discovered yet in medical science, that the left and right sympathetic nervous systems are two different just oppsed system. Their functions are absolutely opposite to each other.

The left side channel is called ida nadi and is connected to the right side and the back of the brain. The two left and right channels cross at the Agnoya chakra level. This channel caters for the left sympthetic nervous systems. This channel looks after our emotional life and our past.

The right side channel is called as Pingala Nandi, which crosses ida nandi at the optic chasma. it is connected with the left side and the front of this brain.

This channel caters for the right sympthetic nervous system. On the right hand side there is the supraconscious mind, which creates our future. Whatever think about our future is recorded on the right hand side.

The Central path is called Sushumna, through which the kundalini passes to pierce though the Fontanelle bone area (Brahmarandhr) to the enter into the subtle energy of the all pervading power. This how the actualisation of self realsiation takes place. First the hands feel at the fontanelle bone area and

Scanned by CamScanner

on the finger tips the cool breeze. The hands are steady, they do not shake, they look normal but the seeker feels the ripples of cool breeze. For the first time he feels the existence of the all pervading power.

नाड़ी स्पन्दन सख्या नब शिशु की नाड़ी "एक पल" में सामान्यत: 56 बार स्पन्दित होती है । यौवन में 36 बार तथा बृद्व अवस्था में 29 से 31 बार स्पन्दित होती है । इसके अतिरिक्त स्त्री पुरूषो के नाड़ी स्पन्दन में समानता होने पर भी स्त्रियो की नाड़ी एक "पल" मे 2 बार अधिक स्पन्दित होती है ।आयुर्वेद के मतानुसार "दश गुरू" या दीर्घ अक्षरो के उच्चारण काल को "प्राण" कहते है व दश प्राणो का एक "पल" और 60 की एक घडी को माना है ।

लेकिन आज के तेजी से बदलते हुए युग में समय को घन्टा, मिनट व सैकिन्ड में परिवर्तन किया है और Stethoscope के माध्यम से variation on of Plus or minuts 0.3 to 0.6° C or (0.5 to 1° F) are consider 'Red' with the normal range.

Pluse rate 50 to 100 beats per minute in adults. Respiratory rate 16 to 20 per minute, pluse pressure approximately 40 with a range of 30 to 50 being normal.

1. New born child normal pulse rate is 130 to 140 per minute.
2. 10 to 20 years age - 80 to 85 per minutes.
3. And 21 to 60 years age - 60 to 65 per minutes.

इस प्रकार रोग और काल विशेष या व्याधि विशेष के कारण होने वाले उसके भेदो को बतलाती हुई नाड़ी पृथक पृथक गतियो को धारक करती है और उस के लक्षण सामने उद्वत होते है जैसे कि श्वास रोग, हद्य रोग, अजीर्ण, ग्रहणी अतिसार, विसूचिका, अम्लपित, जलोदर, प्लीहा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, पक्षाघात, वातव्याधिक, कृमि, प्रमेह, शूल, मेदोरोग, अपस्मार, अपस्मार, इत्यदि में विभिन्न प्रकार से नाड़ी को बोध होता है ।

मेरी इन 10 साल की चिकित्सा अवधि के अनतराल मे जो नाड़ी का ज्ञान, बोध महसूस कर पाया हूँ शास्त्रोक्त कितनाप्रमाणिक है । यह आप पर निर्भर करता है ।

नाड़ी द्वारा साध्य असाध्य का ज्ञान

कहा जाता है कि नाड़ी अपने स्थान पर स्थित रहे और लगभग 30 बार स्पन्दित हो तो रोगी की मृत्यु की शका नही रहती परन्तु जब नाड़ी अत्यनत वेग गति से चले तथा रोगी को स्पर्श करने पर रोगी के शरीर पर ठन्डा पानी मालूम हो तो रोगी को असाध्य ही समझना चाहिए ।

यदि नाड़ी अधिक कपन करती हो या अधिक फ्रडकती हो तो उसे भी असाध्य समझना चाहिए । कर्मा, धुर्ता, क्रोध, भय, चिन्ता से भी नाड़ी की गति छिन्न होती है । रक्त प्रकोप मे नाड़ी भारी व गरम होती है । आमबात मे नाड़ी छिन्न होती है । भूख या अग्नि मान्दय में नाड़ी की गति चपल होती है । बवासीर मे नाड़ी का वग भारी पड़ जाती है । मूत्राधार मे तो नाड़ी टूट सी जाती है । दिन की अपेक्षा मे समय नाड़ी भारी होती है ।

नाड़ी सर्प के समान तीक्षण गति से चले और गले मे नाद स्वर धुर धुराने लगे तो उसे भी असाध्य ही जाने ।

अकस्मात् मृत्यु वाले रोगी की नाड़ी डमरू के समान चलती है । या नाड़ी स्थिर हो गयी हो इस तरह अनेको उदारहण नाड़ी विज्ञान से मिलते है परन्तु आज के इस त्रिशंकु संस्कृति का उत्कर्ष भारत मे एक भागवादी संस्कृति का अडडा जमा रही है । धर्म, संस्कृति, रीति, रिवाज, सभी मे आधुनिकता ने कब्जा कर लिया है । हम न तो पूर्णतया भारतीय वाने को स्वीकार कर पा रहे है और न ही पश्चिमी । हमारी संस्कृति किस दुर्दशा को झेल रही है यह अनुमान लगाना भयनाक हो गाया है ।

यद्यपि नाड़ी विज्ञान आजकल सर्वथा लुप्त सा हो गया है । फ्रिर भी आयुवैद के चिकित्सको को इस पर गहन अभ्यास करना होगा ताकि परम्परगत भारतीय चिकित्सको को इस परम्परागत भारतीय चिकित्सा पर सदैव आसथावान बनी रहें ।

धन्यवाद ।

डा० डी. डी. सेमवाल

Scanned by CamScanner

रात को खाया चिकन दो प्याजा,

सुबह बजा दिया कब्ज ने बाजा !

प्रस्तुत है भारत का एकमात्र ई. एफ. एफ. (Extra Fibre Formulation) युक्त हर्बल चूर्ण जिसमें हैं दन्ती सहित अनेक प्राकृतिक जड़ी - बूटियां जो इसे बनाती हैं 95% फाइबर युक्त । फलस्वरूप कम फाइबर युक्त भोजन या मासाहारी भोजन (जिसमें फाइबर नही होता) में उत्पन्न कब्ज की परेशानी में यह अत्यन्त प्रभावशाली हैं । इसलिए राहत अपनाइए और कब्ज से तुरन्त राहत पाइए ।

प्राकृतिक फाइबर युक्त 95%

राहत

फाइबर युक्त चूर्ण

डीलरशिप हेतू सम्पर्क करे

निर्माता : मेडिन बेल् हर्बल केयर प्रा. लिमिटेड
119/126, नागलोई, नई दिल्ली - 110041
फोन : 5478300

राहत से तुरन्त राहत !

SHRI RAM SINGH HOSPITAL & HEART INSTITUTE

26-26 A, EAST KRISHNA NAGAR, SWARAN CINEMA ROAD, DELHI-110051
PHONES : 2246964, 2216443

Equipped With

Department of Medicine
Cardiology
Child & Family Welfare
Dermatology & Venerology
Gastro-enterology
General Medicine
Intensive Baby Care (Nursery)
Intensive Cardiac Care
Neonatology
Paediatrics
Laboratory (THE CELL)
Bio-Chemistry
Clinical-Pathology
Heamatology
Histopathology
Microbiology
Anaesthesia & Resuscitation
Anaesthesiology
Emergency
Department of Surgery
Burns & Plastic Surgery
General Suregey
Obstetrics & Gynaecology
Opthalmology
Orthopaedics
Paediatric Surgery
Oto-Rhino-Laryngology
Neurosurgery
Urology
Cancer Surgery (THE FOCUS)
X-Ray
Ultrasound
Echocardiography
C.T. Scan
T.M.T.
Holter
Pacemaker
Portable
q X-Ray
q Ultrasound
Chemist Shop
24 Hours Open

Complete Staff of Shri Ram Singh Hospital

Director
Dr. Ashok Singh

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

NIJHARA HOSPITAL & RESEARCH CENTRE

2979/3, Ranjit Nagar, Near Shiv Mandir, South Patel Nagar, New Delhi-110 008.
Ph. : 5748721 Pager No. : 9632-111012, Mobile No. : 98 110 75034 (Res.) : 5766940

SERVICES AVAILABLE

- ❑ CONSULTATION'S OF ALL SPECIALITIES
- ❑ 24 HR EMERGENCY & ADMISSION
- ❑ OPD 9 A.M. TO 1 P. M.
- ❑ X-RAY
- ❑ LABORATORY (SAMPLE) COLLECTICN FROM HOME)
- ❑ ULTRA SOUND
- ❑ ALLERGY TESTING
- ❑ PULMONARY FUNCTION TESTING
- ❑ ECG & EEG
- ❑ HOLTER
- ❑ VACCINATION
- ❑ ANTENATAL CARE
- ❑ DELIVERY
- ❑ ABORTION
- ❑ NEBULIZER
- ❑ ENDOSCOPY FOR LUNG, STOMACH& URINARY PROBLEMS
- ❑ MAJOR OPERATION THEATRE
- ❑ LAPAROSCOPIC SURGERY
- ❑ CANCER CARE CENTRE
- ❑ STONE CLINIC
- ❑ NURSERY
- ❑ PHOTOTHERAPY
- ❑ BONE & JOINT CENTRE
- ❑ FRACTURE CLINIC
- ❑ AMBULANCE

Dr. Gaurav Nijahra
M.D.
Physician, Chest Specialist
T.B. Consultant

Dr. Anjili Nijhara
M.D.
Obstetrician and Gynaecologist

Scanned by CamScanner

Dr. Preeti Chhabra
MD. (Ay. Medicine)
Consultant Ayurvedic Physician

एड्स की रोकथाम - एक परिचर्चा

आधुनिक भारत में समाज की अभावात्मक व हानिप्रद स्थिति का कारण उपलब्धियों का अभाव नहीं है, वरन् अपनी ही महान उपलब्धियों की अल्प जानकारी है। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत की श्रेष्ठत्तम उपलब्धियाँ सर्वज्ञात है। युगान्तरीय चेतना द्वारा आन्दोलित, पुर्नजागरण और पुननिर्माण एवं परिवर्तन के महान क्षणों में आयुर्वेद अत्यंत परिवर्तन के महान क्षणों में आयुर्वेद अत्यंत परिकृष्त, पूर्ण एवं विशाल आस्था का सूत्र है। अपने ही उद्गम स्त्रोत भारत देश में भयावह स्थितियों से जूझता, आस्थासंकट में फंसा यह महा विज्ञान प्राचीन चिकित्सा पद्धति के रुप में, स्वास्थ्य रक्षा के लिए पुन: विश्व भर में विस्तार पाने के लिए व्याकुल है। आयुर्वेद एवं प्रचलित आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के तुलनात्मक संदर्भ में प्रक्रिया, उत्पत्ति, स्वस्थवृत, आरोग्यकर एवं नैदानिक सिद्धांतो का अवलोकन करने पर अत्यंत जटिल, गंभीर एवं ज्वलन्त प्रश्न चिन्ह उठ खड़े होते हैं।

आज के युग में विश्वविख्यात, चिकित्सा विज्ञानी स्वयं ही आयुर्वेद की तुलना में इसे अनुमान प्रक्रिया एवं वैज्ञानिक अन्धविश्वास का विस्तार मानने लगे हैं। तब क्यों न इस धारणा के आयुर्वेद के सम्यक् ज्ञान द्वारा स्थानान्तरित कर दिया जाए। आधावधि यह तथ्य तो स्वीकार्य है कि अंधाखोज की पद्धति को अपनाकर संपूर्ण भूमंडल पर आतंक छाया है और समस्त पृथ्वीवासियों को अनिश्चितता के प्रवाह में बह जाने का भय लगने लगाा है। आखिर इसका प्रतिकार कैसे हो? प्राचीन भारतीय विज्ञान के मूल ग्रोत्तों को विकसित कर पाने और अपनाए जाने पर ही इसका निराकरण हो सकेगा।

इसी संदर्भ में, आयुर्वेद में उल्लेखित स्वास्थ्य एवं आरोग्य रक्षा संबंधी अचूक नियमों का पालन इस चक्रव्यूह से मुक्ति का एक उपाय हो सकता है। उत्पन्न रोगों का मूलत: प्रतिकार भी करना जितना आवश्यक है, रोगों का प्रतिरक्षण भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। आयुर्वेदोक्त मूल्यों को पुन: प्रकाश में लाना व उनके आधार पर युगानुरुप एक नवीन स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली को विकसित करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। यह नवीन प्रयास **'Presenting very old wine in a new bottle'** स्वरुप ही है किंतु ऐसी प्रक्रिया के अभाव में **AIDS** जैसे भंयकर मारक रोगो की काली छाया के नीचे **'Health for all till 2000AD'** के हमारे लक्ष्य का फलित होना असंभव ही है।

आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में यद्यपि इस संदर्भ में सतत शोधन चल रहा है, तथापि उचित रोग प्रतिकारक एवं अनुप्रतिकार विषयों का यथोचित प्रकाशन संभव नहीं हो पाया है। **Allopathic medicines** से यद्यपि तात्कालिक लाभ तथा विचित्र रोमांचकारी अनुभव अवश्य मिलते हैं, परंतु एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह चिकित्सा शैली, कालान्तर में हमारी सुरक्षा प्रणाली का विघटन करती है परिणामत: किसी न किसी रोग का शिकार होने के लिए मानव शरीर में रोगानुकूल वातावरण का सृजन होता रहता है।

आयुर्वेदानुसार रोगो के मुख्य: दो प्रकार हैं - निज व आगंतुक । इनमे से आगंतुक रोग भी कामान्तर में निज रुप में परिवर्तन हो अभिव्यक्त होते हैं । इनकी रोकथाम के लिये स्वस्थवृतोक्त नियमों का विधिवत् पालन ही एकमात्र उपाय है। आगंतुक रोगों के प्रादुर्भूतक भूत, विष भक्षण, अग्नि दग्ध, आघात आदि कारण प्रमुख हैं - जो कि प्रज्ञापराध जन्य हैं आगन्तुज रोगों की अनुपत्ति के उपायों में - प्रज्ञापराधों का त्याग, इन्द्रियों में शांतिक वशीभूत रखना, देश, काल और अध्यात्म ज्ञान का चिन्तन व सद्वृत पालन - मुख्य मार्ग कहा भी गया है - 'प्राज्ञ: प्रागेव तत् कुर्याद्धितं विद्याद्यात्मन:।' (च०सू०७) अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति को रोगोत्पत्ति से पूर्व ही ऐसे कार्य करने चाहिए जिनसे आ सके। अन्यत्र भी इस विचार की पुष्टि करते हुए कहा है -

'आप्तोपदेशप्रज्ञानं प्रतिपत्तिश्च कारणम्।
विकाराणामनुत्पत्तानुत्पन्नानां च शान्तये।। (च०सू०७)

Scanned by CamScanner

आप्त पुरुषों के उपदेशों का प्रज्ञान कर उसके अनुसार प्रतिपत्ति करना, ये दो कारण मनुष्यों को रोगों की उत्पत्ति से बचाते हैं।

सर्वप्रथम आहार के संबंध में नियमित, संतुलित व मिताहार को महत्त्व दिया गया है। यथोचित आहार सेवन ही रसादि धातुओं तथा अंततः ओज का निर्माण करने की क्षमता रखता है। यही 'ओज' शारीरिक बल का स्वरुप आयुर्वेदज्ञों को विदित है। इसके अतिरिक्त भोजन में प्रसाद बुद्धि धारण कर तन्मयता से हिताहित विवेचन पूर्वक भोजन ग्रहण करने को भी विशेष महत्त्व दिया गया है। यहीं पर सात्विक निरामिष आहार का भी महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। सामिष आहार में विजातीय तत्त्वों का बाहुल्य रहता है - जिनके कारण रोग निरोधक क्षमता में कमी होती रहती है।

धूमपान विधि का भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है - जिससे उर्ध्वजत्रुगत रोगों का प्रतिकार व इन्द्रियों का प्रसादन व बल वृद्धि होती है। शरीर का स्वाभाविक बल जितना, अधिक होगा, रोग प्रतिरोध शक्ति भी उतनी ही बलवन्ती होगी। साथ ही रोगोत्पति की शक्यता भी अल्प होगी। बल के तीन प्रकार कहे गए हैं - सहज, कालज व युक्तिकृत। सहज व कालज प्रकारों में हस्ताक्षेप करना संभव नहीं है, किंतु युक्तिपूर्वक बल वर्धन करना अवश्य संभव है। नस्य के संदर्भ में अणु तैल के गुणों के विषयो में कहा गया है कि - 'तैलमेतनिदाघ्नामिन्द्रियाणां बल प्रदम्। (च०सू०७)

दन्तपावन, जिह्वानिर्लेखन के लिए प्रयुक्त होने वाले उपादान व उनकी सूक्ष्म विधि का वर्णन, लाभ सहित उल्लेखित है। नियम पूर्वक इन क्रियाओं को करने से मसूडों का संघात दृढ़, मुख गत रोगों का नाश, दांतो व जिह्वा की स्वच्छता, भोजन में रुचि आदि लाभ मिलते हैं। तैल गण्डूष धारण - इन्कैर्बलं स्वरणतं वदनोपचयः परः। (च०स०७)

शिरोभ्यंग से लाभों में - 'न खालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च।
बलं शिर कपालानां विशेषेणासिवर्धते।।

इसी प्रकार कर्ण पूरण, अभ्यंग (तैल मर्दन) उद्धर्तन, आदि कार्यों का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया गया है। स्नान, स्वच्छ वस्त्र धारण, क्षौर कर्म आदि कर्म भी सुख आयु का वर्धन करने वाले कहे गए हैं। पैरों व मलमार्गों को पौनपुनेन शुद्ध करना - धारणा शक्ति को बढ़ाने वाला, आयु वर्धक व अलक्ष्मी व कलि का नाश करने वाला कहा है। विश्व के किसी भी शास्त्र में शारीरिक क्रियाओं के नित्य परिपालन में इतनी सतर्कता निमित उपमाओं का वर्णन उपलब्ध नहीं है। स्व स्वास्थ्य के प्रति निरंतर सजग रहने पर किन्हीं भी बाह्य कारणों के आक्रमण से उत्पन्न होने वाले रोगो का प्रतिकार शारीरिक बल से किया जा सकता है। दिनचर्या के पश्चात् ऋतुचर्या प्रतिपादन के समय हमारे समुख यह तथ्य प्रस्तुत होता है कि - प्रकृति के अनुरूप रहकर अतिरिक्त स्वास्थ्य संकर का निवारण किया जा सकता है। यथा ऋतु संचित दोषों तथा घातक पदार्थों का, शोधन द्वारा बर्हिनिष्कासन कर रोगों के लिए अनुकूल वातावरण - का अभाव उत्पन्न कर, निवृति प्राप्त की जा सकती है।

पश्चात् प्राकृत वेगों को धारण करने से होने वाले रोगों का प्रतिपादन करते हुए प्राकृत वेगों को धारण न करना व उनका बलात उदीरण करने का निषेध किया है। इसी के साथ-साथ बुद्धिमान व्यक्तियों को बुरे मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक वेगों को धारण करने का उपदेश दिया गया है। इन क्रियाओं से मनुष्यों के मन, वचन और कर्म पापरहित हो व सुखपूर्वक धर्म, अर्थ व काम को प्राप्त कर उनके फलों का उपभोग करता है।

आगंतुक व मानसिक रोगों की उत्पत्ति का मुख्य कारण प्रजापराध कहा है तथा उसके प्रतिकार हेतु -

त्यागः प्रज्ञापराधानभिन्द्रियोपशमः स्मृतिः।
देशकालात्मविज्ञानं सद्वृतस्यानुवर्तनम ।। (च०सू०७)

इन्द्रियों पर अंकुश रख कर मानसिक स्वास्थ्य का वर्धन करना चाहिए
इन्द्रियों का आयोग, अतियोग व मिथ्यायोग से रक्षण करना उपदिष्ट है।
सद्वृत पालन - तद्धयनुतिष्ठन् युगपत्संपादयत्यर्थ द्वयमारोग्यमिन्द्रियविजयं चेति।।(च०सू०७)

Scanned by CamScanner

इसका पालन करने से एक साथ आरोग्य व इन्द्रियों पर विजय, इस अर्थद्वय को मनुष्य प्राप्त कर सकता है।

परिचर्चा के विषय एड्स का प्रतिकार, स्वस्थ वृत नियम पालन द्वारा किस प्रकार संभव है - आयुर्वेद व आधुनिक दृष्टया इसका एक तुलनात्मक अवलोकन प्रस्तुत है। एड्स बहुत से स्त्रोतों को आक्रांत करने वाला रोग है। **It is a multisystemic disorder.** आज आधुनिक चिकित्सक एक ऐसी **vaccine** सुरक्षा कवच की खोज में सतत् कार्यरत हैं, जो कि सर्वसुलभ, सस्ता व कारगार हो किंतु अत्यावधि कोई सार्थक व प्रभावी परिणाम हमारे समुख उपस्थित नहीं है। ऐसे कृत्रिम प्रतिरोधक बल की निर्मिति, की प्रतीक्षा करने से पूर्व ही हमें आयुर्वेद में सन्निहित सद्वृतों के नियमों का पालन आरंभ कर, सहज तथा स्वाभाविक बल का सृजन कर, इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करना चाहिए। आयुर्वेदोक्त रसायन चिकित्सा इस का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

आधुनिकों ने एड्स प्रतिरक्षण के लिए जिन उपायों का प्रतिपादन किया है, वे सभी आयुर्वेद के सामान्य स्वास्थ्य नियम ही हैं। यथा - **Blood transfusion,** जोकि एड्स फैलाव का प्रमुख स्त्रोत है, उसका चिकित्सा दृष्टया आयुर्वेद में उल्लेख ही नहीं है। ऐसे विजातीय पदार्थो को आत्मसात करना निश्चय रुप से घातक सिद्ध हो सकता है। यद्यपि रक्त बस्ति का यतस्तत: वर्णन है, परंतु रक्तदान के संदर्भ उपलब्ध ही नहीं हैं। एड्स प्रसार का एक अन्य कारण असुरक्षित व्यवाय है। आज जहाँ अनावश्यक यौन संबंधों की भर्त्सना की जा रही है, वहीं आयुर्वेद ने मनस्वी आत्मबल संपन्न व्यक्तियों को कामुक लिप्सा पर अंकुश रखने काउपदेश युगों पूर्व दिया था। और यही ज्ञान आज के परिपेक्ष में भी उतना ही सार्थक व अनुकूल है। त्रिउपस्तम्भ रुप में ब्रह्मचर्य - आयु का मूल है। नियमित यौन संबंध आयु का व अनियमित प्रवृतियाँ मृत्यु का कारण हैं। व्यवाय संबंधी नियमों का भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है, यथा-

न रजस्वलां, नातुरां, नामेध्यां, नाशस्तां नानिष्टरूपापचारोपचारां नादक्षां नादक्षिणां
ना कामां नान्यकामां, नान्यस्त्रियं नान्ययोनिं नायोनौ..... । (च०सू०७)

ऐसी प्रवृति रखने वाले व्यक्ति निश्चित ही काल को आमंत्रित करते हैं। मानसिक संतुलन रखकर संयम पूर्वक विषयों का उपभोग करना ही उचित है। आधुनिक शास्त्र भी आज इस मत की पुष्टि कर रहा है। **Abstinence is the safest life style** एक स्त्री धारि व्रत **monogamy** भी प्रचलित हो रहो है। **Use of condoms and limiting the number of partners is also being widely propagated & preached.** काम शास्त्र की शिक्षा नवयुवकों को प्रदान करना भी उतना आवश्यक है - क्योंकि यही पीढ़ी इस रोग की अगली समिधा होगी।

एक प्रकार की भूतोत्पन्न - (भूत-आयुर्वेद में सविष कृमि के रुप में वर्णित है) इस व्याधि में आन्तरिक व बाह्य स्वच्छता का विशेष महत्त्व है। भूत, राक्षसादि तामस प्रकृति वाले गण, रात्रि में तथा अस्वच्छ तामसिक वातावरण में विशेष रुप से (अधिक बल पूर्वक) कार्यान्वित होते हैं। स्नान, धुम्रपान असंगादि द्वारा शारीरिक शौच तथा धारणीय वेगों को धारण कर, पूज्य लोगों का तिरस्कार न करके, पवित्र रह कर पूजन आदि द्वारा मानसिक शुचि रखकर - इन आगंतुज रोगो मे, देह रक्षण संभव है।

HIV से संबद्ध अनेकानेक नवीन रुप प्रतिदिन हमारे सामने आ रहे हैं। **HIV related Leuwpenia,** जिसकी चिकित्सा मात्र रसायन प्रयोग है परंतु रसायनों में भी श्रेष्ठत्तम आचार रसायन ही कहा गया है। **Acute gingivitis** भी इसी का एक प्रतिरुप है। निरंतर कषाय रस प्रधान दन्तपावन विधान का यदि सेवन किया हो तो यह **evade** किया जा सकता है। इसी प्रकार **oral hairy Levkoplakia** - जोकि एक **precancerous condition** है तथा **AIDS** में भी व्यक्त होती है - सदवृतोक्त गण्डूष, जिह्वानिलेखन आदि द्वारा रोकी जा सकती है।

इस अवलोकन द्वारा एक बात स्पष्ट होती है कि मात्र युक्ति पूर्वक सदवृत नियम पालन द्वारा **AIDS** जैसी महामारी से मुक्त होना संभव है। **Finally, the need of the hour is to strengthen the prophylactic components and motivate the masses to combat against the AIDS crisis.**

◆◆◆

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

DANGWAL MEDICINE AGENCY

D-832, Madipur Colony New Delhi-110 063
Phones:- Off. 5438908,5684544

DANGWAL MEDICOS

B-3/276 Ragubihar Nagar
New Delhi- 110027 Phone:- 5105349

Authorised Distributor:

WELCURE, I J PHARMA, SWISS AND FRENCH, MAX, WINCORE

With Best Copmliments From :

STEPEN LABORATORIES PVT. LTD.

PHARMACEUTICAL MANUFACTURES AND EXPORTERS OF QUALITY MEDICINES

20, BHALASWA, DELHI-110033 (INDIA)

With Best Compliments From :

Dinesh Kumar

BHATIA MEDICOS

CHEMISTS ● DRUGGISTS ● COSMETICS

C-229, Raghubir Nagar, (Near 842 Bus Stand) New Delhi - 110 027. Phone:- 5429986

With Best Compliments From

GEETA GRAPHICS

Specialist of : Sticker, V/Card, Latter/Heads, Wedding Cards, Office Stationary and all Type of Offset Printing Jobs

WZ-169, Kham pur, opp. West Patel Nagar, New Delhi-110008. Ph. : 5703090, 5704090

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

A CENTRE OF EXCELLENCE IN MEDICARE & SPECIALISED SERVICES

G T K HOSPITAL

A-11, Sarai Pipal Thalla, Adarsh Nagar, Delhi
Phones :. 7411984, 7142517, 7136022, 7412329

FACILITIES :

- Consultation in all the specialities & super specialities
- Indoor - wards
- Economy wards for poor patients.
- ICCU Bed side, monitors central monitoring, defibrillator, holters monitoring, TMT, colour doppler
  AC - OT.
- Well equipped lab
- Patient care by trained para medical staff.
- X-Ray
- Ultrasound.
- E C G

24 HOURS EMERGENCY SERVICES

" Patients utmost Care is Our Aim "

Scanned by CamScanner

With Best compliments From :

NARANG HOSPITAL

A-40, Mahendru Enclave, G.T. Karnal Road,
(Near Mehfil & Vijay Cinema), Delhi- 110033
Phones:- Hospital 7459484, 7427269, Resi. 7243339

Dr. G.S. Narang
Medical Suprintendent

DOCT ORS ON PANEL

❑ Surgeon:-	1. Dr. Vijay Maini	11am. to 1pm.	Daily
	2. Dr. (Mrs.) M.S.Khurana	9am. to 1pm.	Daily
❑ Physician:-	1. Dr. Sanjay Dhall	11am to 1pm.	Daily
	2. Dr. A.P.A.Sethi	9am to 11pm.	Daily
❑ Orpthopaedic Surgeon	1. Dr. Vinay Gupta	11am. to 1pm.	Daily
❑ Child specialist	1. Dr. J.P. Singh	11am to 1pm.	Daily
	2. Dr.(Mrs.) Harneet Sethi	9am. to 11pm.	Daily
	3. Dr. B.K. Sharma	6pm. to 8pm.	Daily
❑ E.N.T. Surgeon	1. Dr. P.C. Rustagi	12am. to 2pm.	Daily
❑ Gynae &Obst.	1. Dr. (Mrs.) Jyoti Chugh	11am. to 1pm.	Daily
❑ Skin V.D. Allergy	1. Dr. T.R. Bedi	4pm. to 6pm.	Mon, Fri.

FACILITIES AVAILABLE :

- ❑ Emergency- 24 Hours
- ❑ Indoor Admission Facilities
- ❑ R.M.O. - 24 Hours
- ❑ X-Ray & BCG -24 Hours
- ❑ Laboratory
- ❑ Nebulizer Therapy
- ❑ Phototherapy
- ❑ Well equipped O.T.
- ❑ Lap- choleugystectomy
- ❑ ENT Surgery By Microscope
- ❑ Ultrasound-24 Hours

Scanned by CamScanner

धन्वन्तरी जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं

स्वास्थ्य सेवा में सतत् अग्रसर

बायोसील ग्रेन्यूल्स	:	आमातिसार, रक्तातिसार, प्रवाहिका में उत्तम
विग्रान सिरप	:	स्नायुदौर्बल्य, शक्तिदायक एवं वाजीकारक
मेप्रिन आयल	:	सभी प्रकार के जोड़ो के दर्द में लाभदायक
के० आयल	:	सभी प्रकार के चर्म रोगों में लाभदायक
नोजिल नोजल ड्राप	:	शिरो रोग में लाभदायक

मैक्लीन लेबोरेट्रीज

डी० ६४/२६ बी० माधोपुर, सिगारा, वाराणसी

Scanned by CamScanner

स्वास्थ्य और आकर्षित व्यक्तित्व

एक ऐसे समाज की कल्पना कीजिए जहाँ हर व्यक्ति स्वस्थ और विशेष व्यक्तित्व का मालिक हो । सृष्टि के प्रारंभ में मानव जंगलो में रहता था, उसने प्रकृति के साथ अपना सांमजस्य बनाया हुआ था, उसे अपने स्वास्थय की कोई परवाह नही थी, उसके स्वास्थ्य की देखभाल प्रकृति खुद करती थी। परन्तु आज के मानव ने प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया है । दिन - प्रतिदिन नए - नए रोगो की उत्पति हो रही है । वातावरण जिसे मानव ने प्रदूषित कर रखा है (प्रदूषण ट्रेफिक, फैकट्रियो से हो सकता है) । यही प्रदूषित वातावरण नए - नए रोगो की उत्पति का कारण है और अस्वस्थता प्रदान करता है ।

स्वस्थ शरीर खुदा की बख्शी एक नियामत है । लेकिन इस की स्वस्थता को बनाए रखना हमारे अपने हाथो में है। स्वस्थ शरीर को बनाए रखने में आयुर्वेदिक सिद्धांत बहुत सहयोग देते है । आयुर्वेद के नियमो का पालन करने सें काफी हद तक रोगो से बचा जा सकता है । अपने को सदैव प्रकृति, कुदरत और हरियाली से जोड़े रहना चाहिए । आज के इस मशीनी युग मे जिसमे बहुत ज्यादा भाग दौड है, तरह - तरह के लोगो से संपर्क स्वभाविक है । रोजमर्रा की परेशानियाँ, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और मौसम भी स्वस्थ पर असर डालते है जितनी की शरीर की जहाँ तक हो अपने आहार - विहार में प्रकृति का सहयोग अधिक से अधिक लें । जैसे आहार में शाकाहारी तो रहे ही पर मौसम के अनुसार ही साग - सब्जियो का उपयोग करे और रहन सहन में मशीनी उपकरणो (कूलर, फ्रिज, आदि) का इस्तेमाल ना करके प्राकृतिक वातावरण मे रहे । जिसमे स्वस्थ शरीर बना रहे ।

स्वस्थ शरीर के साथ - साथ आकर्षित व्यक्तित्व भी अति आवश्यक है । स्वस्थ शरीर और आकर्षित व्यक्तित्व का अद्भुत मेल ही संपूर्ण व्यक्तित्व के लिए हर परिस्थिति में स्वभाविक मुस्कुराहट, आत्माविश्वास, माधुर्य, अभिमान, रौनक बरकरार रखना अति आवश्यक है । क्रोध मनुष्य का सबसे बडा दुश्मन है । चुंकि क्रोध करने सें किसी समस्या का हल नही निकाला जा सकता, इसलिये इस पर काबू पाने का सतत प्रयास किया जाना चाहिए । मधुर व्यवहार एक ऐसा गुण है जिससे क्रोधित होने वाला स्वयं ही विनम्र हो जाएगा ।

आज आधुनिक काल मे उपरोक्त व्यावाहारिक बातो को अपना कर आप भी अपनी एक अलग पहचान बना सकते । स्वस्थ और आकर्षक व्यक्तित्त्व के मालिक बन सकते है । सच मानिए भीड़ से हटकर चलने का यह एक सुगम तरीका है ।

डा० अनुराधा भार्गव
(स्त्री रोग विशेषज्ञ)
अपरा मेड़िकल सैन्टर
217, वंसत अर्पाटमैन्टस
वंसत विहार, दिल्ली -110057

Scanned by CamScanner

Best Compliments From :

VALLABH MEDICAL CENTRE

1402 E /13 Govind Puri, (Kalkaji) New Delhi-110019
Ph. : 6469833, 6460176

Facilities Available

1. **Genral OPD and All specialities**
2. **24 hr. Emergency and admission**
3. **Modern O.T. and Labour Room**
4. **Maternity**
5. **Charitable eye clinic**
6. **Complete Ayurvedic Unit Panch Karma Therapy**

◆◆◆

JOIN THE CIRCLE OF REASON

Biblio

APCA

ASIA-PACIFIC COMMUNICATION ASSOCIATES PVT. LTD.

Mail the coupon to :

APCA : BIBLIO
P.O. Box No. 3104
Lodhi Road P.O.
New Delhi
Pin : 110003

Yes I wish to subscribe to BIBLIO : A REVIEW OF BOOKS

- ☐ 1 YEAR SUBSCRIPTION (12 issues) - Rupees Two Hundred*
- ☐ 2 YEAR SUBSCRIPTION (12 issues) - Rupees Four Hundred*
- ☐ 3 YEAR SUBSCRIPTION (12 issues) - Rupees Five Hundred*
- ☐ 1 YEAR SUBSCRIPTION (12 issues) - Rupees Five Hundred*

Please add Rs. 10/- for cheques not drawn a Delhi bank and allow 28 days for delivery

NAME _____ OCCUPATION : _____

Address : _____

City : _____ Pin : _____

Cheque/D/M.O. No. : _____ Date : _____

Amount _____ Drawn on Bank _____

All cheques/drafts should be drawn in the name of : BIBLIO A/C APCA

*Money-back guarantee in full if you cancel your subscription within 3 months

Scanned by CamScanner

SIDHARTH DIAGNOSTIC CENTRE
2169, Shadipur, Patel Road,
West Patel Nagar,
New Delhi-110008
Phones : 5704985, 5703193

SIDHARTH X-RAY CLINIC
Sector-8, Pocket-3, MIG Flat No. : 260
Rohini, Outer Ring Road, Delhi-110085
Phones : 7272391, 7272399

FACILITIES : - *X-RAY DEPT. & E.C.G. *ULTRASOUND *ECHOCARDIOGRAPHY *COMPUTERISED PATH. LAB. *HOLTER *E.E.G. (16 CHANNEL)

For Prompt & accurate results
with Latest Technology The Only Name
is

SIDHARTH

Director
Dr. G. R. Malik
M.B.B.S.

Director Administrator
R. P. Malik

SHRI RAM RENAL & CENTRE

Managed by : Malik Enterprises

DR. B. L. KAPUR MEMORIAL HOSPITAL,
Pusa Road, New Delhi - 110005. Phone : 5726560

FACILITIES :-
****COMPUTERISED STRESS T M T *ECHOCARDIOGRAPHY *HOLTER***
****ULTRASOUND SCANNING * DIALYSIS***

Scanned by CamScanner

With Best Compliments

From :

KHETARPAL NURSING HOME

GN - 5, Sector - F&G, Shivaji Enclave, New Delhi - 110 027
Tel. : 5449935,530379

EMERGENCY 24 HOURS

KNH

ICCU, ICU	EQUIPPED WITH : 4 BEDDED, 8 CHANNEL CENTRAL MONITOR, DEFIBRILLATOR, RESPIRATOR
RESPIRATORY UNIT	COMPUTERISED SPIROMETER NEBULIZER BRONCHOSCOPY (WITH APPOINTMENT)
ALL SPECIALITIES	MEDICINE, SURGERY, ORTHOPAEDICS ENT, EYE, GYNAE & OBSTETRICS GASTROENTROLOGY, CARDIOLOGY, NEUROLOGY, UROSURGERY, (TUR) NEUROSURGERY, NEONATOLOGY.

X - RAY, ECG, EEG & LABORATORY

Dr. V. Khetarpal
M.B.B.S., M.R.S.H. (London) F. C. G. P.

Dr.(Mrs.) S. Khetarpal
M.B.B.S., M.R.S.H. (London) F. C. G. P.

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

CFL PHARMACEUTICAL LTD.

Manufacturing and Marketing products for a wide range of therapeutic applications

COMBINATION PRODUCTS

AMIBACTIN® BD *Tablet*
(Tinidazole 600mg + Diloxznide Furoate 750mg)

BILACTAM™ FORTE *Capsule*
(Ampicllin 250mg + Cloxacillin 250mg)

BILACTAM™ *Dry Syrup*
(Ampillin 125mg + Cloxacillin 250mg)/5ml

BILACTAM™ 250 *Injection*
(Ampicillin 125mg + Cloxacillin 125mg)

BILACTAM™ 500 *Inection*
(Amlicillin 250mg + Paracetamol 250mg)

BUFEX® PLUS *Tablet*
(Ibuprofen 400mg + Paracetamol 500mg)

BUFEX® KID *Tablet (Ibuprofen 100mg + Paracetamol 125mg)*

BRONCOPHYL® PLUS *Tablet*
(Salbutamol 2mg + Theophyline 100mg)

COSLYTE™ 29.16g *Powder (Sodium Chloride 0.5g Potassium Chloride 1.50g, Sodium Citrate 0.58g, Dextrose 22.0g Excipients q.s.)*

CYDINE™ Syrup
(Cyproheptadine 2mg, Peptone 25mg, Lysine 150mg)/5ml

METOPAR® *Tablet*
(Paracetamol 500mg + Metoclopramide 0.5mg)

METOPAR® *Suspension*
(Paracetamol 125mg + Metoclopramide 0.5mg)/5ml

MYCOCIN® *Capsule*
(Amoxycillin 250mg + Bromhexine 8mg)

MYCOCIN® FORTE *Capsule*
(Amoxycillin 500mg + Bromhexine 8mg)

MYCOCIN® *Dry Syrup*
(Amoxycillin 250 mg + Bromhexine 8mg)/5ml

NEGADIX® M *Tablet*
(Nalidixic Acid 300mg + Metronidazole 200mg)

NEGADIX® M *Supension*
(Nalidixic Acid 150mg + Metronidazole 100mg)/5ml

PRONUTRIN™ *Capsule (Ferrous Fumarate 300mg, Folic Acid Iron 15mg, Vitamin B, 1mg, Vitamin B_2 1mg, Vitamin B_6 0.5mg,*

PROPAMID® MPS *Tablet*
(Metoclopramide 5mg + Activated Dimethicone 125mg)

PROPAMID® MPS *Gel*
(Metoclopramide 5mg + Activated Dimethicone 125mg)/5ml

PRODUCTS WITH INTERNATIONAL COLLABORATIONS

FLUANXOL® *Tablet (Flupenthixol 0.5mg, 1mg, 3mg.)*

FULANXOL® DEPOT *Injection*
(Flupenthixol decanoate 20mg/ml and 40mg/2ml)

JECTOFER® PLUS *Injection*
(Iron-sorbitol-citric acid complex equivalent to eluivalent iron 50mg, Folic Acid 500 Mcg, Vitamin B_{12} 50mcg)/ml

HIRUDOID® Cream
(100gm of Mucopolysaccharide Polyulfate corresponding to 25000 i.u. of standard heparin)

REGLAN® Tablet *(Metoclopramide 10mg)*

REGLAN® Syrup *(Metoclopramide 5mg/ml)*

SINGLE INGREDIENT PRODUCTS

COFAMOL® *Suspension (Paracetamol 250mg/5ml)*

COSFLOX™ 250 *Tablet (Ciprofloxacin 250mg)*

COSFOLX™ 500 *Tablet (Ciprofloxacin 500mg)*

COSTINI™ 500 *Tablet (Tinidazole 500mg)*

COSTINI™ 1000 *Tablet (Tinidazole 1000mg)*

GRISACTIN® FORTE *Tablet (Griseofulvin 250mg)*

MENABOL® *Tablet (Stanozolol 2mg)*

NEGADIX® *Tablet (Nalidixic Acid 125mg)*

PERNOX™ GEL *(Benzoyl Peroxide 5%)*

PERNOX™ GEL 2.5 *(Benzoyl Peroxide 2.5%)*

SAROTENA® *Tablet (Amitriptyline 10 mg, 25mg 50mg)*

URIBEN® *Tablet (Norfloxacin 400mg)*

Marketed in India by : **CFL Pharmaceticals Ltd.** *Regent Chambers, Nariman Point, Mumbai-400 021.*

Scanned by CamScanner

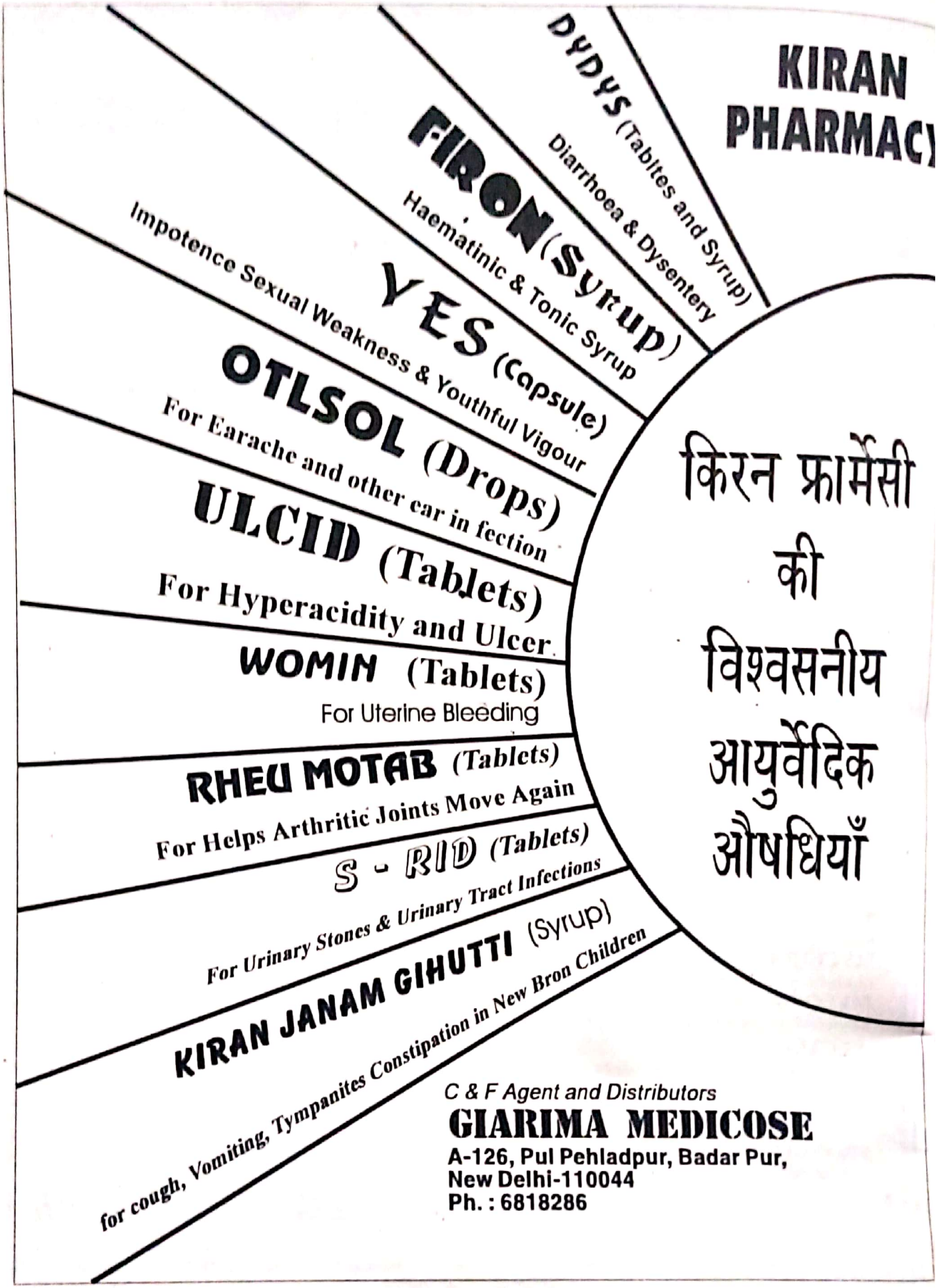

KIRAN PHARMACY

DYDYS (Tabites and Syrup)
Diarrhoea & Dysentery

FIRON (Syrup)
Haematinic & Tonic Syrup

YES (Capsule)
Impotence Sexual Weakness & Youthful Vigour

OTLSOL (Drops)
For Earache and other ear in fection

ULCID (Tablets)
For Hyperacidity and Ulcer.

WOMIN (Tablets)
For Uterine Bleeding

RHEU MOTAB (Tablets)
For Helps Arthritic Joints Move Again

S - RID (Tablets)
For Urinary Stones & Urinary Tract Infections

KIRAN JANAM GIHUTTI (Syrup)
for cough, Vomiting, Tympanites Constipation in New Bron Children

किरन फ्रार्मेसी की विश्वसनीय आयुर्वेदिक औषधियाँ

C & F Agent and Distributors
GIARIMA MEDICOSE
A-126, Pul Pehladpur, Badar Pur,
New Delhi-110044
Ph. : 6818286

Scanned by CamScanner

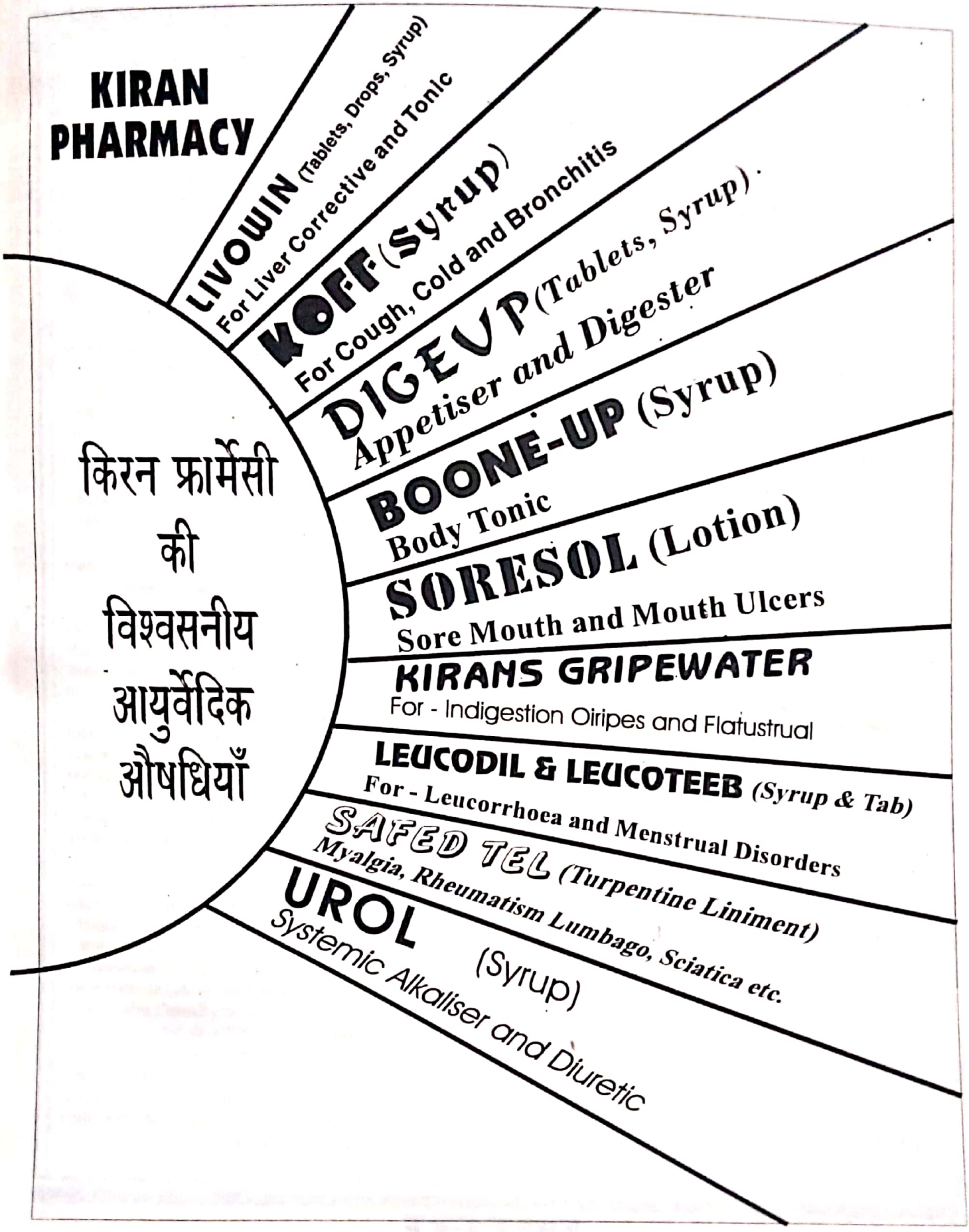

Scanned by CamScanner

The Man Who Shunned Fame

by S.P.K. Gupta

Not many people know of Yellapragada SubbaRow, but his discoveries and contributions to biochemistry and medicine keep performing a million good turns for humankind each day around the world .

Yellapragada SubbaRow was a man driven by an insatiable thirst for fame.

Mankind owes to this drive the conquest of many illnesses that have plagued us for age; the understanding of such life processes as muscular contraction, which gets the living world's work done.

And yet mankind knows him not. "You've probably never heard of Dr. Yellapragada SubbaRow," an American author told his magazine readers after SubbaRow's death [in 1948]. "Yet because he lived you may be alive and well today. Becoause he lived, you may live longer."

Four decades have since passed, four decades of continued protection to people everywhere by the drugs developed by a little-known scientist.

How in spite of such achievements can a scientist, especially a scientist who thirsted for fame, remain obscure in this age of instant communication?

SubbaRow was "a poor businessman" is the answer of a patent attorney who, after going through his laboratory records, is convinced of his genius as a chemist and is astonished he had not taken any of the step; that scientist consider routine for linking their name to their handiwork.

He was invariably in the audience when a colleague or a collaborator, pushed by him to the limelight, took the bow as each fruit of research to the public.

He never granted interviews to the press. He never made the rounds of the academics which apportion accolades among the achievers. He never went on lecture tours. He never did any these and least pretension to awards, honors and recognition, and without which one cannot achieve glory. How then was he a glory-hunter? And what was the kind of fame he was after?

SubbaRow was only 13 when he ranaway from his poverty-stricken home, persuading a cousin to accompany him, saying wealth and fame awaited them in Varanasi. He had a formula for making million by selling bananas to pilgrims who flock to the holy city from all over India.

Intercepted and brought back by men sent in pursuit by his mother and pushed by her determinedly to scholastic achievement, he did well in mathematical studies and could well have won distinctions as a wizard in the mathematics.

But he drifted in another direction. It seemed to him that politics, medicine, high finance and even humanitarianism as avenues to fame were all maya, mere illusion. Even good work were to be spurned as they brought rewards in kind. He would join the Ramakrishan Mission and become a sanyasi.

Since he could not be admitted into the monastic order without the permission of his mother who was on worldly successes for him, the mission persuaded him to enter medical college so that could serve in its clinics as a doctor.

SubbaRow regarded the step as a means to enter Ramakishna Mission by the backdoor, His mother was puzzled by his apparently whimsical to medicine but was reassured when he told her; "I must win a name in the world. Then only would life be worthwhile. If it comes to that, one must even be prepared to do something evil and win fame."

As if to prove he could be cold-blooded when it came to removing obstacles to his goal, he married a rich girl [Seshagirl] to finance his medical education although he knew marriage and family life were not meant for him.

His medical studies the soundness of the basic tenets of his other worldly philosophy and he decided his life's work lay in unraveling the mysteries not of man's relationship to God but of man's responsibility to his fellow men.

The new goal would have a permitted him to win fame by devoting his life to the treatment of the sick without expectations of financial reward, but his years in medical college convinced him that modern medicine was then powerless against many diseases.

The above article is the first chapter of the book, *In Quest of Panacea*, written by S.P.K. Gupta in collaboration with Dr. Edger L. Milford and published by Evelyn Publishers, New Delhi

Scanned by CamScanner

He tool up a position therefore in the Madras Ayurvedic College in the hope that he could wrest potent drugs from Ayurveda which had rescued him from the jaws of death a few years earlier when modern medical has failed him. He quickly rose to be vice-principal of the college and within his grasp was, it seemed, the principalship and glory that would go with it as a new synthesizer of the modern and ancient arts of healing the sick.

SubbaRow was not fooled however, nor did he wish to fool the world. The Ayurvedic collage was not the place for any sustained medical research.

So with a determination that bordered on the unscrupulous, he planned once again his escape from home. This time, he succeeded. He rallied sponsors for his trip to the United States by leading them to believe he had secured an opportunity to win a place in Western medicine for the theory and practice of Ayurveda. He enrolled himself in an American college for a course in Western medical on the strength of a scholarship tenable only for nonmedical studies. He left with his wife's consent after promising an early return, a promise he could not fulfill.

He did his duty by the professor who took him into the Harvard School of Tropical Medicine by earning a diploma at the price of a year of extreme personal privation. The diploma was of no use to him as he never intended to use it for hanging out a doctor's shingle. But he used his foothold in Harvard to get enrolled in the"nonmedical" biochemistry course of the medical school by the time the first instalment of his Indian scholarship was paid of the administering trust: By tarrying, the trustees saved him from violating the conditions of the scholarship.

He made a spectacular start in biochemical studies which he took up in the summer of 1924. Before the year was out, the American Society of the of Biological Chemists set its seal of approval on a valuable laboratory tool he devised which is used to this date by biochemists the world over—"a rapid colorimetric method" for estimation of phosphous in body fluids and tissues.

However, this did not bring instant fame to the biochemical prodigy. SubbaRow had worked out the method under the supervision of Dr. Cyrus Fiske and courtesy in research of required that it bore the names of both men. Moreover, association with a professor well established in the field would make the method more readily acceptable.

So it was as "the Fiske-SubbaRow Method" that it was

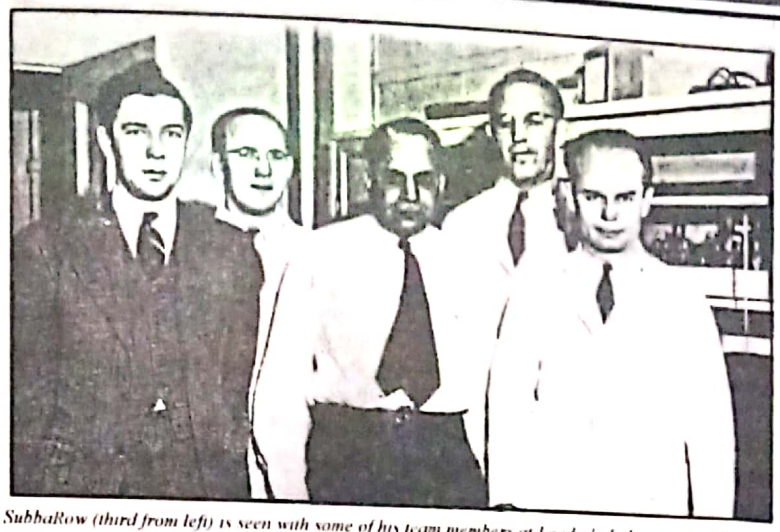

SubbaRow (third from left) is seen with some of his team members at Lederle Laboratories who isolated folic acid. They are, from left, J H. Mowet, R. B. Angier, J. Semb and J. H. Boothe

presented in the biochemistry textbooks that it came out in 1925. He wrote home about all this but strictly forbade his people from talking of it to anybody. "Publicity is bad," SubbaRow enjoined on his father-in-law. He sent reprint for the scholarship board but insisted: "Please do not advertise."

A follow-up study on the phosphorus method appeared to give him and Fiske a glimpse into the fate of sugar in blood after the administration of insulin. SubbaRow thought the stars had chosen them to solve a problem that had baffled many Nobel prize-winning biochemists including Banting the discoverer of insulin therapy for diabetes. It was a mirage, but the trail nevertheless led to "the greatest discovery" in 20 years of a worldwide study of phosphorus metabolism —a discovery that showed the Nobel Committee erred in awarding the 1922 prize in medicine contraction in terms of the conversion of glycogen to lactic acid.

Phosphocreatine and adenosine triphosphate (ATP) discovered by SubbaRow in Fiske's laboratory proved to be the sources of muscular energy which make possible all physical activities of living beings.

SubbaRow wrote home: "I have risen up in fame and my name is know in every biochemistry department in the world." But only the latter half of the statement was true. The slowness of the biochemical orthodoxy in accepting new ideas, the natural reluctance of the prestigious Nobel Committee to admit it had awarded a prize rather prematurely and controversies over publication priorities cheated Fiske and SubbaRow of full credit for life itself.

There was general recognition among Harvard Medical School faculty and staff that to all these successive

Scanned by CamScanner

discoveries in Fiske's laboratory SubbaRow had made increasingly independent contributions, that the discoveries were the result mostly of the younger collaborator's work.

But SubbaRow unhesitatingly renounced personal credit when Fiske's promotion as head of the department of biochemenstry hung in the balance in 1935. He told Harvard authorities that his own contribution were mostly technical and that the "brains behind the work as well as the finer side of the technique" were all entirely Fiske's.

SubbaRow had by then a new passion and discoveries in muscle chemistry were for him entirely a matter of past record. He has just achieved a breakthrough in the concentration of the substance in liver that helped pernicious anaemia patients. He was entirely preoccupied with the isolation of this cure for a deficiency related to tropical sprue that had afflicted SubbaRow and his brothers and taken the life of one.

The sacrifice however broke a ground rule any aspirant for fame has necessarily to observe: Consolidate reputation gained from one achievement before taking on a new challenge.

Worse, it severely handicapped SubbaRow's hunt for vitamins in liver Harvard authorities saw no reason to promote from his own admission, had been no more than a pair of extra hands for Fiske. Denied qualified assistants, laboratory facilities and budgets that would have gone with a faculty appointment that was his due, SubbaRow had to depend on outside help over which he had but a modicum of control for manpower and material assistance, analytical work and clinical collaboration. His better endowed rivals won glory as discoverers of the vitamin properties of nicotinic acid and pantothenic of vitamin B_{12} eluded him.

SubbaRow again Left home, Left Harvard which had not been a bounteous mother but a foster mother (alma mater). It trained and sheltered him for over a decade but failed to appreciate him and provide a place for his life's work.

"When I started to collect photographs of men who have made real contributions to medical chemistry, SubbaRow was one of my first candidates."

SubbaRow left for Lederle laboratories at pearl River, New York State, which wanted him to direct a new research facility it would build for him. Lederle had a profitable business with liver preparations based on technical know-how acquired from him in return for liver supplies and large-scale isolation facilities on weekends. Lederle had turned to him in an effort to secure a place in the new failed of vitamins and antibiotics which were rendering its mainline of vaccines, sera and tonics obsolete. This was his change to provide modern medicine with an arsenal of potent drugs to fight disease.

In his new laboratories nestled in picturesque Rockland County, SubbaRow gathered a ground of young men fresh out of university graduate and technicians. He was the maestro, orchestrating the brilliant new ideas of the young in the most creative in veterans by assigning them tasks in which they had no previous experience.

SubbaRow was the MD for the PhDs, motivating them with his dedication to the task of alleviating the ailments of humanity. He was the PhD who got the MDs to help him and his boys fashion chemicals to match the microbes.

He was a man of all sciences, a chemist among chemists, a parasitologist among parasitologists and a clinician among clinicians. He would go from laboratory to laboratory, pacing up and down with doctors and project leaders who had run into problems or were stuck on something and say, "Now you should do this and this and this." And, amazingly enough, the works would go forward.

After an initial incubation period of five years, SubbaRow and his team of young scientists and "amateur" experts, in a fabulous three-year period of great discoveries, presented to the medical world a vitamin that avenged the death of SubbaRow's brother from tropical sprue, an anti-filarial that fought an old scourge of India and other optical up a hopeful new life of attack on cancer, and an antibiotic that seemed like a panacea for many bacterial and some viral infections.

Here was the opportunity for the old aspirant for fame. He was in the Haravad tradition "the brain" and could perhaps have claimed that be boy he had guided and inspired were just so many "hands." But that would have been affair to them as it would have been so unworhtey of himself.

The victories of science are rarely won single-handed," SubbaRow insisted. "No one man should get the credit."

SubbaRow perhaps had the greatest sentimental attachment to folic acid. He had led successive groups through isolation of this vitamin from liver, exploitation of a microbial broth which was a richer source and final chemical synthesis. And it turned out to be the cure for tropical sprue that had so nearly taken his life in Madras. But when the boys discussed the authorship of the paper announcing folic acid synthesis, SubbaRow was busy coordinat-

Scanned by CamScanner

ing extensive clinical trials in far-flung places to prove, in the face of prejudice in the medical establishment, its value in nutritional anemias. They decided to include him in the alphabetical list of the 16 workers who had contributed to the synthesis and went to him for his signature. SubbaRow regarded it a compliment which he returned by choosing the university professor under whom many of his folic acid scientists had trained to preside at the conference where the vitamin was formally presented to the medical world.

Such submersion of individual credit for contributions made to collective team achievements appears only fair. For there is no single phase of modern medical research that can be considered the key to ultimate success. There is no single criterion for awarding the accolade. A promising drug has to cross many hurdles: Initial production of the chemical either in the test tube or in the fermentation broth of a mold, screening in animals first for activity and then for safety, large-scale production and, finally, clinical trial. But mankind is not ready yet for the cult of the collective: It sees no glamour in a team and looks for symbols and most often the choice falls on the leader of the team.

SubbaRow, looking all the time for new drugs to conquer disease, does not seem to have paused to realize that he could be the symbol of achievements by the research teams he was directing in such masterly fashion, organizing them motivating them and helping them cross hurdles. But he did regret having gone outside his team to seek a symbolic person for the folic acid achievement. Coy Waller, the youngest member of his folic team, had in his opinion made the most outstanding contribution. So when "Waller's shotgun synthesis" was adapted to produce a folic acid analogue that made a new approach to cancer therapy possible, SubbaRow got young Waller to present it to the medical world and receive the acclaim of his research teams was now so unbounded that he began to push into the limelight those whose dedication most nearly matched his own:

- Redginal Hewitt noticed the anti-filarial activity of a chemical among the scores sent to him for routine screening in rats and provided thereby the lead for synthesis of Hetrazan.
- Sydney Farber, while treating leukemia patients, switched from folic acid conjugates to folic acid antagonists and blazed the trail since followed by cancer fighters all over the world.
- Benjamin Duggar screened thousands of molds and supplied SubbaRow with hundreds of microb killers one of which yielded Aureomycin, the world's first tetracycline antibiotic.

While Duggar as "discoverer" was perseting Aureoycin at the New York Academy of Sciences, SubbaRow was in the back row talking animatedly with as assistant about plans for the cancer research laboratory that his company was to build for him at a nearby town.

SubbaRow died two weeks later in New York in 1948, a stranger to Lady Fame whom he had presented his suit. His last expresses wish to colleagues was: "If God will spear me another couple of years, maybe we can cure another disease."

The Karolinska Institute in Stockholm, which awards the Nobel prize in physiology and medicine, used to have a portrait of SubbaRow, and SubbaRow's colleagues who saw ever considered for the Nobel prize which so fascinated him during his early years at Harvard.

J. Erik Jerpes, professor emeritus of medical chemistry at the Institute and SubbaRow's contemporary as a research scientist in the vitamine and hormone filed, is most discred in discussing the question but says: "For Dr. SubbaRow I had a real admiration.... When I started to collect photographs of men who have made real contiributions to medical chemistry SubbaRow was one of my first candidate.

The real point is that SubbaRow never presented himself as a candidate for any honour.

SubbaRow is not famous, but his gift to biochemistry and medicine keep performing a million good turns for mankind each day around the world. ●●●

About the Author: *S.P.K. Gupta, editor, foreign news operation, Press Trust of India, is also the author of Apostle John and Gandhi.*

Scanned by CamScanner

AN INTEGRATED THERAPEUTIC AND GENRAL MANAGEMENT PLAN FOR ASYMPTOMATIC HIV CARRIERS*

V. P. Singh,
Central Council for Research in Homeopathy,
Goverment of India, New Delhi 110 058, India

Introducing

The twin pandemics of Human Immunodeficiency Virus (HIV) infection and Acquired Immunodeficiency Syndrome (AIDS) have come a long way since frist cases of a strange form of immunodeficiency, now termed as Acquired Immunodeficiency Syndrome (AIDS), were reported in the USA in 1981. World Health Organization (WHO) estimates that as of mid - 1995, 18.5 million children have already been infected with HIV worldwide since the beginning of the epidemic. Where as new HIV infection in USA and Europe are nearing plateau and have come down in Africa, the progressive increase in new HIV in fection in South and South-east Asia has just begun. WHO estimates that 3.5 million people in Asia, India and Thailand are among the worst affected countries, may have already been infected with HIV . A majority of these, at present, are clinically silent and mostly unaware of their immune status but, potentially infectious. It is this pool of infected individuals that contributed to the rapid growth of HIV epidemicss in South-east Asian countries. This makes it to be the most important target group for effective containment of the HIV epidemics in this region.

Asymptomatic HIV carriers, not only need motivation to protect others but would also require medication for a host of incidental clinical manifestations in the coming years. At a conservative estimate conventional anti-retroviral treatment starting at a particular point of time during the infection, costs about 3000.00US $ per patient per year. If treatment for opportunistic infection(s) / malignancy (ies) is also taken into consideration, the cost may be as high as 15000 to 30000 US $ per patient per year. Neither the affected individuals have this kind of money nor the Goverments, particularly in developing countries, have resources to provide treatment to all at State's expense. Also, these drugs are not readily avalable. For example, only Zidovir (AZT) is available in India for the last one and half year. One year's requirement per patient costs about 1500 US $ and is available only on the authorized prescriptions. On a medical practitioners prescription it may cost as much as 4500 US $ per year per patient. Dideoxyinosine or Didanosine (ddI) and Dideoxycitidine or Zalcitabine (ddC) are not available in India. If needed, these drugs are to be imported. No developing country, including India can possibly afford the exhorbitant cost of treatment of HIV disease. At the same time one can not be a silent spectator.

Formulation and development of an effective intervention strategy, which is cost-effective and readily available, for the management of asymptomatic HIV carriers, therefore, assumes paramount importance. The objective being to restore qualitatively the immune system of the host and encourage the human organism to combat the HIV on its own. Recent reports about long-term survivors have kindled hope in the otherwise gloomy situation.

Scanned by CamScanner

A hypthetical model of management plan for asymptomatic HIV carriers encompassing psychological counselling; homoeopathic medicines; yogic exercise; sun gazing; pranayama (breathing exercise); meditation and addition of 1/2 ounce of Honey and 25-50 g. of sprouted Phalaris mungo linn (Moong) (both are naturally rich in vitamins, enzymes and minerals) to the usual diet of the individual, was evolved. The plan is being field tested since 1990-91, on a small number of asymptomatic HIV carriers to ascertain whether it can (i) altering the natural course of HIV infection and / or (ii) delay development of various opportunistic infections related to HIV disease.

Subjects and Method

Nine (8 male and 1 female) individuals in the age-group of 21-30 years whose HIV positive status was confirmed by Western blot assay, were enrolled in the study between 1989 and 1991 (Table- 1 & 2). Seven of these patients were single and a married couple. All had contracted HIV through sexual route.

Table - 1

AGE AND SEX DISTRIBUTION

Age-Group	Totel	Male	Female
1-10	-	-	--
11-20	--	-	-
21-30	9	8	1
31-40	-	-	-
Total		9	9 1

Table-2

PROBABLE TIME OF EXPOSURE TO HIV

S. No.	Year
1.	1989
2.	1990
3.	1990
4.	1989
5.	1989

Scanned by CamScanner

All were asymptomatic at the time of entry into study. They were provided counseling and their informed consent was obtained in a pre-designed proforma. Individual subject was told to practice a set of 6 simple yogic exercises; taught the way to do breathing exercise and motivated to add 1/2 ounce of Honey and 30-50 g. of sprouted moong in thier usual daily diet. All 9 were prescribed CRH 123 (Amyle Nitrosum), one dose / day and CHR-321 (Azadirachta Indica), three doses a day for the first three months. Later CHR-321 twice a day. The medicine were prescribed in every month. On their follow-up visits they were subjected to detailed interrogation and physical examination.

Results

Four of the subjects were highly irregular in reporting and poor in compliance of instructions. Three of these were lost to follow-up and progressed to AIDS related complex (ARC) after 8 months of treatment. He voluntarily withdrew from the study. Five patients are continuing asymptomatic status. Solitary female subject (her husband is also enrolled in the study) became very anxious and developed a bout of diarrhoea, 4-5 watery stools a day with a mild degree of dehydration and lost about 2 kilograms of body weight. During this period she also experienced anxiety about her future and had diminished and disturbed sleep for 4 days. She regained the lost body weight in about a week's time. She now weighs 45 kg. 1 kg. more than her baseline body weight. Other 4 patients have gained 1-2 kg weight over their weight at entry *(Table - 3)*.

Another patient had his bilateral inguinal lymph glands swollen with tenderness. On examintion, cervical and axillary lymph glands were not palpable. The same patient experienced frequent transitory bouts of depression during the first six months in the study. He was provided psychological counselling only and not provided any symptomatic treatment for depression. He was provided extensive psychological counseling only. He overcame and does not? He had infrequent diarrhoeal episodes (3 in an year), 2-3 stool a day which responded to minor changes in diet and Mercurius Solubilis, a homoeopathic medicine, in 200 potency, 3 doses a day for 3-4 days. It is now that he had any diasehoea and is currently manifestation, related or unrelated to HIV infection during the study.

Scanned by CamScanner

Table - 3

BODY WEIGHT
(in Kilograms)

S. No.	Pre Entry	Current
1.	67	69
2.	44	45
3.	61	62
4.	57	58
5.	64	66

Table - 4

CD4 / CDS + T CELL COUNTS

S. No.	Pre Entry	During Study
1.	-	502 / 800
2.	-	530 / 912
3.	-	760 / 1102
4.	-	570 / 982
5.	-	502 / 994

An incidental observation during the study concerns a subject, a medical doctor and a con firmed *hypoglycaemic* at entry into the study. After about one year of treatment he stopped experiencing the symptoms of hypoglycaemia i.e. trembling. It stands at 90-110 mg. (random). He now observes a weekly fast on Mondays without experiencing any symptoms he used to experience earlier.

CD4 / CD8 +. T cell count obtained during the course of study (Table - 4) were between 502 / 800 to 760 / 1102 per micro litre. All 5 patients continue to be reactive to ELISA for HIV-1.

Discussion

Isotonic physical exercise (Yogic) and nutritive dietary supplements have reported to have immune stimulatory effect. Pranayama (breathing exercise) and meditation vastly practiced in the oriental for centuries, have been observed to remove bad effect of physical and emotional stress and

Scanned by CamScanner

improve quality of life. Hence, a combination of physical exercise, natural dietary supplements, pranayama and meditation is supposed to contribute to mental and physical well being, both in health and disease. A feeling of well-being assist the immune efficiency.

Various reports suggest that the central nervous system (CNS) regulates the function of immune system, Conversely, the immune system modulates the functioning of the brain. Emotion, depending upon its nature, depress or stimulate the immune system to a varying degree. It needs no emphasis that positive attitude life conditions the brain and thereby modulates the functioning of CNS. Hence a positive counselling is indispensable where initial reaction of the human organism is that of bewilderment and helpessness as is the case with HIV infection. An individual with a positive attitude is able to face the problem, both extrinsic, their physicians and friends help in developing a positive attitude. This has been amply confirmed during the ongoing study.

Homeopathy has evolved around the premise that large doses kill whereas minute doses have stimulatory effect on the organism' and that homeopathic remedies stimulate the vital force which in turn removes the disease and restores the health. They are divoid of crude drug substance and, therfore, do not produce any undesirable toxic effects.

Homeopathic medicines Amyleum Nitrosum or Amlya Nitrate was though to be the agent that causes AIDS before the discovery of HIV in 1983. The belief was supported by the fact that Amlya Nitrate, an immune suppressor, was frequently used for kicks, by the homosexual community in U.S.A When used in homeopthic potency, on the basis of pathological similarity, it is expected to promote immune efficiency in immune deficient individual. Azadirachta Indica is highly revered for its therapeutic utility in India. It is used for many purposes viz. moth proofing of clothes, as mosquito and insect repellent, mouth cleaner, its decoction as an antiseptic lotion, as blood purifier etc. Recent reports suggest its utility as contraceptive and in protecting crops from insects. In-vitro study with its extract, particularly that made from the bark has shown to inhibit HIV replication very efficiently.

CD4 and CD8 + T cell count obtained the course of study (Table-4), although not comparable, yet indicate that measure(s) adopted in the managment of this small cohort of patients may have a stabilizing effect on immune system CD4 + cell count of 502 - 760 / u L even after 6-7 years of infection seems significant when considered in context of the observation that the time between initial infection and development of AIDS in India is 3-5 years.

Scanned by CamScanner

Azadirachta Indica, the basic drug has hypoglycaemic properties. Its efficacy in correcting hypoglycaemia confirm the homeopathic that a drug is capable of producing in an healthy indi vidual. However, this does not undermine the role of physical exercise and dietary supplements, praticularly Honey, which may also have, singulary or collectively, contributed to the change.

The total cost on dietary supplements and homeopthic medicines during the trail, was equivalent of 30-40 US $ per year. The time expended on the exercise was 20-25 minutes at dawn and 20-25 minutes at dusk.

Conclusion

The results, although not conclusive not conclusive, do indicate possibilty of utilization, of a judicious mix of psychological counselling yogic and breathing exercises, sun gazing, meditation, natural dietary supplements and homeopathic medicines for the management of asymptomatic HIV. A multicentric study to establish conclusively the efficacy of the integrated management plan, is highly desirable.

**Paper presented at 4th International Conference of Community Health Assocition of Southern Africa, held on 21-24 July, 1996 at Sun City, South Africa.*

Scanned by CamScanner

First Time in Whole of Palam Area

Cee Dee Diagnostics

A Diagnostic Centre
With Total Commitment to Quality

Equipped with :

- ❐ 300 mA X-Ray Machine with S.F.D. For all Routine and Special X-Rays
- ❐ Ultrasound
- ❐ Auto analyzer for all Biochemistries & Drug assays
- ❐ Clinical Lab - Microbiology, Histopathology, Haematology etc.
- ❐ E.C.G. Machine of Schiller Switzerland (Self Reporting)

At Your Service

Cee Dee Diagnostics

RZ-88J, Main Road, Palam Colony, Tel : 5534146

Director	:	**Dr. Sanjeev K. Dhaumya,** M.B.B.S.
Radiologist	:	**Dr. P. Sethi, M.D.**
Pathologist	:	**Dr. M. Sarin, M.D.**

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

SHIVAM DIAGNOSTIC CENTRE

B - 1 / 143, New Moti Nagar, New Delhi - 110 015
Phone : 5449663 Cellular Phone No. 9810044872

FACILITIES AVAILABLE :-

- FULLY COMPUTERISED LAB WITH AUTOMATIC ANALIZER
- ALL SPECIAL LAB TESTS (T3, T4, TSH, ELISA, DRUG ASSAY ETC.)
- X-RAY :- ALL SPECIAL X-RAY
  (HSG, OCG, BARIUM STUDIES, MAMMOGRAPHY)
- ECG
- ULTRA SOUND
- ECHO - CARDIOGRAPHY WITH COLOR DOPPLER

Home Facilities X-Ray & ECG Bed side available

Timing :- Monday - Saturday 8 am. To 8 pm.
Sunday 8am To 1-30 pm.

Note :- We have Collection Centres in Different Areas Also.

Scanned by CamScanner

With Best Compliment From :

GOD GIFT LABORATORIES

41, Rajiv Nagar Faridabad - 2. Phone: 8-260985

OUR MOST EFFECTIVE PRODUCTS ARE

- Hepatofit Syrup (Our Commitment For Liver Cure)
- Banariforte Caps (For Male Fertility Impotency)
- Top tones Syrup (Complete Tonic Free From Alcohal)
- G-Cid Syrup (For Hyperacidty & Gastritis)
- Diges tovin Syrup (For Optimum Digestion)
- G G Forte Caps (Tried & Tested For Primary and Secondary Amenorrhoea)
- Tip Topp Caps (Indian Ginseng Rejuvenator & Aphrodisiac Tonic)
- Kofsaf Syrup (For Rough & Tough Cough)
- Gogila Oil (Herbal Hair Tonic For Growth)

Distributors :- **BALSAJAL DRUGS B-25, Mangla Puri, Palam Colony New Delhi. Ph. :- 5620431**

PALAM NURSING HOME

CHILDREN MATERINITY & GENETIC CENTRE

Sadh Nagar, Near Post Office, Palam Colony New Delhi- 110 045

Facilities:-

- **O.P.D.**
- **INDOOR ADMISSION**
- **WELL EQUIPPED OPERATION THEATRE**
- **ALL TYPES OF OPERATIONS**
- **AMBULANCE**
- **ROUTINE INVESTIGATIONS**
- **INFERTILITY CLINIC**
- **GENETIC COUNSELLING**
- **TUBERCULOSIS CLINIC**
- **M.T.P.**
- **ABORTION**
- **ULTRA SOUND**

Dr. Jitendra Verma
M.B.B.S. D.T.C.D. D.C.H.
Child & Chest Specialist

Dr. (Mrs.) Poonam Verma
M.B.B.S. M.D.M.A.
OBSTETRICIAN & GYNAECOLOGIST

Phones : (O) 5525963
5552169
(R) 5582169

Scanned by CamScanner

TRIDOSH THEORY IN AYURVEDA

A good fight is going on between the microbe and the scientist. The microbe is strengthening its power of day and the scientist is briuning out one after another the great antibiotic to defect the former. This is an endless war. At the same time we also have to fight against a good number of complications which arise with the use of these antibiotics.

"Microbe is nothing but soil is everything" were the words said by a renowned scientist and a pioneer of bacteriology —'Louis Pasture' from his death bed.

Undoubtedly the germ theory (an microbiology) play an important role in prevailing the Physiological diseases but microbe is not the sole factor which is responsible for the growth of an infectious disease. There are other important factors also which need much more attention So that our society should become free from these infectious disease. These factors are well explained by the Indian system of medicine i.e. Ayurveda, through its great principal of Tridosh Theory.

There is a great number of other diseases which are not covered by the grem theory. These include the diseases of the locomotive system as well as the diseases produced due to metabolic factors causing such disease like diabetes, peptic ulcers, skin problems heart troubles, Asthmatic problems and the arthiritic troubles, camcerous diseases.

In infectious disease the other factors which need attention are nutrition, hygienic conditions, environmental (Circumstances) immunity, resistance, chronic carriers etc. Now it is the need of the hour that a new approach should be explored to find out the link between the disease and the disease producing phenomenon. A great stress has been given to the disease producing phenomenon in Ayurveda. According to this a person is said to be healthy if his basic three humours i.e. vata, pitta & kapha are in the state of equilibrium or their definite and specified proportions. All the heat energies agnis, dhatus i.e. different tissues and system body functions should be normal in the healthy beings. Along with the same his mental equilibrium should not be distorted. His mind soul and senses should always be in a happy state i.e. free from all worries. So we can say tridosh theory is the basic platform of Ayurvedic principles.

The three doshes vata, pitta, kapha are considerd the derivatives of our three basic requirements i.e. air heat - energy and water respectively. In healthy beings their equlibrium is maintained. At the same time Ayurveda is not reluctant to accept the germ theory even from the ancient times microbes are considered for the cousation of a disease. These are known as krimis, yatadhan, alaganda, avaska, shulan etc. They were also aware of the fact that Sun-rays are the most powerful weapon for any kind of germ.

Dr. Jagjit Singh
Member C.C.I.M.
Chandigarh Ayurvedic Center
2003/9 Sector 32-C City

Scanned by CamScanner

"PREVENTIVE ASPECTS OF PANCHKARMA"

Dr. S.R. Vats
DAYM (BHU)
Principal
S.K. Govt. Ay. College, KKR
Dean, K.U.K., Member C.C.I.M.

Dr. Vidya Vrat Chikara
M.D. in Kaya Chukitsa
Reader in Kaya Chikitsa
S.K. Govt. Ay. College, KKR

Ayurvedic Medical Science is the Science of life which has main two objects one is to protect the health of healthy person and second to curement of Disease. Panch Karma is a integral Part of Ayurvedic treatment, which may be benefical to achieve both the objects of Ayurveda. The resented paper is preventive aspects of Panch Karma, which is very much useful to achieve the first object to protect the health of healthy person as well as prevention with Seasonal Diseases.

Ayurvedic Treatment has been divided in main two parts (i) SHODHAN CHIKITSA (ii) SHAMAN CHIKITSA. Panch Karma is mainly related to Shodhan Chikitsa, It is completed by 5 methods (i) Vaman (ii) Virechana (iii) Niruh Vasti (iv) Anuvasan Vasti (v) Nashya. Here five methods of treatment may do the prevention from disease. "The prevention is better then cure" is the recognised universally. It is better to take preventive measure against diseases than to make all sorts of attempts for curing them. The very aim of the Ayurvedic System of Medicine is also to protect the body against diseases by the use of Panch Karma. Many of the well-known modern Medicines, while being useful in some particular disease give birth to various other new ailments in the form of their adverse after effects or harmful reactions, Contrary to this, the Panch Karma of Ayurvedic system of Medicine are simultaneously beneficial also in prevention of disease as well as eradication of diseases also of their instantaneous usefulness or incidential in his Text book Siddisthananm Ch. I Shalok No. 17 that

SROTOVISHVDDHINDRIYASANPRASADO LAGHUTVAMURJOAGNIRNAMAYTAVAM ।
PRAPTISHCH VATPITTAKAKHANILA SAMAYAGVIRIKTSYA BHAWAT KARMEN ॥
In the person purged well, cleansing of channels, clarity of senses, lightness, energy, proper digestion, freedom from disorders are observed as well as expulsion of faces, pitta, kapha and vata in this order.

After using the snehan the unction destroys vata, softens body and removes retention of excrements, after the emesis (Vaman) the person is regarded as vanited properly whose kapha, pitta and vata are expelled in this order also . Lightness is observed after using of Enema (Vasti) person feels clarity of channels. He feels good sleep, lightness, strength and elimination of urges. Above five methods clarily the major minor channels of body, and there is no chance of production of AAM Dhosh which is the root cause of origination of disease. There will be no chance of formation of Dhosh-Dushya-Sammur Chhana after using the methods of Panch Karma. If there is no formation of Dhosh-Dushya Samm urchhna there will be no chance of origination of seasonal diseases by using the method of Panch Karma.

Panch Karma deals with means of keeping away the disease old age and achieving longevity and also increasing the resistance power against the all sort of diseases.

Scanned by CamScanner

With
Best
Compliments
From :

Swadesh Sharma Sunil Sharma

GRAVITY PHARMACEUTICAL

(Unison Pharmaceutical)

C/o Dr. P.K. Sharma

N. 684, Mangol puri, New Delhi-110 085 Ph. : (R) 7042340

With Best Compliments From :

VICKY AGENCY

Stockist for :

ARBRO, CYPER, PRAM, MEX, MERIND D-PHARMA

All Generic Medicine Products

&

All Surgical Products

35/515 New Moti Nagar, New Delhi-110015. Ph. : 5103898

Scanned by CamScanner

Dr. A. K. Gupta

DHMS (Dli), MIHL (Geneva)

MGN (Med)PK,PG(London)

HOMEOPTHIC CONSULTANT

J-158, Rajouri Garden,

Ph.: 5101989, 7419809

Pager No. : 9632--129683

PROSTATE RELATED DISORDERS

If the prostate gland were not situated as it is, the occurs so frequently in later years might go completely unnoticed. The gland is located around the mouth of the male bladder. When it swells it cuts off the urethra (the tube leading from the bladder) and, since urine can not flow freely as before, complications arise.

The prostate is an auxillary sex gland, concerned with manufacturing of the fluid in which sperm cells float. It measures normally 4x3x2 cms in reversed conical shape and weight around 8 gms. It has been seen that the people who have led a very active sexual life or indulged excessively in sex in earlier age are much likely to suffer from Prostate disorders or Malignancy of the Prostate & the prostate gland (Benign Hypertrophy of Prostate) and Carcinoma of Prostate or Malignancy of the Prostate at later age i.e. around 50 years or so. Interestingly there are few people who at the age of over 70 years also never suffer from the ailments of gland.

Commonly a patient consults a doctor for his problem in urination as an early sign of BHP. Patients having the Frequency, Urgency, Hesistancy and Dribbling of urine with unsatisfactory feeling are the subjects suffering from Prostate disorders. Sometimes prostate discharge after the urination also is complained by few patients suffering from prostate with itching and burning sensation and very seldom blood is passed along with the semen Patient has the feeling of discomfort and never done feeling with heaviness in pubic region with Oliguria or Anuria in an acute or extreme case. The freqent urination and discomfort is experienced more during the night time of sleep which becomes most troublesome for the patient is unable to sleep on this account. The damp and cold weather precipitates and aggravates the complaints of the patient suffering from Prostate disorders.

The Ultrasound can confirm the diagnosis made on clinical observation of these symptoms. Ultrasound can give the exact size and the weight of the enlarged prostate giving a clear picture to treat the case either conservatively or surgical procedure can be adopted accordingly which removes the enlarged organ either by the method of T.U.R. or conventional Prostatectomy which is considered to be the only treatment. Surgical intervention has been found of real use in the cases of Carcinoma of Prostate. Whereas Homoeopathy has a great number of successful cases of BHP etc. where patients have happily free from the annoying symptoms and with no complications whatsoever whereas they were advised to undergo surgery immediately.

Following are the few very effective remedies in the cases of Prostate related disorders:

Thuja ; Sabal Serrulata; Ferr Pic; Lyco; Nux Vom; Conuim; Ocimum Can; Carb; Bar Carb,Sel etc.

THUJA : Prostatic enlargement pain and burning felt near neck of the bladder, with frequent and urgent desire to urinate. There may be chronic induration of the testicles. Urinary stream split and small bladder feels paralyzed must wait for urination, frequent hasty with pain in other parts, urging with profuse flow.

SABAL SERRULATA : Constant desire to pass urine specially at night. Difficult urination, smarting and burning urethra. Heavy aching pain and sense of coldness in bladder extending to external genitals. Cystitis from prostate hypertrophy. Enlarged and congested senile prostate. Loss of sexual power.

FERRUM PICRICUM : It a very useful remedy for senile hypertrophy of the prostate gland, with frequent urination at night, with full feeling and pressure in rectum. There is smarting at neck of the bladder, with retention of urine

Scanned by CamScanner

LYCOPODIUM : Frequent urging to urinate. Red sand in urine. Slow in coming, must strain, supressed and retained polyria during night, occasional haematuria. Enlarged Prostate sexual exhaustion, Premature seminal emission.

NUX VOMICA : Prostate hypertrophy in old people. Dribbling of urine. Painful ineffectual urging to urinate. Spasmodic stranguary. Bad effects of onanism. Easily excited. Penis becomes relaxed during embrace. Premature ejaculation. Increase of smegma.

CONIUM : Enlarged prostate gland which is hard and nodular. Interrupted urination, urine stops and starts standing, then it flow freely. Urine feels hot. Imperfect erection and of too short duration. Sexual nervousness dejection after coition. Ill effects of supressed sexual desire. Dribbling of prostatic fluid after stools. Sexual desire without erection.

OCIMUM CANUM : Prostate enlargement with renal involvement with renal colic with haematuria and violent vomiting. Red sand in urine which may be of saffron colour and of musk like smell or odour.

CALCAREA CARB : Enlarged prostate with dark brown, sour, foul or strong smelling urine. White sediments in the urine worse during cold. Increased sexual desire, with retarted erections. Coition followed by profound weakness.vertigo, irritablity, lameness of back kness, headacha and sweating. Premature seminal discharge or ejaculation.

BARYTA CARB : Prostate enlargement with flabby genitals Indurated testicles. Urging to urinate, can not retain the urine, Burning in urethra while urinating. frequent urination. painful nodes in mammae in old fat men.

SELENIUM : Involuntary urine, dribbling, when walking after urination and after stool. Prostatic fluid oozes out during sleep, while sitting, walking and during stool. Increased sexual desire with decreased ability to perform.

CROTALUS HORRIDUS : Carcinoma of prostate and bladder. heamaturia, dark bloody urine, albuminous. scanty, greenish yellow.

I am giving few cases of Prostate related disorders treated sucessfully from my records :

Case No. 1. Mr. C. P. V of 54 years suffered from frequent micturation nocturnal frequency was around 10-12 times and due to this he had sleeplessness. He had to rush to the toilet with the urgent feeling for urination but once he went to the loo, urine just would not pass he would pass few drops of urine after sometime and soon had to come back to the toilet to relieve himself of the building pressure in the lower abdomen, leaving him exhausted and he started getting cramps in the legs. Investigation : U/S Scan report - Enlarged prostate size measuring 35 x 34 x 35 mm with evidence of calcification. Hb 8.5 gm%, TLC 3700 cumm, and Amorphous Urates (+) in Urine examination. At this time patient was given Nux Vom 200/ 3 doses as fractional doses followed by ferr Pic. 30. On his next visit after 10 day he reported that he is feeling better and the frequency has reduced and the discomfort is also less and is able to sleep for a while now. But the urgency and the pressure still remains and getting lot of dryness of the mouth at night. I prescribed him to continue with the legs, with marked stiffness Rx Causticum IM single dose followed by ferr. Pic 30. After 4 months of treatment he feels almost completetly alright now. The noctural frequency is hardly once or twice with no problem in urination and there is no discomfort felt in the lower abdomen as he passes urine freely with no left over or residual feeling, simultaneously his cramps and stiffness of the legs are also much better. Now he has given up the idea of undergoing surgery which he was advised earlier.

Case No. 2 : Mr. I.S.B. 73 yrs old suffering from. Osteo Arthritis and Haemorrhoids with Benign hypertrophy of Prostate. He was advised to undergo sugery for Prostate as once he had anuria for nearly a day with lot of discomfort and he was admitted in the nursing home where through the Catheter only he could pass urine. After this episode he got very much frightened but was adament not go for Surgery as he being a staunch sikh never let his public hairs to be shaved off due to religious belief. He then requested me that whather Homeopathy could do something for him and save him from the ordeal. On seeing his persitent descision for not got getting operated and fixed ideas and hypertrophy of Prostate I prescribed him Thuja 10M/3 fractional doses followed by Sac lac and Sebel Serrulata Q to be taken 15 dps b d. On his next visit he did show some improvement, few of his various symptoms needing these remedies. After couple of months he discontinued the treatment. Then one day I got a phone call from his wife, she told me that he in great trouble and was passing urine in drops that too with lot of difficiulty and finally has not pass any urine for the last 18 hours, as they were in their daughter's house at Faridabad and now seek the help of Homoeopthy as he had developed good faith in this system

Scanned by CamScanner

and was sure that he could be treated successfully. On hearing this I asked them to take Apis 3x and Solidago Q and bring him to my chamber By the time he arrived at my clinic I was told that after taking the doses which I prescribed him he had passed few drops of urine after nearly one and a half hour or so and then only he felt some relief. And after some time again he passed full fledged urine with free flow and no strangury. It was told that if next time he gets anuria then nothing could help him and he will have to undergo surgery. Now it his been nearly 5 years that he has not had any acute retention of urine and the other sysptoms like frequency, urgency, and hesistancy are absolutely under control. He has Prostate problem who stays in Dubai and was also advised to undergo surgeny there.

Case No. 3 : Mr. Dharamsheel 70 yrs old suffering from Diabetes since 1970 and Prostate hypertrophy confirmed Grade II U/S (4.5x3. 6x4.5) cms with insignificant residual urine volume aganist a capacity of 22 c.c. further investigation of Uroflowmetery-Micitometery comments - Adequate volume, average flow rate and maximal flow rates both are reduced. Severe obstructive pattren seen. Patient had been on antidiabetic drugs since beginging and now has frequent micturation i.e. 8-10 times at night with constant unsatisfactory feeling and dribbling of urine for which had been advised surgery. He had flatulence, had a history of left sided Sciatica thrice. He could pass urine rather comfortably only while standing. I gave him Lachesis 1M/3 d followed Sarsaparilla 30 t.d.s. On his next visit after 2 weeks he felt much relieved his frequency of urination had come down and now is able to pass urine much freely, but felt pain in the left Knee joint. Again he was given the same treatment. And after this he is only on placebo for the last 3 months he is having not much of a problem, he is still undergoing treatment and soon I shall be getting the investigation done to asses the progress.

Case No. 4 : Mr. J.L.L. 60 years old had got the Haemorrhoidectomy done sometime back after that the got haematuria with acute pain in the abdomen and burning with urination. Investigations Urine showed field full of R.B. Cs. Pus cells-60-65, epithelial Cells 8-10 and Albumin + and Bacteria + U/S scan - Modrate prostatic enlargement with non significant post voiding residual urine, Prostate 6.0x5. 03x5 0cms. Patient was brought to me with pain strangury and dysuria and oliguria. I gave him N.V IM/3 doses followed by Tribithum 30 and Chimaphilla Q.By the evening time patient was much relaxed his pain had subsided considerably and also had passed fairly good amount urine. After about a week or so again he had the same complaints with High fever upto 103 degree F accompanied by Nausea and Vaniting with severe pain in the testicles. He was given Apis Mel 3x and Ocimum to be repeated after every 2 hours. Next morning his fever was given few doses of Rhododendron 30, which had cured the testicular pain also. Now the patient is having no complaints whatever. He was given Sabal Serrulata Q to he used regularly as the patient could not come regularly for consultation and treatment. After 6 month the U/S scan was repeated which measures the prostate as 5.7x4. 7x3.5 cms but Right sided hydronephrotic. Kidney with mild prostatic enlargement.

Case. No.5 : Mr R.S.B. 77yrs old had been operated for Prostate in Feb. 1994 and was diagnosed as. Adeno Carcinoma of Prostate. B/L A orchidectomy done. Patient was advised post operative Radiotherapy which he did not undergo. Presently patient has pain in the pubic region with apparent swelling on the surface which is quite firm and hard Patient has frequency of micturation i.e. 8-10 times at night which disturbs his sleep. There is urgency, hesistancy and dribbling of urine, loss of appetite. heaviness in the head. Had two the Heart attacks earlier, his B.P. was 240/120 mm of Hg. Patient has hyperacidity. water brash, Breathlessness.

Blood Urea maximum upto 126, Serum creatinine 1.5 and Urine Creatime 0.90, Urine has E.Coli growth. I asked him to go Hospital as it needs hospitalisation but the patient refused point blank and said now I don't want to go to the hospital. His daugher in law who was accomponying him said that he is very sensitive and have constant mental tension about his son who has become an alcohol addict Seeing him the patients keeps on brooding, abusing and weeping every now and then and no amount of persuance has helped him to go to hospital an the contrary with great difficulty she had brought him to me. After 30 and asked him to report me after 2 days. On his next visit his B.P. was 200/108 mm of Hg. and he had passed some more urine than the normal times in fact it was more frequent, but was able to pass urine rather little freely. I asked him to repeat and report after 7 days. This time he was rather cheerful in mood and was not looking the same old depressed person. His B. P. was 186/102 mm of Hg. but he was feeling much better in general. He was given a dose of Carcinocin 200 followed by Crotalus Horridus 30 After nearly 1 month I saw him again when he was much happier and was able to sleep as he gets up 3-4 times as night for urine which he passes now without any discomfort and after urination he is able to sleep again. His B.P. is measuring between 170/100 to 154/96. He is still undergoing treatment and improving day by day.

✠✠✠✠

Scanned by CamScanner

NATURE'S

HEALTH SUPPLEMENTS FOR FITNESS

By

APRA PHARMACEUTICALS

613/4 Laxman Vihar Ext. Gurgaon-122001
Off. : 1499/4 Urban Estate Gurgaon -122001
Delhi-217 Vasant Apartments Vasant Vihar,
New Delhi-110057
Tel. : Grg. : 320049, 322782
Del. : 6875948, 6195394

(Product Information & Trade Mark Enquries Solicited)

Syp.	**Apraliv**	-	**Hepato Protective**
Syp.	**Apravin**	-	**Cough Expectorant**
Syp.	**Apracordial**	-	**Unique Uterine Tonic**
Syp.	**Aprazyme**	-	**Safe Digestive**
Syp.	**Apraglobin**	-	**An Ideal Tonic**
Syp.	**Apra Cough**	-	**Cough Remedy**
Syp.	**Apra Neem**	-	**Blood Purifier**
Syp.	**Apra Citron**	-	**Alkaliser**
Syp.	**Aprament**	-	**Brain Tonic**

Delhi Distributor
V.V. SALES AGENCIES
375, Hanuman Market
Munirka, New Delhi - 110057
Tele : 5536011

Haryana Distributor :
POOJA AGENCIES
New Railway Road opp. Lal Nursing Home Gurgaon
Tel. : 327809

Scanned by CamScanner

STERLITY AND ITS TREATMENT

Dr. Promila Dhamija
DHMS, [DELHI] SICR [BOMBAY]
LMHI [GENEVA] JT. SEC IIHP

Definition : It is defined as an absolute state of inability to conceive or give birth to a viable baby within a seasonable time after marriage [1Years] provided the couple were sincerely trying for a baby and did not use any Contraception.

Some distinguished the terms as sterility being absolute state of inablility to conceive, while infertility the relative state of failure to conceive. The terms are Commaonaly used as sterility.

[i] Primary Sterility - When women has never conceived.

[ii] Secondary Sterility - When the women has had one or two children.

INVESTIGATIONS OF A CASE OF STERILITY [MALE AND FEMALE]

Athorough and careful history taking and examination of the female and male partner.

Patient should asked for their details living like :-

PHYSICAL EXAMINATION.

1. In case of male - male genitalia and testicular sensation are to be examined.
2. In case of female - breast should be carefully examined.
3. Tubes and Overian tumours may be tender and swollen. Overian tumours may be felt.

SPECIAL INVESTIGATIONS

1. Clinical examination of both husband and wife.
2. Husband's semen analysis.
3. Tubal potency test by H. S. G. insufflation test/laproscopy.
4. Endometrial curettage to detect ovulation and to exclude tuberculosis.

It is seen that the investigative procedure may help to achieve a pregnancy in quite a number of cases.

CAUSES OF STERILITY

Serility may be either congenital or acquired. That is, it may be due to Congenital organic defects or it may arise from subsequent disease.

LOCAL CAUSES

Causes in male

1 Failure to produce Spermatozoa.
2 Failure in tranmission of Spermatozoa along with the ejaculatory ducts and vas deferens.
3. Failure to deposit Spermatazoa in the vagina.

Scanned by CamScanner

CAUSES IN FEMALE

1. Causes preventing the entrance of semen into the uterus.
2. Causes preventing the production of healthy ovule.
3. Causes preventing passage of ovule into uterus.
4. Causes destroying vitality of semen or preventing fixation of impregnated ovum.

TREATMENT OF STERILITY

1. General Treatment

Any coital difficulty has to be treated. Any faulty sexual knowledge should be corrected.

2. Medical Treatment

Medical diseases like hypertension, tuberculosis, hypo and hyperthroidism, diabetes, nephritis, syphilis and gonorrhoea should be treated.

The mininal tuberculosis of the endometrium may require antitubercular regime for 2-3 years.

3. Hormonal Therapy

The is mainly done for the two purposes :

[a] To induce ovulation.

[b] To treat corpus luteum insufficiency if this is suspected or diognosed.

Three groups of durgs are being used in cases of sterility :

1. Agnus Cactus - Scanty menses, abhorrence of sexual intercourse. Relaxtion of genitals with leucorrhoea which is yellow staining.
3. Calc. Carb-Sterility from execssive and premature menses.
4. Nat. Mure - Sterility with depression; weeping mood, averse to consolation, earthy complextion.
5. Net. Carb.-Discharge of mucus from vagina after an embrace causing sterility.
6. Borax - Sterility with acrid leucorrhoea.
7. Conium - Sterility with scanty insufficient menses, breast painful.

SPECIAL MEDICINE - [ACCORDING TO KENT]

1. Sterility due to atony of ovaries-Eup. Pur.
2. Sterility from atrophy of ovaries and depression of mind-Aurum met.
3. Sterility from atony of ovaries and depression of mind-Aurum met.
4. Sterility due to leucorrhoea-Kreos.
5. Sterility with too early and profuse menses-Sulphur
6. Sterility with late and profuse menses-Phosphorous

Scanned by CamScanner

With Best Compliment From :

R. K. ENTER PRISES

A-34, Friends Enclave, Sultan Puri Road, Nangloi New Delhi-110041

(Distributor of Kiran Pharmacy)

Tel. : 5477968, 5416532

With Best Compliment From :

GLISTEN HEALTH

F-15, Radha Swami Satsang Ghar
Mohindra Park GTK Road-33

(Distributor of Kiran Pharmacy)

Tel. : 7430939, 7413827

With Best Compliment From :

PREM MEDICAL CENTRE

Main Chowk Brijpuri x-ing opp. C-Block
Yamuna Vihar, Delhi 110094 Ph. : 2182935

Facillities :

X-RAY, E.C.G. PATH. LAB, ULTRA SOUND,
DENTIST, EYE, E.N.T HAERT,
GEM SURGICAL SPL.

24 HRS. SERVICE

Dr. S.P. Verma
B.Sc.A.G.M.S.

RAWAL SINGH
D.M.L.T. (DELHI)

Dr. A.K. Sharma
B.A.M.S. (DELHI)

SURAJ

PATHOLOGICAL LABORATORY

Facilities : X-Ray, E.C.G. Ultra Sound
Fully Computerised Path Lab.
374, Main Krishna Street No. 11
Mauj Pur, Delhi-110053
Ph. : 2267267

B.O. MAIN CHOW BRIJ PURI X-RAY
Opp. C-Block Yamuna Vihar
Delhi-110094.
Ph. : 2182935

Main Road Bheekam Singh Colony
Street No. 10 Vishwas Nagar Delhi-
110032 Ph. : 2411475

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

Estd. 1990

NIRMAL X-RAY & DIAGNOSTIC CENTRE

A-4, Shiv Market Paschim Vihar, New Delhi-110 063 Ph. 5588332

X- RAY, ULTRA SOUND,
E.C.G. COMPUTERISED CLINICAL LAB

FACILITIES AVAILABLE :

Ultra Sound

X-Ray

ECC

Computerised Clinical Lab

Estd. 1983

MAYUR X-RAY & DIAGNOSTIC CENTRE

I-1177, Mangol Puri, New Delhi- 110 083 Phone: 7275409

Administrator

Dr. Shyam Gupta

Scanned by CamScanner

"A SCIENTIFIC APPROACH TO AYURVEDA, THE PRESENT DAY DEMAND OF THE WORLD"

Whenever one comes accross the term 'Science' his or her the first impression is that science means physics, Chemistry, Biology etc. and that is true too, but more basic definition of science is a logical and Systimatic knowledge of any subject. In that sense, Ayurveda is no doubts a currlate science but for a lay person. Who has not gone through Ayurvedic literatrue it is dificult to understand the basic principals of Ayruveda and his or her impression remains that Ayurveda is unscientific because they cannot correlate it with present modern medical science which is totally based on present scienctific parameters. At this juncture it becouse the duty of an Ayurvedic physician to make the world to accept the truthfullnees of Ayurveda.

Two kinds of treatment approaches are prevalent among Ayurvedic physicians.

1) Ayurvedic diagnosis and Ayurvedic treatment

2) Modern diagnosis and Ayurvedic treatment

First approach is most popular among Ayurvedic physicians who prachice pure Ayurveda. This type of approach is really a classical Ayurvedic approach. Here most important aspect to be emphasised is to treat the patient according to prakriti Desa, Kala, Bala. Most of the texts of Ayurveda cortain Hundereds of formulations one diseases which is only to guide the physician and help him to choose such formulation which suit the prakriti, desa, kala, bala etc. of the patient. Another aspect is to officially record the clinical data which support the success of any treatment given for a particular disease.

Second approach is modern diagnosis and Ayurvedic treatment. However this is not a classical Ayurvedic approach of treatment because it over looks the basic principals of Ayurveda. But still we have to prove that Ayurvedic drugs have beneficial effects even in diseased conditions diagnosed on the basis of modem medical science. This kind of approach is being adopted in most parts of world by the drugs have been proved benifical in various morbid conditions Ashwagandha which in Balya, Rasayna and vrimhaneeya dravge according to authentic Ayurvedic texts has been proved as antianxiety drug and as a preventive drug for senile dementia.

The purpose of this article is to encourage the Ayurvedic graduates and postgraduates to carry on such resarches, learn rearch methodology, write papers from time to time along these clinical practies.

The research work which is being done by modem medical science expect should be done by Ayurvedic people more enthusiastically.

Now a day many Ayurvedic physician claim that they have successful Ayurvedic treatment for diabetes, epilepsy ect. when they use such terms like Diabets, Cancer etc in a seientific seminar the first question comes about the subject knowlege of the disease after treatment data including the parameters used and finally the results whethes staitiscally significant or not in terms of success an Ayurvedic person mum if he does not know the research methodolgy.

From time to time work shops should be conducted by & Ayurvedic assocaition and learned serioussness should be invited to introduce research methology and other currant issues.

Susjechine feeling about succes have no place in scientific world.

DR. RAJIV RELHAN
M.D.(AY)
Ayurvedic consultant
5C/91 N.I.T. Faridabad

Scanned by CamScanner

GET HEALTH FROM NATURAL HERBS

- Dr. B. Chauhan

Nature gives us many HERBS to keep our body fit. Here we are describing the benefits of following HERBS, which is very common in daily routine life.

PODINAH (MENTHOL)

Mentha Arvensis :

Mentha Arvensis, a fragrant Herb, is cultivated all over India, An oil, similar to peppermint oil is obtained by steam distillation from the leaves, flowering tops and stemsla Stearoption known as Menthol or Peppermint can be extracted by allowing the oil to settle. An infusion of the leaves affords a remedy for rheumatism and indigestion. A decoction or vapour of its tea is largely used with lemon grass as a febrifuge in fevers, Mentha arvensis (Podinah) commonly used in Chutneys in Indian cuisine.

Menthol has proved curative in acute nasal catarrh; in acute custa chin catarrh; pharyngitis, laryngitis and itching especially pruritis vulvae.

It is used in the manufacture of cold remedies, cough drops, dentrifices; mouth washes, cosmetic and in Scenting Cigarettes flavouring tobacco, chewing pan, etc. The oil from Menthol is found to be effective as a antifungal agent against Aspergillus niger and curvularia lunata and is also an in valuable, antineuralgic when applied externally. Its pleasing odour can influence behavior and induces allterness in preservative and gastro-stimulant.

From :
Dr. B. Chauhan, M. D. (A)
Consulting Family Physician
Spl. : Sex, Skin & Chronic diseases
Add : RZ-12, Indira Park Extn.,
East Uttam Nagar,
New Delhi - 110 059.
Ph. :# 5510567, 5558993

Scanned by CamScanner

With Best Copmliment From

SUBHASH CHANDER GOGNA

Engineers & Contractor,

◆◆◆

C-18, Daya Nand Coloney, Lajpat Nagar, NewDelhi-110024
Ph. : (Resi) 6413802, 6410149

With Best Compliment From :

SANJAY BANSAL

M/S DEEP JEWELLERS

Ram Phal Market, Sector-9 Rohini, Delhi-110085 Ph. : 7262481

Scanned by CamScanner

SINUS

GENERAL PROBLEM AND ITS SOLUTION

Dr. B. Chauhan

What is Sinus symptoms, severity of diseases and its prevention as mentioned below : -

Chronic Sinusitis is one of the most common ailments; however, many anti-sinusitis products available in the market which contains pain relievers, decongestants and-histamine are usually not the best remedy.

The sinuses comprise of four pair of cavities in the front part of skull. A delicate members lining them, continually produces mucus to flush out irritants and other invaders, including bacteria and viruses. If for any reason the opinion of these cavities become blocked, the sinuses respond by producing even more mucus. If the mucus remains, or if there are repeated bouts of blockage, pressure builds up resulting in facial pain or severe headaches.

As allergy is possibly the common cause of chronic sinusitis. In most cases, recognizing and treating the under lying disorder can stave off chronic sinusitis. It is advisable to consult your Physician if you have the following symptoms ;-

- Frequent and severe frontal headache.
- Continuing post nasal drip.
- Frequent episodes of heavy nasal congestion.
- Symptoms of allergic nasal congestion "out of seasons"
- Frequent respiratory Infections.
- Facial pain around your eyes following a cold or other upper respiratory infections :-

The Treatment Includes :-

- An antibiotic for bacterial sinusitis
- If due to allergy, test for the offending allergen and undergo desensitization.
- If every type of medical therapy fails, surgery to remove thickened infected sinus membranes can be considered.

From :

Dr. B. Chauhan, M.D. (A)

Consulting Family Physician,
Add : RZ-12, Indira Park Extn,
East Uttam Nagar, New Delhi-110059.
Ph.# : 5510567, 5558993

Scanned by CamScanner

Dr. N. K. Modgal
B.Sc., B.A.M.S.
Consultant Physician

'एक कहानी'

एक व्यक्ति बहुत स्पष्टवादी था, मन्दिर जाना, आदि कामों से हमेशा दूर। एक दिन उसकी पत्नी अपने गुरू जी के पास गई व अपनी व्यथा सुनाई व विनती की कि उसके पति को भी धर्म में रुचि सिखाएं। गुरू जी ने उसे ४ दिन बाद उसके घर आने का वायदा किया।

पत्नी ३ दिन इन्तजार करने के बाद चौथे दिन सुबह ४ बजे जाग गई व स्नानादि के बाद घर के छोटे से मन्दिर में टल्लियां बजाने लग गई। पति बेचारा परेशान, जाग खुल गई, बाहर लॉन में आकर कुर्सी पर आराम करने लगा। स्वामी जी (गुरू जी) सुबह ६ बजे पहुँच गए, मेन गेट पर दस्तक दी। अन्दर आकर पति से पूछा तुम्हारी पत्नी कहां है जवाब था बाजार गई है। स्वामी जी को गुस्सा आ गया बोले सुबह छः बजे कौन सा बाजार खुला है। पति हँस पड़ा, मुस्कराकर बोला इस समय वो भिण्डी खरीद रही है और मोल भाव करने पर सब्जी वाले से लड़ भी रही है। इतने में पत्नी अन्दर से बाहर आ गई।

स्वामी जी को देखते ही उनके पैर छुए। स्वामी जी बोले यह ठीक कह रही थी तुम नास्तिक हो यह अन्दर थी और तुमने झूठ बोला। पति फिर मुस्काराया बोला स्वामी जी मैं ठीक कह रहा हूँ अगर मुझ पर यकीन न हो तो इससे पूछ कर देख लीजिए।

स्वामी जी ने पत्नी की ओर देखा वो निरूत्तर थी। थोड़ी देर बाद बोली स्वामी जी यह ठीक कह रहे हैं। पूजा के दौरान मेरे मन में आया था कि आज आपके आने पर आपको भिण्डी की सब्जी खिलाऊगीं और ख्यालों में ही मैं सब्जी वाले से लड़ भी पड़ी थी।

स्वामी जी सकपकाए उसके पति से बोले तुम्हें कैसे पता कि पूजा के दौरान यह क्या सोच रही थी, पति फिर मुस्कुराया बोला २० साल से इस घर में जब भी कोई मेहमान आता है तो उसे यह भिण्डी खिलाती है। और मेरा तो पेट भी खराब हो गया है।

कहानी छोटी सी है अन्तर ध्यान का है हम जो सोच रहे हैं वो कर भी नहीं रहे जो कर रहे हैं वो सोच नहीं रहे। भगवान तो आता है लेकिन हम कहीं और होते है वो बेचारा वापिस चला जाता है।

DENGUE
(An epedemic disease)

Now a days there is a terrror in the minds of general public regarding dengue fever. According to ayurveda we can redefine it as "Visham Jwar" where 'Vat' and 'Pitta' doshas increase simultaneously resulting into High Grade Fever with severe head ache, chills without rigors, vomiting, abdominal pain especially epigastric region, restlessness sometimesblood stained vomits (in Dengue haemarchoegic fever).

Dengue : An acute febrile diasease of sudden onset of thatmost frequently follows a benign course characterised by headache, fever, prostration, severe joint and muscle pain, lymphadenopathy, and a rash that appears with a second temperature rise following an afebrile period.

Symptoms & Signs

Followings an incubation period of 3-15 (Usually 5 to 8) dengue has an abrupt onset with chills or chilly sensations, head ache, retro-orbital pain on moving the eyes, lumbar back ache, and severe prostration. Ex-

Scanned by CamScanner

treme aching of the legs and joints occurs during the first hours of illness. The temperature rises rapidly to as high as 105°F with relative bradycardia and hypotension. The bulbar and palpabral conjunctivea are injected, and a transient flushing or pale pink macular rash (particularly of face) usually appears. The spleen may be soft and slightly enlarged. Cervical, epitrochlear, and inguinal lymph nodes are nodes are usually enlarged.

Fever and Ache symptoms of dengue persist for 48 to 96 hrs. followed by rapid defervescense with profuse sweating. This ushers an afebrile period, with a sense of well-being that lasts about 24 hrs. A second rapid temperature rise follows, usually with a lower peak than the first, producing a " saddleback curve. A characteristic maculopapullar eruption appears simultaneously, usually spreading from the extremities to cover the entire body except the face or distrbuted patchily over the trunk and extremities. The palms and soles may be bright red and adematous. Mortality is nil in typical dengue. Convalscence often lasts several weeks and is accnupanied by asthenia.

In DHF, onset is also abrupt, with fever and headache. However, rather than developing severe myalgia lymphadenopathy, and a rash, the patient has respiratory and GI symptoms, Pharyngitis, cough, dsypnoea, nausea, vomiting, and abdominal pain are also present. Shock occurs 2 to 6 days after onset, with sudden collapse or prostration., cool clammy extremities (the trunk is often warm). Weak thready pluse and circumoral cyanosis, bleeding tendencies occur, usually as purpura, sometimes as haemetenesis, epistaxis and occasionally as subarachnoid hemorrhage. Hepatomegaly is common, Myocarditis may present. Mortality rate is 6 to 30% for DHF.

Prophylaxis :

Prevention of dengue (Aflavivirus with 4 distinct serogroups, is transmitted by the bite of Aedes mosquitoes) requires control or eradication of mosquito vector. to prevent transmission to mosquitoes, patient in endemic areas should be kept under mosquito netting until the second bout of fever has abated.

Treatment :

The line of treatment of dengue fever is symptomatic

* In starting phase when temperature in rises rapidly start with lemon juice 50 ml + 200 ml water +10gms of salt at the interval of 2 hrs. for 3 times followed with
* Sanjivani Vati 150 mg + Praval Pishti 100 mg Q.I.D. Godanti (Harital) Bhasma 300mg. T.D.S. for 5 days
* In case of dehydration with abdominal pain I/V drip of R/L should be started inmmediately with praval panchmrit ras 125 mg. sublingually every 15 minutes interval for 3-4 times followed with same treatment as mentioned above.
* In cases of D.H.F. as mortality rate is high gravity and consequenses of treatment should be told to the attendents and then following course of treatment can be adopted.
* Karpoorasva 1/2 tsfs. every 10 minutes anterval Mulethi powder (Ext.) 100 mg. + Trinkant Pishti 50 mg. + Shankh Bhasma 125 mg. q.i.d. for 7-8 days
* Punarnawarishta Risht 3 tsfs. 6 hrly.
* Godanti (Harital) Bhasma 125 mg. q.i.d.

Fuming of surrounding with Guggul + Harmal + Samudra Phal twice daily at morning and evening.

◆◆◆

Scanned by CamScanner

EMERGENCY
24 HOURS

फोन : 7120850
7137360

परनामी एक्स-रे

एण्ड क्लीनिकल लैब

अल्ट्रासाउण्ड - ई०सी०जी० - फ्रैक्चर क्लीनिक **A-14,** पंचवटी,
नई आजादपुर सब्जी मण्डी बस स्टाप के सामने, आजादपुर, दिल्ली - **110033**

Fully Air conditioned & computerised Clinic Equipped with 500 mA Siemens X-Ray machine & Computerised Blood Analyser RA-50

Timings : Weekday : 5 A.M. to 8 P.M. Sunday : 8 A.M. to P.M.

Dr. M.L. Parnami
M.B.B.S., M.S. (Ortho.)
AE-190, Shalimar Bagh, New Delhi-110052. Ph. : 7410230, 7226121, 7459317
Timings : 8 to 12 5 to 7 weekdays (Sunday Closed)

With
Best Compliments
From :

Dr. B.K. Jha

SHRI RAM SINGH HOSPITAL HEART INSTITUTE
26-26A, East Krishna Nagar, Swaran Cinema Road,
Delhi-110051, Ph. : 2246964, 2216443

Scanned by CamScanner

With
Best
Compliments

From:
MR. MONIKA VINOD
L83- Raghubir Nagar,
New Delhi - 110 027

With
Best Compliments
From :

GANESH X-Ray
&
Diagnostic Centre
(COMPUTERISED)
Equipped With :
X-RAY,DENTAL X-RAY
CLINICAL LAB, E.C.G. , ULTRASOUND
Block M-1 A, Raghubir Nagar,
New Delhi- 110 027
Ph.: 5429061,5103708

With
Best Compliments
From :

ARYA MEDICOS
A HOUSE OF GENUINE MEDICINES
D- 377 A Raghubir Nagar,
New Delhi - 110 027. Phone:. 5464226

SATISFACTION IS OUR MOTTO

With
Best Compliments
From :

♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦
♦♦♦♦♦♦♦♦
♦♦♦♦♦

NAVEEN KUMAR
HARSH ELECTRONICS
R - 641A, Raghubir Nagar,
New Delhi - 110 027

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

Harvinder Singh Setia

SETIA CAP INDUSTRIES

MANUFATURERS OF : PILFER PROOF CAPS

WS - 161, Maya Puri Ind. Area, Phase - II,
New Delhi-110064.
Ph. : Off. : 5139462 Resi : 5191624

With Best Compliment From :

Pioneer manufacturer of :

Ayurvedic Injections

Sidhi Pharmacy Pvt. Ltd.

8, Civil lines, Lalitpur (U.P.)

Some very effective injections are :

(i) Inj. Arjun (High B.P., Low Ischaemic Heart Disease) Result within 20 miutes 99% sure
(ii) Inj. Arshon (Any type of Bleeding)
(iii) Inj. Gandhak (Skin Diseases)
(iv) Inj. Khujleena (Skin Diseases)
(v) Inj. Sundri (Leucorrhoea, Irregular menses Bleeding etc.)
(vi) Inj. Baton (Rheumatic Arthritis)
(vii) Inj. Makardhwaj & Basant Kusumakar etc. (For Sexual Disease etc.)
(viii) Inj. Malarian & Jawreena etc. (For Viral & Malaria fever)

Delhi Office :
4327/3, Ansari Road
Daryaganj, Delhi-110006
Phone : 3279075, 654983

Distribution
Trans-Yamuna Area
(Shahdra)
K.R. & Sons
E-70 B, Dilshad Garden,,
Delhi - 110095
Massage : 2273071

Note : If our M.R. did not approach you and you are interested in our products, please inform us.

आई० एस० एम० एवं एच०

के अधिकारो की रक्षा के लिये और अपने उज्जवल भविष्य के लिये

एमगा

के आजीवन सदस्य बनें।

प्रधान कार्यालय :-
32 - गणेश नगर विस्तार II
लक्ष्मी नगर, दिल्ली - 110092 Ph. : 2210230

Scanned by CamScanner

All India Indian Medicine Graduates Association

(Mangol Puri Zone) N-684, Mangol Puri, Delhi-110083
Head Office : 32, Ganesh Nagar Vistar-II, Shakar Pur, Delhi-110092

President :
Dr. P.K. Sharma
N-684, Mangol Puri, Delhi-110083
C-7273458 PP R-7271502

एमगा पश्चिमी क्षेत्र मंगोलपुरी

गठन :

भारतीय चिकित्सा क्षेत्र में एमगा राष्ट्रीय स्तर की ऐसी संस्था है। जिसने पिछले १० वर्षो से चिकित्सा की समस्याओं को लेकर संघर्ष करके आज उस स्थान पर ला दिया है कि सरकारी एवं गैर सरकारी सभी स्थान पर उसकी अपनी एक छवि है।

संस्था ने अपने कार्य को कुशलपूर्वक चलाने हेतु दिल्ली प्रदेश को जोन नं० में विभाजित किया। इनमें से पहले सर्व प्रथम जिस जोन का गठन हुआ वह पश्चिमी क्षेत्र मंगोलपुरी था, जिस क्षेत्र में एमगा का एक सदस्य दूसरे सदस्य को नहीं जानता था। आज इस समय एक सदस्य का दूसरे सदस्य से पारिवारिक सम्बन्ध एवं एक दूसरे के हर समय काम आने के लिए तत्पर रहता है।

उद्देश्य : पश्चिमी क्षेत्र के गठन के उपरान्त इसका मात्र उद्देश्य था कि एक सदस्य दूसरे सदस्य की समस्याओं से परिचित हो तथा उसके समाधान तथा सामाजिक कार्य करें। पश्चिमी क्षेत्र नें सर्व प्रथम एक 'किट्टीपार्टी' का आयोजन किया जो कि नियमित रूप से चालू है। इसमें प्रत्येक सदस्य ५०० रूपये प्रतिमास देता है। हर माह एक ड्रा निकाला जाता है। जिसमें दो सदस्यों के नाम की पर्ची उठाई जाती है। तथा सम्पूर्ण राशि दोनों सदस्यों को दी जाती है। १०० रूपये प्रति सदस्य क्षेत्र को अनुदान करता है। तथा दोनों सदस्य अपने स्थान पर सभी सदस्यों के लिए जलपान का प्रबन्ध करते है। इसे सभी सदस्य एक परिवार तथा निवास स्थान से पूर्ण परिचित हो जाते है।

कार्यकारिणी :

सर्व प्रथम जिस समय पश्चिमी क्षेत्र ने अपना कार्यभार संभाला है उसमें डॉ. पी. के. शर्मा कनवीनर, डॉ. मो. उसमान को कनवीनर तथा डॉ. आर. के. गोयल कोषाध्यक्ष रहे। इन्होने मिलकर प्रारम्भ में सभी व्यय भार अपने ऊपर लिया। इस उद्देश्य से कि हम अपने क्षेत्र में एमगां के लिए कार्य करें तथा जितना विस्तार कर सकते है विस्तार करें इसके बाद पश्चिमी क्षेत्र का पूर्ण रूप से गठन किया गया जिसकी वर्तमान कार्यकारिणी इस प्रकार है :-

चेयरमैन	डॉ. आर. के. धमीजा
अध्यक्ष	डॉ. पी. के. शर्मा
उपाध्यक्ष	डॉ. आर. के. पॉचाल
महासचिव	डॉ. के. एस. विधार्थी
सचिव	डॉ. बी. एस. सहोता
कोषाध्यक्ष	डॉ. ए. ए. खान
केन्द्रीय पदाधिकारी	डॉ. मो. उसमान, डॉ. आर. के. गोयल

Scanned by CamScanner

उपलब्धियाँ : पश्चिमी क्षेत्र की किट्टी पार्टी सभा प्रत्येक माह को १५ तारीख को होटल में होती है।

१. प्रत्येक माह की १५ तारीख को सभी सदस्य एक स्थान पर मिलते है तथा एक दूसरे के साथ बैठकर जलपान ग्रहण करते हे।

२. प्रत्येक सभा में एक दूसरे चिकित्सक एवं अन्य संबंधित समस्याओं का समाधान किया जाता है।

३. इन सभाओं में क्लीनिकल लैक्चर तथा उनका डेमान्सट्रेशन कराया जाता है। जैसे अल्ट्रासाउण्ड, नोबीलाईजर, एन्डोस्कोपी, सूत्रधार, रेडियोलॉजी, चर्मरोग अध्ययन आदि।

४. सामाजिक कार्य जोन रोहिणी में एक रक्तदान शिविर का आयोजन कराया गया।

५. इन्कमटैक्स सलाहकार को बुलाकर इन्कमटैक्स संबंधित जानकारी दी गई।

६. इन्स्योरेन्स सलाहकार को बुलाकर इन्स्योरेन्स संबंधित जानकारी दी गई।

७. सिटी बैंक के प्रतिनिधि को बुलाकर ऋण संबंधित जानकारी दी गई।

८. पश्चिमी क्षेत्र के प्रतिनिधि मण्डल ने एरिया एसीपी व एसएचओ से मिलकर समस्याओं के प्रति गहन विचार विमर्श किया। मंगोलपुरी क्षेत्र से डॉ. इकबाल के केस में रात ढाई बजे तक पुलिस स्टेशन में रह कर उनको सकुशल वापस लाए। एक दूसरे सदस्य के लिए एसएचओ व एसीपी सुल्तानपुरी के साथ एक घन्टा विचार करने के बाद लाये। यदि आवश्यकता होती है तो सभी सदस्य तुरन्त एक स्थान पर एकत्रित हो जाते है।

९. क्षेत्र के संजय गांधी हॉस्पिटल से सी. एम.ओ. डॉ. चन्द्रकान्त को अपनी सभा में आमंत्रित करके सी.एम.ओ. तथा क्षेत्र के चिकित्सकों के संबंध में एक सूत्र स्थापित किया है।

१०. प्रत्येक वर्ष होली मिलन तथा ईदमिलन किया जाता है। इन सभाओं के आयोजन में फारमैसूटिकल कंपनी जैसे सेप्टा, प्रोटी, एमक्योर, रेप्टाकोस इत्यादि का सहयोग प्राप्त हुआ है।

सारांश : पश्चिमी क्षेत्र के सभी कार्यो का केन्द्र के अंतर्गत परिचित रहती है जिन समस्याओं का समाधान क्षेत्र में नहीं होता है उनको केन्द्रीय संस्था के पास भेज दिया जाता है। हम आशा करते है कि हमारी प्रगति इसी प्रकार होती रहे तथा हम एक दूसरे के साथ मिलकर सामाजिक एवं चिकित्सा क्षेत्र में एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते रहे है।

डॉ. के. एस. विद्यार्थी
महासचिव

डॉ. पी. के. शर्मा
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

एमगा साऊथ ईस्ट जोन की वर्ष 1995-96 की गतिविधियों के विषय में अध्यक्ष डा० एस० के० आहूजा का व्याख्यान

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हम दि० ८.११.९६ को भगवान धन्वन्तरि दिवस हर्षोल्लास से मना रहे है। इस उपल्क्ष में हमारी जोन की शुभकामनाएँ ।

एमगा की ओर से दिल्ली में विभिन्न जोन्स के गठन के उपरांत मुझे साऊथ ईस्ट जोन का कार्यभार सौंपा गया। मैने अपने कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सर्वप्रथम एमगा सदस्यो की संख्या जो २५ के लगभग थी बढाई जो कि अब दोगुनी हो चुकी है। साथ ही विभिन्न मैडिकल कैम्पस व क्लीनिकल लैक्चर आयोजित करने की रूपरेखा तैयार की गई। इस नीति के अंतर्गत जो गतिविधयाँ तैयार की गई उनका वर्णन निम्न है :-

१) १७ दिसम्बर १९९५ को ओखला फेस -१ में एक फ्री मैडिकल चैकअप व मुफ्त दवाई वितरण का कैम्प आयोजित किया गया । जिसमे श्री अजय अग्रवाल वरिष्ठ अति. आयुक्त, दिल्ली पुलिस मुख्य अतिथि थे। इस कैम्प मे लगभग एक हजार रोगियो का परिक्षण कर मुफ्त दवा दी गई।

इस कैम्प मे जोन के अधिकांशता सदस्यो ने व कई विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपना सहयोग दिया ।

२) अप्रैल १९९६ में सुप्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ डा० शिशिर पाल द्वारा **Acute G.I. Infections & Fluid & Electolyte Imbalance in Children,** विषय पर व्याख्यान दिया । इसे सफल बनाने में डा० नरहरि शर्मा कोषाध्यक्ष साऊथ ईस्ट जोन का विशेष योगदान रहा ।

३) जून १९९६ में **N. P. H. Urology Centre and stone Clinic & Sahi Hospital, Jangpura** के देश विख्यात **Urologist** डा० अनुपम भार्गव ने **management of urinary calculi** विषय पर व्याख्यान दिया । इसे सफल बनाने हेतू डा० दीपक भनोट जनरल सेक्रेट्री व डा० प्रवीन वर्मा तथा डा० विजय गौड का विशेष योगदान रहा ।

४) जुलाई १९९६ में डा० राजीव टण्डन द्वारा **"diagnosis & management"** विषय पर व्याख्यान दिया गया ।

यह था संक्षेप में हमारी जोन की गतिविधियों का ब्यौरा । हमारा ज़ोन एमगा के उज्जवल भविष्य के प्रति हमेशा कार्यरत रहेगा हमारा यह संकल्प है ।

♦♦♦♦♦♦

Scanned by CamScanner

AMENDED LIST OF LIFE MEMBER OF A

FOR YEAR 1995-1996

S. NO.	M. No.	NAME	ADDRESS CLINIC	T. NO. R/C
1.	SAO92	ANIL KUMAR GUPTA	RAJGARH EXTN. GALI - 2 DELHI-31	
2.	SA093	DR. A. K. SHARMA	D-936 DR. AMBEDKAR NAGAR , C/O SEC-1 TIGRI, NEW DELHI	R-6988442
3.	SA094	ASHWANI KUMAR GUPTA	C / O S / W ZONE	
4.	SA097	ALPNA KAPOOR	WZ-257 SHAKUR V. SHAKUR PUR, DELHI-34	R- 77187841
5.	SA098	ASHOK RANA	D-1/193, SULTANPURI DELHI-110041	R-5511958 C-PP5476104
6.	SD040	DEEPAK BHANOT	56A / 13, DDA FLATS KALKA JI EXT. NEW DELHI-110019	6210865
7.	SD041	DHRUV SHARMA	B-33, SUNDER BLOCK SHAKAR PUR DELHI-110092	2431174 2511598
8.	SD042	DINESH SHARMA	SU-95 PITAMPURA DELHI-34	
9.	SG010	GARUD DHAWAJ SHARMA	B-5/7 KRISHNA NAGAR DELHI - 51	R-2244922 C - 3264214
10.	SG011	GAYATRI GOUR	F-27 DAKSHINPURI NEW DELHI-62	6984151 6980809
11.	SH022	HARISH KAPOOR	A-211 SANJAY NAGAR GAZIA BAD [U.P]	8/721309
12.	SH022	HARI VALLABH	5-D, MAIN ROAD RATIA MARG SANGAM VIHAR NEW DELHI-110062	C-6982188
13.	SJ025	JEEWAN SAINI	MANGOL PURI	
14.	SJ026	JITENDER SINGH YADAV	3929 GALI MANDIR WALI PAHARI DHEERAJ DELHI-110006	
15.	SK006	K. S. BHATIA	11, SHARAD VIHAR, DELHI-92	R-2150734 C-2441703
16.	SK038	KAPIL KUMAR GUPTA	334 SANT NAGAR EAST OF KAILASH, NEW DELHI-65	6967757 6855015
17.	SM076	MAHESH CHAND SINGLA	31-A LALKUAN M. B. ROAD BADARPUR, NEW DELHI-44	6813822 8 -274658
18.	SM078	M. K. RATHI	C-94, DAKSHIN PURI NEW DELHI-62	6801594
19.	SM080	MOHD. ASAD	6598/A QILA QADAM SHRIAT, PAHAR GANJ, NEW DELHI-55	C-3541219
20.	SM067	MUSTFA KAMALUDIN	6347, ST. ISHAWARI PRD. BARA HINDU RAO, DELHI-110006	

Scanned by CamScanner

4 स्वास्थ्य टाइम्स, नई दिल्ली, 4 सितम्बर, 1996

अंग्रेजी दवा क्यों लें? इलाज के और भी तरीके हैं

कार्यालय प्रतिनिधि

हिन्दुस्तान की 30 प्रतिशत आबादी ही आधुनिक दवाओं का इस्तेमाल करती है। बाकी सत्तर प्रतिशत जनता अब भी पारंपरिक दवाओं पर निर्भर है।

इंडिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन (इटपो) के प्रमुख के.के. माथुर ने यह जानकारी 'मिस्टिक इंडिया' प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देते हुए कही।

उन्होंने कहा, 'पारंपरिक दवाओं और चिकित्सा विधियों को प्रोत्साहन देने के इरादे से इस प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।' केन्द्र सरकार के भारतीय चिकित्सा और ... आमतौर पर कोई साइड इफेक्ट नहीं होता और अब विदेशों में भी इन्हें पेटेंट कराया जा रहा है। इसीलिए अब अपने देश के लोगों को इसका महत्व समझ में आ रहा है। इन दवाओं और चिकित्सा विधि को और लोकप्रिय बनाने के इरादे से 13 सितम्बर से 17 सितम्बर तक प्रगति मैदान में 'मिस्टिक इंडिया' प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है।

इस प्रदर्शनी में आयुर्वेदिक, यूनानी, जड़ी-बूटी औषधियां, होम्योपैथी, रंग चिकित्सा, एक्यूप्रेशर आदि वैकल्पिक पद्धतियों के प्रतिष्ठित चिकित्सक और ज्योतिष, हस्तरेखा ... जाएगा।

'मिस्टिक इंडिया' मेले के दौरान 14 से 17 सितम्बर को प्रतिदिन शाम 6-30 बजे हंसध्वनि थियेटर में रामायण की सामयिक प्रस्तुति राम कथा-'राम कहानी' का मंचन किया जाएगा। राम कथा का निर्देशन श्यामानंद जालान और नृत्य संचालन चेतन जालान ने किया है।

मेला हर रोज सुबह 10 बजे से रात 9 बजे तक आम जनता के लिए खुला रहेगा।

'Ayurved docs can use allopathy methods'

NAGPUR, Aug. 27.

Pandit Shiv Karan Sharma Chhangani, President, Ayurved Mahasammelan and Vice-President of Bharatiya Chikitsa Kendriya Parishad has in a press note claimed that the Ayurved graduates are authorised to prescribe medicines of allopathy as they are taught to use them during their graduation.

They are also authorised by the state and central government to perform surgery, gynaecological practices, etc by using modern therapies. Pandit Chhangani has also made it clear that the recent ruling of the Supreme Court in the case of Homoeopathic practitioner Dr Ashwin Patel of Bombay is not applicable to Ayurved graduates.

He said according to IMCC Act 1970 the Ayurved graduates can use modern therapy in their profession. He said that the Bharatiya Chikitsa Kendriya Parishad on the request of Central Government has included all the subjects of National Health Scheme and modern therapy in the curriculam prescribed for the Ayurved graduation course. That is why many of the Ayurved graduates are being employed at Government Hospitals also.

He said, apart ... vernment in one ... istered Ayurve... dern therapy. He ... having vested ... ours that the ... ved to use mod... le also said th... have not bee... icines are free ... the patients ... ayurvedic m... e allopaths ... cians are us...

लाख को पोलियो की दवा पिलाई गई

पोलियो की बीमारी के कारण ग्रस्त न जाये इसके लिए जरूरी है कि इस अभियान को देश के प्रत्येक गांव के कोने-कोने तक ले जाया जाए।

उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देश जब इस अभियान को चला कर पोलियो को विदा कह चुके हैं तो कोई बात नहीं कि भारत में इस कार्यक्रम के राष्ट्रीय स्तर पर चलने के बाद हमें सफलता न मिले। उन्होंने कहा कि अभियान से हमें बच्चों की जिंदगी बचाने में काफी मदद मिलेगी।

उन्होंने अभियान में सहयोग देने वाले बच्चों और स्वयं सेवी संस्थाओं की भूमिका की सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री खुराना ने कहा कि हमें गर्व है कि देश को पोलियो मुक्त बनाने में 'दिल्ली' ने नेतृत्व प्रदान किया है। उन्होंने अभियान की सफलता के लिए अभिभावकों का धन्यवाद किया जिनके उत्साह के कारण गत वर्ष १२ लाख से अधिक बच्चों को पोलियो खुराक दी गई जबकि सरकार ने लक्ष्य ७ लाख बच्चों का रखा था।

स्वास्थ्यमंत्री डा. हर्षवर्धन ने कहा कि उन्हें आशा है कि वर्ष १९९७ तक दिल्ली को पूर्णया पोलियो मुक्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभियान को सफल बनाने के उद्देश्य से ही सरकार ने आज 'दिल्ली' में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था।

राजधानी में लाखों बच्चों को दवा पिलाने के लिए १६४० केंद्र स्थापित किये गये थे। अनेक केंद्रों पर प्रातः ९ बजे से पूर्व ही अभिभावकों की बच्चों को लेकर लाइनें लग गई जबकि दवा देने का घोषित समय सुबह ९ बजे से सायं ४ बजे था।

डा. हर्षवर्धन ने बताया कि पोलियो मामलों पर हर स्तर पर नजर रखी जा रही है। पोलियो अभियान के बाद खतरनाक पोलियो जिससे विकलांगता आ जाती है के मामलों में ३० प्रतिशत की कमी आयी है।

उन्होंने कहा कि भारत से पूर्व पल्स पोलियो अभियान २५ देशों में सफलतापूर्वक ... इसलिए भारत में इसकी विफलता की ... नहीं है। उन्होंने कहा कि अभियान की ... सफलता समाज पर निर्भर करती है ... इस अभियान के प्रति लोगों में जो ...

उससे स्पष्ट है कि भारत जल्दी ही पोलियो मुक्त देश की सूची में आ जाएगा।

उन्होंने कहा कि भविष्य में जरूरी हुआ तो पोलियो के प्रत्येक मामले को 'रिपोर्ट' करने के लिए कानूनी प्रावधान का सहारा लिया जाएगा।

इसी प्रकार अनेक केंद्रों पर देर शाम तक भी खुराक दी गई। डा. हर्षवर्धन ने बताया कि अभियान के प्रथम चरण में गत ९ दिसम्बर को दिल्ली में १२,३२,४०६ बच्चों को पोलियो की दवा दी गई थी।

मानसरोवर पार्क के राजकीय स्कूल में यहां के १६ छात्रों का एक दल क्षेत्र के घरों में जाकर अभिभावकों को बच्चों को केंद्र पर ले जाने को दिन भर प्रेरित करता रहा। अपने अध्यापक श्री चंद्रप्रकाश के नेतृत्व में दिग्विजय राय, सचिन, अशिषगुप्ता, सुशील कुमार और यशपाल ने अनेक बच्चों को पोलियो खुराक दिलाने में मदद की।

पल्स पोलियो अभियान में राजधानी की अनेक संस्थाओं और स्वयंसेवी संगठनों ने भी भरपूर सहयोग दिया। आयुर्वेदिक स्नातक चिकित्सकों की संस्था (एमगा) के प्रवक्ता डा. आर.पी. पांचाल ने बताया कि उनके संगठन की ओर से २०० स्थानों पर केंद्र स्थापित किये गये जिनमें ५० हजार से ज्यादा बच्चों को खुराक दी गई।

दैनिक पंजाब केसरी, दिल्ली

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

नई दिल्ली, 16 दिसम्बर (न.प्र.) आल इंडिया इंडियन मैडिसन ग्रेजुएट्स एसोसिएशन (एमगा) की ओर से कल रविवार को निःशुल्क चिकित्सा शिविर 126, 127 डी एम आई डी गेट के सामने ... कालोनी ... में लगाया जाएगा।

एसोसिएशन के सचिव डा. ... के अनुसार शिविर में मुख्य अतिथि ... आयुक्त ... होंगे तथा अध्यक्षता एमगा अध्यक्ष डी.सी. शर्मा करेंगे। शिविर में एसोसिएशन के कई सदस्य भाग लेंगे तथा अनेक चिकित्सा विशेषज्ञ शिविर में आने वाले रोगियों का उपचार करेंगे।

17-12-1995

'हरियाणा को ठेस'

नई दिल्ली, 15 जनवरी (नि.)। आल इंडिया इंडियन मैडिसन ग्रेजुएट्स एसोसिएशन (एमगा) के अध्यक्ष डा. डी.सी. शर्मा व महासचिव डा. ... शर्मा ने कहा है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भजन लाल ने ...

उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे में आने से डाक्टर चिंतित

नगर संवाददाता

नई दिल्ली, 14 नवम्बर।

उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे में चिकित्सा व्यवसाय के आने से चिकित्सकों का एक बड़ा समुदाय चिंतित हो गया है। इस समुदाय का कहना है कि सरकार के स्तर पर इसके लिए पर्याप्त तैयारी नहीं हुई है। हालांकि बहुत से डाक्टरों का कहना है कि न्याय प्रक्रिया में विशेषज्ञ डाक्टरों को शामिल किया जाना जरूरी है।

हार्टकेयर फाउंडेशन के उपाध्यक्ष डा. ... अग्रवाल ने कहा है कि इस निर्णय से ... चिकित्सा परिषद और स्वास्थ्य मंत्रालय ... बारे में मार्ग निर्देशिका जारी करनी ...

... के पैसे लिए जाते हैं। दूसरा केन्द्रीय स्वास्थ्य ... योजना में आने वालों से प्रति वर्ष शुल्क लिया जाता है। उन्होंने कहा कि यह संभव है कि सेवाएं भी इस कानून के दायरे में आ जाएं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता न्यायालय के निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए।

ਸਿਹਤ ਦਾ ਅੱਧਾ ਬਜਟ ਆਈ. ਐਸ. ਐਮ. ਨੂੰ ਸੌਂਪਣ ਦੀ ਮੰਗ

ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ, 15 ਸਤੰਬਰ (ਨਿਜੀ ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ) -ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਮੈਡੀਕਲ ਗਰੈਜੂਏਟਸ ਐਸੋਸੀਏਸ਼ਨ (ਐਮਗਾ) ਨੇ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਮੰਗ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਕੁੱਲ ਸੁਆਸਥ ਦਾ 50 ਪ੍ਰਤੀਸ਼ਤ ਬਜਟ ਇੰਡੀਅਨ ਸਿਸਟਮ ਆਫ ਮੈਡੀਸਨ (ਆਈ. ਐਸ. ਐਮ.) ਨੂੰ ਸੌਂਪ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਕਿ ਸਵਾਸਥ ਵਿਭਾਗ ਤੋਂ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਇਆ ਆਈ. ਐਸ. ਐਮ. ਵਿਭਾਗ ਪੂਰਨ ਵਿਕਸਤ ਹੋ ਸਕੇ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਸੰਨ 2000 ਤਕ ਪੂਰਨ ਸਵਾਸਥ ਏਟ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸਫਲਤਾ ਮਿਲ ਸਕੇਗੀ।

भजनलाल पर चिकित्सा पेशे की साख खत्म करने का आरोप

नगर संवाददाता

लाखों बच्चों को पोलियो की दवा पिलायी गयी

दैनिक ट्रिब्यून, सोमवार, 4 दिसम्बर, 1995 (11)

एमगा की भजनलाल सरकार को चेतावनी

MUKESH PROPERTIES
Building Material Supplier & Cement Store
Head Office : A-1/428, Madhu Vihar, Datta Market, Uttam Nagar, N.D. 59
Branch Office : D-43, Bharat Vihar, Uttam Nagar, New Delhi - 59
Branch Office D-778, Defence Enclave, Madhu Vihar,
Main Bharat Vihar Road, Raja Puri, Uttam Nagar, N.D. - 59

Scanned by CamScanner

दिनाक 03 दिसम्बर से 9 दिसम्बर तक — भारतीय उद्घोष समाचार

स्वस्थ शरीर केवल आयुर्वेद ही प्रदान कर सकता है!

उद्घोष समाचार

नई दिल्ली - पिछले दिनो दिल्ली के शाह सभागार मे आल इंडिया इण्डियन मेडिसिन ग्रेजुएटस एसोशियेशन (एमगा) द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भगवान धन्वन्तरि जयन्ती बडी धूमधाम से मनाई गई। इस समारोह का उद्घाटन माननीय श्री पी0 एस0 घटोवार, स्वास्थ्य राज्य मत्री, भारत सरकार ने किया समारोह मे मुख्य अतिथि माननीय श्री मदन लाल खुराना, मुख्य मत्री दिल्ली व अध्यक्षता माननीय डा0 हर्षवर्धन स्वास्थ्य मत्री, दिल्ली ... थी।

... मत्रालय स्वतन्त्र रुप से केन्द्र व राज्य सरकारो मे स्थापित किया जाये ताकि आई एस एम एच का प्रचार प्रसार व विकास पूर्ण ढ्ग से सम्भव हो सके। डा0 गौतम ने बताया कि आयुर्वेद द्वारा न केवल रोगीयो के रोगो का निवारण किया जाता है परन्तु यह एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा जीवन को स्थाई बन... आयुर्वेद रसायन से ... प्रतिरोधक क्षमता ... है।

एमगा के ... के0 धमीजा ने ... कि जिस प्रका...

माननीय पी. एस. घटोवार ने आयुर्वेद विकास के लिये हर सम्भव सरकारी सहायता प्रदान करने पर बल दिया व आयुर्वेद के विकास प्रचार व प्रसार के लिये आह्वान किया। माननीय मुख्यमत्री दिल्ली सरकार मदन लाल खुराना ने दिल्ली मे एक अद्भुत आयुर्वेद शोध सस्थान खोलने की घोषणा की जो की सराहनीय कार्य ...

— धितरण

दिल्ली को पोलियो मुक्त बनाने का अभियान शुरू

नगर संवाददाता

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर।

हरियाणा ने आयुर्वेद को ठेस पहुंचाई है'

उपभोक्ता

निजी चिकित्सक उपभोक्ता कानून के दायरे में

एमगा सदस्यों का हरियाणा भवन पर प्रदर्शन

6-12-1995

इलाज और महंगा होने ...

डॉक्टर लापरवाही करके बच नह...

परिदृश्य

पुष्पा गिरिमाजी

हिन्दुस्तान

नई दिल्ली, बुधवार, ६ दिसम्बर, १९९५

एमगा द्वारा हरियाणा भवन पर प्रदर्शन

नीम हकीमों को बढ़ावा देने पर एमगा को आपत्ति

...भजनलाल ... चेतावनी

एमगा द्वारा फ्री मेडि...

10-12-1995

...ल्स पोलियो अभियान : देशभर के साढ़े 7 करोड़ बच्चों को दवा पिलाई

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसी, संवाददाता) पोलियो के विरुद्ध अभियान के तहत देश भर में आज तीन वर्ष से कम उम्र के साढ़े सात करोड़ बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई। ...

(शेष पृष्ठ 12 पर)

नीम और करेले से दवा ब...

राष्ट्रप... शंकरदयाल शर्मा ने देशी चिकि...

भारतीय उद्घोष — रविवार दिना...

Scanned by CamScanner

नई दिल्ली, शुक्रवार, १६ फरवरी, १९९६

…चिकित्सा की सम्यक … पद्धति अपनाएं : राष्ट्रपति

मरीजों के इलाज में लापरवाही की शिकायत

नगर संवाददाता

Stress on integrating ISM with allopathy

HT Correspondent

NEW DELHI, Aug 27 — Vice President K. R. Narayanan has urged big hospitals to explore the possibility of integrating the traditional Indian systems of medicine with the Western system as they have been found to be effective in the cure of certain prominent diseases.

The application of thousands of years of knowledge and wisdom of Indian medical systems to modern scientific knowledge of allopathy would be an immense contribution to medical science and … in the world, he felt.

The Vice President was speaking at a function on Sunday here … inaugurated the new wing of … National Heart Institute (NHI). … other prominent participants … the occasion were Delhi's … Sahib Singh Verma, … Minister Dr Harsh … Lt Governor P. K. …

… observed that the … was a very … in and the … was very … role play … Institute … care to … other … Padmavati … Dr O. P. … a satellite ce… planned to be … which had a … but no …

… specially prevention of rheumatic heart disease, hypertension and coronary artery diseases.

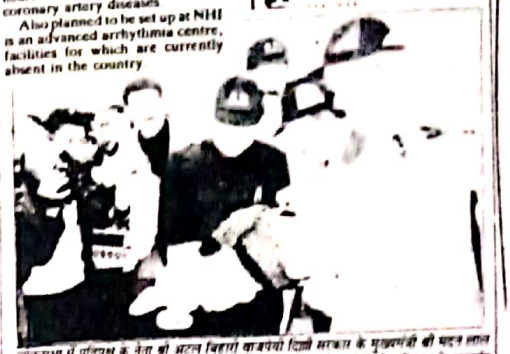

Also planned to be set up at NHI is an advanced arrhythmia centre, facilities for which are currently absent in the country.

उपभोक्ता कानू…

लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिल्ली सरकार के मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना, दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री श्री हर्षवर्धन रविवार को मंदिर मार्ग पर पोलियो अभियान के अंतर्गत बच्चे को दवाई पिलाते हुए। (छाया : डी पी वर्मा)

पोलियो मुक्त अभियान : 12 लाख बच्चों को दवा पिलाई

दिल्ली, 20 जनवरी (व प्र)। दिल्ली में आज … अभियान का दूसरा चरण सम्पन्न … में करीब 3640 केन्द्रों पर करीब … को पोलियो की दवा पिलाई गई।

हरियाणा में आयुर्वेद के आधार पर चिकित्सकों का पंजीकरण

दिल्ली के डाक्टरों में रोष, कल हरियाणा भवन पर प्रदर्शन

डाक्टरों का हरियाणा भवन पर प्रदर्शन

नगर संवाददाता

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। अखिल भारतीय इंडियन मेडिसिन ग्रेजुएट्स एसोसिएशन ने अपनी मांगों के समर्थन में आज हरियाणा भवन पर प्रदर्शन किया और प्रभारी को ज्ञापन भी दिया। एसोसिएशन की मांग है कि हरियाणा में नीम-हकीम डाक्टरों का पंजीकरण किया जाए।

गंभीर रूप से बीमार मरीज को भर्ती नहीं किया तो सजा होगी

नीम हकीमों के पंजीकरण के विरुद्ध हरियाणा भवन पर प्रदर्शन

भारतीय उदय समाचार

…जा क्षेत्र

दिल्ली चिकित्सा परिष…

चर्चा

अतुल कुमार श्रीवास्तव

चिकित्सा तंत्र की

अस्पताल के गंदे फर्श पर तड़पता हुआ मरीज, नारेबाजी करते डॉक्टर, बेचारा-सा बना अस्पताल प्रशासन और राजनीति के दलदल में डूबा स्वास्थ्य मंत्रालय। यह परिदृश्य है हमारी उस सेवा का जहां डॉक्टर को ईश्वर का दूसरा रूप माना जाता है। ... चिकित्सक इस ... भर्ती थे।

इस स्थिति में थोड़ी राहत ... संस्थाओं, रेलवे व अन्य संगठनों द्वारा चलाये जा रहे कुल 34 अस्पतालों से मिलती है। दूसरे शब्दों में राजधानी में कुल 82 अस्पताल हैं। थोड़ा और आगे बढ़ें, इन अस्पतालों में मरीजों के बिस्तर की संख्या देखें तो सरकारी, गैर सरकारी अस्पतालों व ... को मिलाकर भी बिस्तरों की 2 हजार है। केवल अस्पतालों की 108 है। यानी ...

...न व चिकित्सा व्यवसाय

— भारत भूषण —

...का प्रावधान है। परंतु न्याय प्रणाली की जो ...ार 'वादकारी का हित ...हो चुकी है और वकीलों ...य प्राप्त करना एक बेहद ... प्रक्रिया हो गया है। ... सेवाओं को कोपरा के ... आयोग के फैसले का ... चिकित्सा संगठनों और ...न्या क्योंकि वहां दावे की ...ई फीस दाखिल करने की ...हां वकीलों की उपस्थिति ...कार पीड़ित को न्याय की ...और सुबाऊ हो गई। यही ...ान ने शोरगुल मचाया। ... वर्ग चरित्र (उच्च व ...ाया शहरी) है उसमें

अदालत के निर्णय से भी दरअसल कोपरा जैसी व्यवस्था की जरूरत ही उजागर हुई है।

तीन सदस्यों की पीठ (न्यायमूर्ति सर्वश्री कुलदीप सिंह, बी. एल. हंसारिया और एस.सी. अग्रवाल) की ओर से फैसला सुनाते हुए न्यायमूर्ति अग्रवाल ने यह भी कहा कि डाक्टरों को कोपरा के तहत समझे जाने के बावजूद लापरवाही के आधार पर मुआवजे संबंधी दावों के निपटान में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है और यह भी कि दीवानी अदालतों में इस तरह के दावों के संबंध में लागू सिद्धांत कोपरा के तहत गठित उपभोक्ता मंचों पर भी लागू होंगे।

उपभोक्ता मंचों में मामला दायर करते वक्त कोई फीस नहीं देनी होती इसलिए न्यायमूर्ति अग्रवाल के मुताबिक किसी डाक्टर, अस्पताल और नर्सिंग होम के द्वारा प्रदत्त सेवा में कोताही से हुई क्षति का खामियाजा आसानी से उगाहा जा

...य ने गत १३ नवंबर को अपने एक फैसले में कहा ...ा कानून चिकित्सा व्यवसाय पर भी लागू होते हैं, ...सा के लिए शुल्क न लेने वाले सरकारी अस्पतालों ... के दायरे से बाहर रखा गया है। इस फैसले से ... सेवाओं के क्षेत्र में हलचल मची हुई है और इंडियन ...सेएशन टीका-टिप्पणी में लगा हुआ है। चिकित्सा ...स समय व्याप्त लापरवाही और बेबस मरीजों से ...ई के आलम को देखते हुए सर्वोच्च न्यायालय का ...त में एक सही कदम है। लेखक ने चिकित्सा ... उससे संबंधित संगठनों की भूमिका पर प्रकाश ...व्यपरक विवेचन प्रस्तुत किया है और चिकित्सा ... में भी सहकारिता और लोकपाल जैसी व्यवस्थाओं ...ही है।

...ती के प्रति 'मैत्री और ...ा-हिकारत का भाव होता ...क पहले आंदोलन करके ...यालय की लगभग ...

सकेगा और न्यायमूर्ति अग्रवाल ने आगे ... कहा कि कोपरा ऐसे ... सस्ती ...

...का गठन अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के ...

एड्स के उपचार के लिए वरदान है देसी दवा

लखनऊ, 13 दिसम्बर (प्रेट्र)। देसी जड़ी-बूटियों से बनी औषधि का एड्स के उपचार के रूप में सकारात्मक प्रभाव पाया जाना इस जानलेवा बीमारी या जीव रसायन विज्ञान के लिए एक वरदान या चमत्कारिक आविष्कार ही माना जाएगा। एक चिकित्सक के अनुसार देसी औषधि के प्रयोग से एड्स पीड़ित मरीजों में सुधार के लक्षण देखे गये है। उनका स्वास्थ्य तेजी से सामान्य होता रहा है तथा उनके जीवन में पुन: उल्लास उमड़ रहा है।

किंग जार्ज मेडिकल कालेज (लखनऊ) के पूर्व सहायक निदेशक तथा देसी चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा. एन. सिंह ने इस बात से सहमति जतायी है कि डा. एस.बी. सिंह द्वारा किये गये उक्त दावे का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा इस संदर्भ में किये जा रहे अनुसंधान में उनके साथ सहयोग किया जाना चाहिए।

डा. एन. सिंह ने बताया कि प्राथमिक परीक्षण के आधार पर एड्स संबंधी लक्षणों से ग्रस्त पाये गये कुछ मरीजों का उपचार डा. एस.बी. सिंह की देखरेख में चल रहा है। देसी औषधि के उपयोग से इन मरीजों में डायरिया व बुखार में तेजी से सुधार पाया गया है तथा रक्त संबंधी दोष में भी सुधार देखा गया है। इस प्रकार इन मरीजों की उम्र बढ़ रही है तथा इनका जीवन खुशहाल हो रहा है।

डा. एस.बी. सिंह ने दावा किया कि उनके पास आये एक जोड़े (पति-पत्नी) में परीक्षण के दौरान एच.आई.वी. विषाणु पाये गये, किन्तु उपचार के बाद इन दोनों ही मरीजों में एच.आई.वी. नेगेटिव पाया गया।

डा. एन. सिंह ने कहा कि हालांकि जानलेवा विषाणु एच. आई. वी. (एड्स) के निदान में देसी दवा का पर्याप्त सकारात्मक प्रभाव पाये जाने से देसी दवाओं के प्रति काफी आत्मविश्वास बढ़ा है, लेकिन प्रामाणिक निष्कर्ष के लिए इस संदर्भ में अभी और व्यापक अध्ययन व परीक्षण करने की आवश्यकता है।

डा. एस.बी. सिंह, जिन्होंने इस औषधि को तैयार किया है, का कहना है कि इस दवा से तीन से छह माह के भीतर मरीज को एड्समुक्त किया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि इस दवा के प्रयोग करने के सात दिन के भीतर ही मरीज में सुधार होने लगता है तथा उसकी भूख बढ़ने लगती है, लेकिन उन्होंने इस औषधि के सूत्र को तब तक बताने से इनकार किया है, जब तक कि इसका अधिकृत रूप से पेटेन्ट नहीं किया जाता।

दिमागी मलेरिया व एड्स विषाणु परस्पर प्रतिरोधी

नयी दिल्ली, 13 दिसम्बर (प्रेट्र)। दिमागी मलेरिया तथा एड्स के विषाणु परस्पर प्रतिरोधी होते हैं, अर्थात जहां दिमागी मलेरिया के विषाणु मौजूद हों वहां एड्स विषाणुओं का प्रवेश नहीं होता और जहां एड्स विषाणु मौजूद हों, वहां दिमागी मलेरिया का संक्रमण संभव ... दावा पेरिस स्थित फार्मा... की विज्ञानी ... इन्स्टेशन पर ... हां दिमागी ... हो तो वे ... प्रभावी ... कि ये ... ने है। ... इससे चिकित्सा विज्ञानियों को एड्स ... विकास के लिए एक दिशा मिलेगी।

INDIAN EXPRESS NEW DELHI
TUESDAY DECEMBER 19 1995

Free medical camp held

A free medical camp was organised by the southeast branch of the All India Indian Medicine Graduates Association (AIIMGA) at Okhla Phase-1.

Many medical specialists of south Delhi as well as Aryuvedic experts offered free services to poor patients. The camp was inaugurated by the AIIMGA national president, Dr D C Sharma.

नई दिल्ली, मंगलवार, ६ अगस्त, १९९६ (५)

...द विधेयक में संशोधन करने की मांग

...लफेयर एसोसिएशन के ...ुल क्यूम और तिब्बिया ... अध्यक्ष श्री शकील अहमद ...या कि भारतीय पद्धति के ...धेयक की धारा (२) और ...र गहरा रोष है। ...कि प्रस्तावित धाराओं में केवल ... चिकित्सक के रूप में परिभाषित ...जिनके पास आधुनिक चिकित्सा ...धी) की डिग्री है। इसी धारा की ... में केवल एलोपैथिक दवा को ही ...रूप में मान्यता दी गई है और आयुर्वेदिक और यूनानी दवाओं को छोड़ दिया गया है।

विधेयक की धारा (२७) के अनुसार आधुनिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों के अलावा जो भी व्यक्ति एलोपैथिक दवाओं का प्रयोग करेगा उसे ६ माह की कैद और ५ हजार रुपए तक जुर्माने की सजा हो सकती है।

भारतीय पद्धतियों के चिकित्सकों ने इस धारा का तीखा विरोध करते हुए इसे रद्द करने या स्पष्ट रूप से उल्लेख करने को कहा है कि यह भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के प्रशिक्षित चिकित्सकों पर लागू नहीं होगी।

डा. पांचाल ने कहा कि राजधानी में एलोपैथिक डाक्टरों और भारतीय चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों की संख्या लगभग बराबर (१० हजार) है। ऐसे में अगर विधेयक में इस तरह के प्रावधान किए गए तो केंद्रीय चिकित्सा परिषद अधिनियम १९७० के अंतर्गत भारतीय चिकित्सा के चिकित्सकों को एलोपैथिक दवाएं प्रयोग करने का जो अधिकार दिया गया है वह ही बेकार हो जाएगा।

इन चिकित्सकों का भारतीय जनता पार्टी विधायक के एक बड़े समूह द्वारा समर्थन करने के बाद सरकार ने विधेयक को बजट अधिवेशन में पेश नहीं किया। सूत्रों के अनुसार पार्टी की एक बैठक में मुख्यमंत्री ने विधेयक में उचित संशोधन करने का आश्वासन दिया है।

...रान लापरवाही और ... की सुनवाई उपभोक्ता मंचों ...दालतों द्वारा किए जाने की ... थी। दिल्ली की दीवानी ...

...ड एसोसिएशन ... सर्वथा असंगत और निहित स्वार्थों से प्रेरित था। यह आंदोलन क्यों किया गया और अब सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध जो अवमाननात्मक टिप्पणी की जा रही है तो उसके पीछे एसोसिएशन का इतिहास और उसमें चल रही राजनीति है। उल्लेखनीय है कि एसोसिएशन

सबसे ... व्यवसाय ... जाए। चाहे ... आम जनता ... करना चाहिए ... न सिर्फ सर्वसुलभ हो बल्कि उस पर आनेवाला खर्च भी वहन किया जा सके।

Scanned by CamScanner

21.	SM068	**MAHESH SHARMA**	SHOP NO.52/36, D-1 GALI NO - 16 NAI BASTI, ANAND PARVAT NEW DELHI-110005.	R-7453053 C-572288
22.	SM069	**MANSOOR AHD.**	NEHRU NAGAR, NEW DELHI-6	
23.	SN028	**N. K. CHHAVNIA**	B-49 , AMBEDKAR NAGAR SEC-11 NEW DELHI-62	6986854 6424172
24.	SN030	**NEERJA GOYAL**	CP-45, PITAMPURA, DELHI-34	R-7251929
25.	SNO31	**NARESH BANSAL**	T-24/B INDIRA COLONY NARELA DELHI-40	C-7281657 R-7281740
26.	SP036	**PARDEEP KALRA**	M-BLOCK, H NO. 127, SAROJINI NAGAR DELHI-67	
27.	SR090	**R. S. MIRGAN**	11, CENTRAL MARKET DAKSHIN PURI, AMBEDKAR NAGAR, NEW DELHI-62	C6986431 R6983231
28.	SS151	**SANTOSH GAUTAM**	234, MOHALLA MAHARAM SHAHDRA, DELHI-110032	
29.	SS102	**SHASI KANT**	2/61TELIWARA SHAHDRA DELHI-32	R-2206866
30.	SS152	**SATISH KUMAR DHAWAN**	C/O Dr. S. K. AHUJA [SW ZONE]	
31.	SS153	**S. K.SWAMI**	405A, AMBEDKAR MARG RAJ NAGAR, PART-11 PALAM COLONY NEW DELHI - 45	R5610305 R-5619101
32.	SS154	**S. M. HUSAIN**	7638, GALI MUSHI ABDUR RAHEEM QURASHI NAGAR, SADAR BAZAR DELHI - 110006	
33.	SS155	**SARFRAJ AHMED**	T - 15, GALI NO. 15 FACTORY ROAD NABI KREEM DELHI - 6	R - 7153416
34.	SS156	**S. M. YAMEEN**	63, L. I. G. SARAI KHALIL, SADAR BAZAR, DELHI - 6	R - 7514786
35.	SS157	**SUNITA GARG**	GARG HOSPITAL, MAIN MUBARK PUR, ROAD KINIARI NAHAR NANGLOI DELHI - 41	C - 5475729
36.	SY010	**YOGESH KUMAR**	D - 6 / 139, SECTOR - 6 ROHINI DELHI - 85	C - 7173113 R - 7171491
37.	SV004	**UMAKANT SHARMA**	55 - A, RAM NAGAR EXT. KRISHNA NAGAR, DELHI - 57	C - 2246962
38.		**MRS. SWARAN KAUR**	177, NIT, JAWAHAR COLONY FARIDABAD	
39.		**DR. SUDARSHAN KUMAR SHARMA**	H. No. 3608, Gali Mandir Wali Chawri Bazar, Delhi-6	

Scanned by CamScanner

40.	DR. SANJAY JAIN	A. P. 54, Shalimar Bagh, Delhi-52	7132738
41.	DR, SANJAY KUMAR CHAUHAN	Res/Clinic A-880, Shastri Nagar, Delhi-52	7521785 7536419
42.	DR. HARSH GUPTA	Res/Clinic : 330 Bharat Nagar, Delhi-52	7212460
43.	DR. AJAY BANSAL	D-66 Arya Samaj Road, Uttam Ngr, N. D.-59	5535149

With Best Compliments From :

AIIMGA DEPOT

MEMBERS MAY CONTACT FOR
FREE COPER-T, MALA-N & ALL VACCINES
at

Head Office :

NIJHAWAN DIAGNOSTIC CENTRE

H-21, Karam Pura, New Delhi - 110015
Ph. : 5448538 Fax : 011-5419995

Sub Depot :

DR. J.S. PANWAR *Phone : 5701831*
2236/2 Khampur, New Delhi - 110008

DR. S.P. PANDEY *Phone : 7225728*
Meenaxi Clinic
K. 716, Jahangirpuri, Delhi-33

DR. N.K. DHAMIJA *Phone : 2241577, 2430125*
Dhamija Medical Centre
7/33, Vishwas Nagar, Yudhister Street,
Shahdra, Delhi - 110032 Phone : 2241577, 2430125

DR. HARBHAJAN SINGH
1/45,Govindpuri, New Delhi- 110009. Phone : 6472077

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :

ANIL GUPTA'S ULTRASOUND CENTRE

Dr. Anil Gupta
M.D. (Radio Diagnosis)
formerly senior ultrasonologist
Dr. Ram Manohar Lohia Hospital
Lady Hardinge Medical College
& Assoc Hospital

Clinic cum Resi :
B-40, Rajan Babu Road,
Adarsh Nagar, Delhi-110033.
Tel. : 7225986, 7416467
Pager No. : 9628-001606

With Best Compliments From :

ADARSH HOSPITAL

232, Sarai Pipal Thala, Main G. T. Road, Adarsh Nagar, Delhi-110033

Facilities Avilable :

All Surgical, Gynaecological, Medical & I.C.C.U., Nursery, Trauma, Infertility, ENT & EYE Laparoscopy, Laparoscopic Sterilisation, M.T.P. Delivery, Vaccinations, Ultrasound-XRAY E.C.G. Etc.

AMBULANCE 24 HOURS

Scanned by CamScanner

झाँसी

बैद्यनाथ

महिलाओं की अपनी औषधि

झाँसी

बैद्यनाथ

सुन्दरी कल्प

आज की नारी के लिये

मेरी लाड़ले के लिए वही असली आयुर्वेदिक *बैद्यनाथ* जन्मघूँटी.....

जो नानी माँ ने माँ को और माँ ने मुझे दी *बैद्यनाथ* जन्म घूँटी बच्चे की प्रतिकार शक्ति बढ़ाती है। और खाँसी, बुखार, उल्टी व दस्त से बचाती है।

झाँसी

बैद्यनाथ

जन्मघूँटी

बढ़ते बच्चों की पसन्द

कब्ज से मुक्ति !
जीवन में आए स्फूर्ति !

कब्जहर दाने जो खाने में आसान, असर में शक्तिमान सुबह-शाम की व्यस्त दिनचर्या में आप कब्ज से परेशान हैं तो आप जिन्दगी नीरस लगती है। ऐसे में बैद्यनाथ झांसी कब्जहर दाने के प्रयोग से कब्ज के साथ-साथ थकान ढीलापन सिरदर्द और मानसिक तनाव को कहें अलविदा!

झाँसी

बैद्यनाथ

कब्ज-हर दाने

हर सुबह हो राहत भरी !

सोने की शक्ति से युक्त

झाँसी

बैद्यनाथ

वीटा-एक्स गोल्ड

शक्ति और जोश से भरपूर

पैक पर *बैद्यनाथ* झाँसी का पता देखकर खरीदें

Scanned by CamScanner

With Best Compliments
From

SHARE THE HEALING MAGIC OF UNEXO'S SPECIALITIES

KUFREX Syrup

Effective approach to the irritated throat and instantly relieves cough

LIVONEX Drop/Syrup/Tablets

To protect the liver and correct the liver dysfunction.

UNEXOZIM Tablets/Syrup

Well reputed therapy for its unique & quick action in digestive disorders.

CABRON Tablets

Tones-up the whole nervous system, improves the pulse rate and check the blood pressure.

FEROLIN FORTE Tablets

An ideal haematinic based on " Dhatri Loh'.

Manufactured in India by :
UNEXO LABORATORIES PVT. LTD.
Industrial Area, Shalimar
Delhi - 110052
Phone : 7212272

For further information please contact :
M/s VEENU MEDICAL AGENCIES
27, Kewal Park Azad Pur,
Delhi-110 035
Phone : 7248427, 7244268

Scanned by CamScanner

SHALAKS

MAKERS OF
OLEMESSA BABY MASSAGE OIL
AND
SKINSECT G. B. H. C. SOAP

TAKES PLEASURE IN PRESENTING
THE FOLLOWING USEFUL PREPARATIONS

ALBRODO TABETS & SUSPENSION	ALBENDAZOLE
BRUFAMOL KID DISPERSIBLE TABLETS	IBUPROFEN & PARACETAMOL
OLYMOX KID DISPERSIBLE TABLETS	AMOXCYCILLIN
PHENZEE ELIXER	NON-ALCOHOLIC PROMETHAZINE SYRUP
BREX SYRUP & TABLETS	BROMHEXINE & PSEUDOEPHIDRINE
ANTACID MAGACONE SUSPENSION	MAGALDRATE & SIMETHICONE

For Further Information Please Contect :

SHALAKS

C-3, Puja House, Karampura Community Centre, Milan Complex
New Delhi. Phones : 5105731, 5431216, 5453832 Fax: 5450539

Created & Printed By : GEETA GRAPHICS WZ-169, Khampur, West Patel Nagar, New Delhi-110008. Phones : 5703090, 5704090

Scanned by CamScanner